सेंसेक्स 78,041.59 ● निफ्टी 23,587.50 ● डॉलर 84.98 ₹ ●सोना 76,130 ₹ चांदी 99,000 ₹

पेज 06 'कैंसर' से मुक्ति की दिशा में...

पेज 08 एसएसबी की सतर्कता ने लोगों में...

पारा आपडेट

मैक्सिमम 25.00 | मिनीमम 12.00

सूर्यास्त (आज) ▸ 17.07

सूर्योदय (कल) ▸ 06.25

बोकारो से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

झारखंड दर्शन

हर खबर पर नजर

पौष कृष्ण पक्ष षष्ठी संवत 2082

पेज 12

RNI No. : JHAHIN/2018/76658 | बोकारो, शनिवार 21 दिसंबर 2024 ● पृष्ठ : 12 मूल्य : 2/- रुपया ● वर्ष : 07 अंक : 168 | Email : jharkhanddarshan405@gmail.com ● Website: jharkhand-darshan.com

संक्षिप्त खबरें

24 दिसंबर को होगी हेमंत कैबिनेट की अगली बैठक

रांची। हेमंत सोरेन कैबिनेट की अगली बैठक प्रोजेक्ट भवन, धुर्वा में 24 दिसंबर शाम चार बजे से प्रोजेक्ट भवन स्थित मंत्रिपरिषद् कक्ष में होगी। इस बाबत पत्र जारी किया है। सीएम हेमंत सोरेन की अगुवाई में सरकार बनने के बाद कैबिनेट की ये तीसरी बैठक होगी।

मोदी 25 को करेंगे केन बेतवा गठजोड़ का शिलान्यास

महोबा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 25 दिसंबर को देश की पहली नदी जोड़ो परियोजना 'केन बेतवा गठजोड़' का शिलान्यास करेंगे। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड की तस्वीर बदलने वाली 45 हजार करोड़ रुपए से अधिक लागत की यह परियोजना दोनों सूबों के 14 जिलों को सिंचाई एवं पेयजल के लिये पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करेगी। परियोजना के यूपी डिवीजन के अधिशासी अभियंता अखिलेश कुमार ने शुक्रवार को बताया कि मध्य भारत के बुंदेलखंड में सूखे की समस्या के सम्पूर्ण समाधान के लिए पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के ड्रीम प्रोजेक्ट केन -बेतवा लिंक परियोजना को धरातल पर लाने की प्रक्रिया शुरू हो गयी है।

प्रधानमंत्री ने ओम प्रकाश चौटाला के निधन पर दुख व्यक्त किया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला के निधन पर दुख व्यक्त किया और प्रदेश की राजनीति में उनके सक्रिय योगदान को याद किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला के साथ मुलाकात की अपनी एक पुरानी तस्वीर एक्स पर साझा करते हुए लिखा, 'हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। प्रदेश की राजनीति में वे वर्षों तक सक्रिय रहे और चौधरी देवीलाल जी के कार्यों को आगे बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया। शोक की इस घड़ी में उनके परिजनों और समर्थकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं।'

नीतीश की तबीयत अचानक बिगड़ी, सभी कार्यक्रम रद्द

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तबीयत अचानक बिगड़ गई। इसके चलते उनके शुक्रवार को पूर्व में निर्धारित सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए हैं। नीतीश पटना में चल रहे ग्लोबल निवेशक सम्मेलन-बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 में भी हिस्सा नहीं लेंगे। हालांकि, सीएम के स्वास्थ्य के बारे में अभी तक ज्यादा जानकारी नहीं मिल पाई है। बताया जा रहा है कि सर्दी के मौसम की वजह से वे बीमार हुए हैं। डॉक्टर ने उन्हें आराम की सलाह दी है। मुख्यमंत्री का शुक्रवार को अपने गृह जिले नालंदा के दौरे का कार्यक्रम था। वे राजगीर में मगध सम्राट जरासंध की प्रतिमा का अनावरण करने वाले थे। प्रशासन ने इसकी तैयारी भी पूरी कर ली थी। लेकिन, ऐन वक्त पर सीएम का दौरा रद्द हो गया। इसके अलावा मुख्यमंत्री पटना में आयोजित बिहार बिजनेस कनेक्ट के समापन समारोह में शामिल होने वाले थे। शुक्रवार को निवेशक सम्मेलन में उनका संबोधन था। इसके अलावा विभिन्न कंपनियों के पदाधिकारियों से उनकी मीटिंग भी तय थी। हालांकि, तबीयत खराब होने की वजह से अब ये बैठक रद्द हो गई है।

डा. आंबेडकर के मुद्दे पर विपक्ष ने निकाला मार्च, भाजपा ने किया प्रदर्शन

एजेंसी

नई दिल्ली। आंबेडकर के कथित अपमान के मुद्दे को लेकर शुक्रवार को विपक्ष ने विजय चौक पर विरोध प्रदर्शन किया। इनमें शामिल विपक्षी सांसदों ने विजय चौक से संसद तक विरोध मार्च भी निकाला और गृहमंत्री अमित शाह से राज्यसभा में आंबेडकर पर दिए गए 'अपमानजनक' बयान के लिए माफी मांगने तथा इस्तीफे की मांग की। उधर, भाजपा कल संसद में दो सांसदों के घायल होने के मुद्दे को लेकर आज संसद परिसर में प्रदर्शन किया।

कांग्रेस पार्टी का कहना है कि गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में बाबासाहेब का अपमान किया है, जिसे देश कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। पार्टी के नेतृत्व में आज आईएनडीआईए गठबंधन के सांसदों ने विजय चौक से

संसद तक मार्च निकाला। प्रदर्शनकारियों ने मांग की कि अमित शाह को देश से माफी मांगनी होगी और अपने पद से इस्तीफा देना होगा। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने भी लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज एफआईआर को लेकर भाजपा की आलोचना की और कहा, 'यह उनकी हताशा का स्तर दिखाता है।' कांग्रेस नेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि संसद में धक्कामुक्की वाले मामले में भाजपा ने राहुल गांधी पर झूठी एफआईआर दर्ज कराई है।

सपा नेता अखिलेश यादव ने कहा कि बाबा साहब हमारे भगवान हैं और हम उनका अपमान नहीं सहेंगे। उन्होंने

आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी एक सोचे समझे मॉडल के तहत काम करती है। वह पहले संवैधानिक और गैर कानूनी काम करती है और फिर विरोध करने वालों के खिलाफ प्रशासनिक कार्रवाई करती है। अमित शाह को अपने शब्दों को वापस लेना चाहिए और देश से माफी मांगनी चाहिए।

उधर, भाजपा सांसदों ने भी आज संसद परिसर में गांधी प्रतिमा के समक्ष प्रदर्शन किया। पार्टी लगातार मांग कर रही है कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी संसद के मकर द्वार पर भाजपा सांसदों के साथ कथित धक्का मुक्की के लिए माफी मांगें।

भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी ने गांधी प्रतिमा पर कांग्रेस के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान कहा कि संसद में जो कल हुआ वह नहीं होना चाहिए था, हम इसकी कड़ी निंदा करते हैं। दो वरिष्ठ सांसदों को अस्पताल जाना पड़ा है और नगालैंड की महिला सांसद ने सदन में कहा कि राहुल गांधी की उपस्थिति ने उन्हें असहज किया है। भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज ने कहा कि राहुल गांधी और इंडी गठबंधन के सभी सदस्य भूल गए हैं कि लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरि होती है।

जयपुर में केमिकल टैंकर फटा, 11 लोगों की मौत, कई झुलसे

एजेंसी

जयपुर। जयपुर से अजमेर जाने वाले हाईवे पर शुक्रवार सुबह एक आम दिन था। ट्रैफिक कम था क्योंकि सुबह के करीब 6 बज रहे थे। सर्द सुबह के बावजूद अचानक करीब एक किलोमीटर का इलाका आग से भभक उठा। कोई कुछ समझ पाता इससे पहले ही आग ने कई गाड़ियों और सड़क के किनारे बनी फैक्ट्री को अपनी चपेट में ले लिया। देखते ही देखते चारों ओर चीख-पुकार मच गई।

लोग जब तक समझ पाते कि हुआ क्या है तब तक पूरा इलाका आग के गोले में तब्दील हो चुका था। कारों में बैठे लोग सेकंड्स में झुलस गए थे। धीरे-धीरे आग की गिरफ्त में हाईवे पर जा रही गाड़ियां आ गईं। आग कैसे लगी सभी इस सवाल का जवाब जानने से पहले एक दूसरे की जान बचाने में जुट गए थे। जैसे-तैसे पुलिस प्रशासन को खबर लगी और ताबड़तोड़ रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू हुआ। इस दर्दनाक हादसे में अभी तक 11 लोगों की मौत हो चुकी है।

दरअसल जयपुर-अजमेर हाईवे पर दिल्ली पब्लिक स्कूल के सामने एक एलपीजी से भरा टैंकर अजमेर से जयपुर की ओर आ रहा था। इस दौरान टैंकर ने यू टर्न लिया। कुछ गाड़ियों के ब्रेक लगे। सभी भारी-भरकर टैंकर के टर्न लेने का इंतजार कर रहे थे। बस इसी बीच जयपुर की तरफ से एक लोडेड ट्रक आया और टैंकर में टक्कर मार दी। ट्रक की टक्कर इतनी भीषण थी कि टैंकर से गैस का रिसाव हो गया। लिक्विड फोर्म में गैस के रिसाव के बाद उसमें आग लग गई। गैस के तेजी से फैलने के साथ-साथ आग भी उतनी ही तेजी से फैली और आस-पास के पूरे इलाके को अपनी चपेट में ले लिया।

आग की लपटों ने 40 से ज्यादा गाड़ियों को लिया गिरफ्त में

जयपुर-अजमेर हाईवे पर हालात बद से बदतर तब हो गए जब एक-एक करके कुछ ही सेकंड्स में आग की लपटों ने 40 कारों को अपनी गिरफ्त में ले लिया। शुरूआत में आग 200 मीटर के इलाके में फैली थी लेकिन बाद में यह करीब 1 किलोमीटर के इलाके तक फैल गई। गाड़ियों में बैठे लोग गाड़ी के दरवाजे खोलकर भागने लगे। सड़क किनारे एक पाइप फैक्ट्री भी बनी हुई थी जिसमें आग लग गई। जहां पर ये भीषण हादसा हुआ है वहां से महज 100 मीटर की दूरी पर क्रूड ऑइल की पाइप लाइन गुजर रही थी।

6 ने हॉस्पिटल में दम तोड़ा

डॉक्टर्स की मानें तो सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में 32 झुलसे हुए लोगों को भर्ती किया गया था। डॉक्टर ने बताया कि 5 लोग हॉस्पिटल में मृत लाए गए थे। वहीं 5 लोगों ने हॉस्पिटल में इलाज के दौरान दम तोड़ा है। 32 में से 15 मरीज ऐसे हैं जो कि 50 प्रतिशत से ज्यादा झुलस चुके हैं। एक मरीज ने जयपुरिया हॉस्पिटल में दम तोड़ा है। हादसे में अभी तक कुल 11 लोगों की मौत हो चुकी है। जयपुर हादसे में उदयपुर की लेकसिटी ट्रेवल्स की बस भी चपेट में आई है। बस में 34 सवारियां सवार थीं जिनमें से अभी तक 21 का पता चल पाया है अभी भी 13 लोगों की सूचना नहीं मिली है। यह बस रात 9 बजे उदयपुर से रवाना हुई थी।

खलिहान में सो रहे मां-बेटे की जलकर मौत

संवाददाता

गिरिडीह। डुमरी प्रखण्ड के मधुबन थाना इलाके के छछंदो पंचायत के जोभी गांव में गुरूवार की देर रात में एक दर्दनाक घटना हुई। बताया गया कि धान के खलिहान में गांव की एक महिला और उसके पुत्र की जल कर मौत हो गई। दोनों पूरी तरह से जल गए थे। दोनों मृतक की पहचान जोभी गांव निवासी सोमरा मुर्मू की पत्नी नुनिया देवी (40) और उनका छोटा पुत्र चांद मुर्मू (12) के रूप में हुई है।

पति सोमरा मुर्मू का कहना है कि रात को उनकी पत्नी और उनका पुत्र खलिहान में सोने गया था। देर रात जब लोगों की चिख पुकार सुनी तो वह भागकर खलिहान पहुंचा जहां आग लगी हुई थी और उसके चपेट में आकर दोनों की मौत हो गई। बताया कि उसके छह बच्चे हैं जिनमें से सबसे छोटा चांद मुर्मू था।घटना की जानकारी मिलते ही मधुबन थाना पुलिस शुक्रवार को घटना स्थल पर पहुंच कर छानबीन कर जले हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए गिरिडीह भेज दिया।

आशंका जताई जा रही है कि खेत के समीप खलिहान के बाहर ठंड से बचने के लिए आग तापकर मां- बेटे सोने चल गये थे। आग की चिंगारी संभवतः रह गई हो और फिर वह पुआल से बने कुंभा (घर) में पकड़ लिया हो। इससे जलकर दोनों की मौत हो गई। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है। घटना के बाद गांव में मातम पसरा है। घटना की खबर सुन स्थानीय विधायक जयराम महतो, जेएमएम नेता अखिलेश महतो, झामुमो प्रखण्ड अध्यक्ष राजकुमार महतो राजू, भाजपा नेता दीपक श्रीवास्तव आदि गांव पहुंच कर शोकाकुल परिवार से मिल सांत्वना दी।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने हादसे पर जताया दुख, मुआवजे की घोषणा

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को जयपुर-अजमेर हाई-वे पर हुए गैस टैंकर हादसे पर दुख जताया और मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से दो-दो लाख रुपये और प्रत्येक घायल को 50 हजार की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है।

राष्ट्रपति ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, 'जयपुर में हुई सड़क दुर्घटना के कारण अनेक लोगों की मृत्यु का समाचार अत्यंत पीड़ादायक है। मैं ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति हेतु प्रार्थना करती हूं। उनके परिवारजनों के प्रति मेरी गहरी शोक संवेदनाएं! मेरी प्रार्थना है कि घायल हुए लोग शीघ्र ही स्वस्थ हों।'

प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स पोस्ट में लिखा, राजस्थान में जयपुर-अजमेर हाई-वे पर हुए हादसे में लोगों की मौत से गहरा दुख हुआ है। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति संवेदना। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। स्थानीय प्रशासन प्रभावित लोगों की सहायता कर रहा है। प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2 लाख रुपये और प्रत्येक घायल को 50 हजार रुपये दिए जाएंगे।

नक्सलियों की लगाई प्रेशर आईईडी से दो जवान घायल

एजेंसी

- घायल दोनों जवानों की हालत खतरे से बाहर
- नक्सलियों ने 5-5 किलो के पांच सीरियल बम लगा रखे थे, सुरक्षाबलों ने किया निष्क्रिय

नारायणपुर। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के कोहकामेटा थाना क्षेत्र अंर्तगत नक्सल प्रभावित कच्चापाल इलाके में नक्सलियों की लगाई गई प्रेशर आईईडी की चपेट में आने से दो जवान आरक्षक जनक पटेल और आरक्षक घासीराम मांझी घायल हो गए हैं। दोनों जवानों को उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें रायपुर रेफर किया गया है। नारायणपुर एसपी प्रभात कुमार ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि दोनों जवानों की स्थिति खतरे से बाहर है। सुरक्षाबल के जवान शुक्रवार को सड़क निर्माण कार्य की सुरक्षा के लिए रवाना हुए थे। इसी दौरान आईईडी की चपेट में आने से दो जवान घायल हो गए। दरअसल पुलिस ने हाल ही में नक्सलियों के गढ़ कच्चापाल में सुरक्षाबलों का नया कैंप स्थापित किया है। अब उस पूरे इलाके को सड़क मार्ग से जोड़ा जा रहा है। यहां पहले से ही नक्सलियों ने आईईडी लगा रखा था।

उधर, बीजापुर जिले के गंगालूर थाना क्षेत्र के नक्सल प्रभावित मुदवेंडी कैंप से 2-3 किमी दूरी पर नक्सलियों ने 5-5 किलो के पांच सीरियल बम बिछा रखे थे। सर्चिंग के दौरान गुरुवार देर शाम को नक्सलियों के बिछाए सीरियल बम पर जवानों की मुस्तैदी एवं सजगता के बाद तुरंत बम निरोधक दस्ता ने बमों को निष्क्रिय किया। मुदवेंडी में सीआरपीएफ कैंप के स्थापित हुए एक साल होने जा रहा है। यह इलाका घोर नक्सल प्रभावित इलाकों में जाना जाता है। जवानों की सक्रियता से बड़ी घटना टल गई और नक्सलियों के नापाक इरादे असफल हुए। पुलिस ने इस मामले पर कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

शीतकालीन सत्र > लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

एक देश-एक चुनाव से जुड़ा विधेयक जेपीसी को भेजा गया

एजेंसी

नई दिल्ली। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान आज लोकसभा में विपक्ष के हंगामे के बीच एक देश-एक चुनाव से जुड़ा 129 वां संविधान संशोधन विधेयक संयुक्त संसदीय समिति के पास भेज दिया गया। इसके बाद लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित कर दी गई।

लोकसभा की कार्यवाही सुबह 11:00 बजे शुरू होते ही विपक्ष ने बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के मुद्दे पर शोर-शराबा शुरू कर दिया। विपक्षी सदस्य सदन के बीचों बीच पहुंच गए। इस दौरान सदन के नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी उपस्थित थे। विपक्षी सदस्यों की नारेबाजी के बीच केंद्रीय कानूनमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने संविधान संशोधन विधेयक को संसद की संयुक्त कार्य समिति को भेजने का प्रस्ताव रखा। हंगामे के बीच प्रस्ताव को ध्वनिमत से पारित कर सदन की अनुमति प्रदान की गई। जेपीसी में 27 सदस्य हैं। इनमें से 12 राज्यसभा से हैं।

लोकसभा अध्यक्ष ने इस दौरान सदस्यों को संसदीय परंपराओं और गरिमा का सम्मान करने का आग्रह किया। उन्होंने सदस्यों को चेताया कि संसद परिसर धरना या प्रदर्शन के लिए नहीं है। ऐसा करने पर कार्यवाही भी की जा सकती है। इसके बाद वंदेमातरम के साथ ही कार्यवाही को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया।

राज्यसभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित, सत्र की उत्पादकता मात्र 40 प्रतिशत

नई दिल्ली। आंबेडकर और सांसदों के बीच हुई धक्का मुक्की के मुद्दे को लेकर हंगामे के बीच शुक्रवार को राज्यसभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। शुक्रवार को सुबह सदन की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने हंगामा शुरू कर दिया। सभापति जगदीप धनखड़ ने पहले सदन की कार्यवाही दोपहर 12 बजे तक के लिए स्थगित की। उसके बाद सदन की कार्यवाही शुरू होने पर 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के लिए गठित संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के लिए राज्यसभा के 12 सांसद को नामित किया गया।

इनमें सांसद घनश्याम तिवाड़ी, भुवनेश्वर कलिता, के. लक्ष्मण, कविता पाटीदार, संजय कुमार झा, रणदीप सिंह सुरजेवाला, मुकुल बालकृष्ण वासनिक, साकेत गोखले, पी.

विल्सन, संजय सिंह, मानस रंजन मंगराज और वी. विजयसाई रेड्डी शामिल हैं। इस सप्ताह के शुरूआत में लोकसभा से 27 सदस्यों को जेपीसी के लिए नामित किया गया था।

शुक्रवार को सभापति जगदीप धनखड़ ने सभा के शीतकालीन सत्र में अपने समापन भाषण में कहा कि संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस सत्र का समापन करते हुए हमें गंभीर चिंतन का क्षण देखना पड़ रहा है। ऐतिहासिक संविधान सदन में संविधान दिवस मनाने का उद्देश्य लोकतांत्रिक मूल्यों की पुष्टि करना था लेकिन इस सदन में हुए कार्य एक अलग कहानी बयां करते हैं। उन्होंने कहा कि इस सत्र की उत्पादकता मात्र 40.03 प्रतिशत है, जिसमें केवल 43 घंटे और 27 मिनट ही प्रभावी कामकाज हुआ।

उन्होंने कहा कि सांसदों के रूप में हम भारत के लोगों से कड़ी आलोचना का सामना कर रहे हैं। संसद की कार्यवाही में लगातार व्यवधान हमारे लोकतांत्रिक संस्थानों में जनता के विश्वास को लगातार कम कर रहे हैं। इस सत्र में तेल क्षेत्र संशोधन विधेयक और बॉयलर्स विधेयक 2024 पारित किया गया और भारत-चीन संबंधों पर विदेश मंत्री का बयान सुना लेकिन इन उपलब्धियों से कहीं ज्यादा इस सदन की विफलताएं रही हैं।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला का निधन

एजेंसी

गुरुग्राम। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) सुप्रीमो ओमप्रकाश चौटाला का शुक्रवार को 93 साल की उम्र में निधन हो गया। घर में तबियत बिगड़ने पर उन्हें तुरंत गुरुग्राम के मेदांता मेडिसिटी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनके निधन से राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लोग एंबियंस मॉल के पीछे स्थित उनके आवास पर पहुंचने लगे हैं।

भारत के उप-प्रधानमंत्री रहे चौधरी देवीलाल के राजनीतिक वारिस ओमप्रकाश चौटाला अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं। ओमप्रकाश चौटाला चार बार हरियाणा के मुख्यमंत्री रहे। पहली बार उन्होंने दो दिसंबर 1989 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उनथा यह कार्यकाल 171 दिनों का रहा। वे 12 जुलाई 1990 को फिर से हरियाणा के मुख्यमंत्री बने। इस बार मात्र पांच दिन ही वे इस पद पर रहे।

संक्षिप्त खबरें

अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद

रांची। कोतवाली थाना क्षेत्र के बड़ा तालाब से पुलिस ने शुक्रवार को एक अज्ञात व्यक्ति का शव बरामद किया है। स्थानीय लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। घटनास्थल से कोई पहचान पत्र या अन्य सुराग बरामद नहीं हुआ है। पुलिस मामले की गहन जांच पड़ताल कर रही है और आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है।

स्कूल वैन में बच्चों के साथ यौनाचार की घटना पर झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन का आक्रोश

रांची। झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन ने बीआईटी मेसरा ओपी क्षेत्र में हुई बच्चों के साथ यौनाचार की घटना पर कड़ा आक्रोश व्यक्त किया है। इस घटना में एक 4 साल के बच्चे के साथ स्कूल वैन ड्राइवर द्वारा आपराधिक यौनाचार किया गया, जो कि पॉक्सो एक्ट की धारा 4, 6 और 8 के तहत अपराध है। एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय राय ने इस घटना पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, यह घटना हमारे समाज के लिए बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए जागरूक रहना होगा और सख्त कार्रवाई करनी होगी। श्री राय ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि वे अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करें और स्कूलों में सुरक्षा की व्यवस्था को मजबूत बनाएं। हमें अपने बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए हर संभव कदम उठाना होगा। स्कूलों में सुरक्षा की व्यवस्था को मजबूत बनाना, बच्चों को सुरक्षा के बारे में जागरूक करना, और अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना आवश्यक है। इस घटना के बाद एसोसिएशन ने राज्य सरकार से फास्ट्रेक कोर्ट का गठन करने और अपराधियों को सख्त सजा देने की मांग की है। एसोसिएशन ने स्कूल प्रबंधकों से भी आग्रह किया है कि वे इस तरह की घटनाओं पर पर्दा न डालें और स्कूल का रेपुटेशन बचाने के बजाय पीड़ित को न्याय दिलाने में सहयोग करें। इस घटना ने झारखंड के अभिभावकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि वे अपने बच्चों को सुरक्षित कैसे रख सकते हैं। सरकार से अनुरोध किया है कि वे स्कूलों में सुरक्षा की व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

राज्य के उत्तर-पूर्वी, मध्य एवं दक्षिणी भागों में सुबह में कोहरा रहने की संभावना

रांची। झारखंड में शीतलहर का सितम जारी है। मौसम विभाग के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में निम्न दबाव का क्षेत्र बनने के कारण शुक्रवार को राज्य के दक्षिणी भागों में आंशिक बादल छाये रहे। वहीं 22 दिसंबर को राज्य के उत्तर-पूर्वी, मध्य एवं दक्षिणी भागों में सुबह में कोहरा रहने की संभावना है। इस दौरान गुमला, रांची, बोकारो, धनबाद, देवघर, जामताड़ा, दुमका, साहिबगंज, पाकुड़, पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम, सिमडेगा और सरायकेला खरसावां में कोहरा रहने की संभावना है। इस दौरान सुबह में गाड़ी संभलकर चलाने की बात कही गई है। साथ ही विभाग ने बच्चों और बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखने की बात कही है।

टॉरियन वर्ल्ड स्कूल की कॉर्डिनेटर सुजाता का निधन

रांची। राजधानी के टॉरियन वर्ल्ड स्कूल की कॉर्डिनेटर सुजाता सिंह का बीती रात निधन हो गया। वह 64 वर्ष की थीं और पिछले दो महीने से कोमा में थी। उनका अंतिम संस्कार 22 दिसंबर रविवार को हरमू मुक्ति धाम में होगा। सुजाता सिंह का भरा पूरा परिवार है। परिजनों और अन्य लोगों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। सुजाता सिंह को शिक्षा से बहुत लगाव था। उन्होंने जीवन पर्यन्त एक शिक्षिका के रूप में कार्य किया। सुजाता सिंह ने पहले डीएवी स्कूल हेहल और संत माइकल स्कूल में एक शिक्षिका के रूप में अपना योगदान दिया. इसके बाद साल 2009 में उन्होंने टॉरियन वर्ल्ड स्कूल में जूनियर विंग की कोर्डिनेटर बनीं और करीब 14 साल तक यहां अपनी सेवा दी। उनके निधन पर कई शिक्षक, समजीक, शिक्षण संस्थान के लोगो ने शोक संवेदना प्रकट की है।

पौष अमावस्या 30 को, भोलेनाथ की पूजा फलदायी

रांची। पौष माह कृष्ण पक्ष की अमावस्या इस साल 30 दिसंबर को है। हालांकि, अमावस्या की शुरुआत 30 दिसंबर को सुबह 4.01 बजे से हो जाएगी और 31 दिसंबर को 3.56 बजे तक रहेगी। उदयातिथि के अनुसार पौष अमावस्या 30 दिसंबर को ही मनाई जाएगी। पंडित मनोज पांडेय ने बताया कि अमावस्या के दिन पितरों की पूजा और स्नान दान के लिए विशेष महत्व है। मान्यता यह है कि इस दिन कुछ चीजों का दान करने से जीवन में सुख-समृद्धि आती है। इस दिन स्नान दान और पितरों की पूजा करना शुभ फलदायी है। हिंदू धर्म में अमावस्या को पितरों को प्रसन्न करने के लिए श्राद्ध तर्पण और पिंडदान किया जाता है। पंडित मनोज बताया कि यह अमावस्या सोमवार को पड़ रही है, इसलिए इसे सोमवती अमावस्या कहा जाता है। इस दिन व्रत के साथ भगवान भोलेनाथ की पूजा करना मंगलकारी होता है।

जेपीएससी अध्यक्ष पद नियुक्त किया जायः देवेन्द्र

रांची। झारखंड लोक सेवा आयोग अभ्यर्थियों द्वारा आज शनिवार को सुबह 8 बजे से एक्स डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हैशटैग ट्विटर अभियान चलाकर तत्काल अध्यक्ष पद की नियुक्त की मांग की जाएगी। जिसका हैशटैग जेपीएससी अपोइंटमेंट करो है उक्त जानकारी छात्र नेता देवेन्द्र नाथ महतो ने बताया कि 22 अगस्त 2024 से ही जेपीएससी अध्यक्ष पद खाली पड़ा हुआ है जिससे 11 वीं सिविल सेवा परीक्षा, सीडीपीओ, फॉरेस्ट रेंजर ऑफिसर के अलावा अन्य परीक्षा परिणाम और नया विज्ञापन बाधित हो रहा है, जिससे झारखंड के छात्रों का मानसिक प्रताड़ित हो रहा है तथा भविष्य के योजनाओं में बाधा उत्पन्न हो रहा है। साथ ही श्री महतो ने सरकार से मांग कि है कि छात्रों का भविष्य का ख्याल रखते हुए आगामी 24 दिसंबर के कैबिनेट बैठक में जेपीएससी अध्यक्ष पद का नियुक्त किया जाय।

प्रदेश कांग्रेस कमिटी का आभार समागम आज

रांची। प्रदेश कांग्रेस कमिटी के तत्वाधान में आभार समागम का आयोजन शनिवार को बोड़ेया स्थित गीतांजलि बैंक्वट हॉल में पूर्वाह्न 11:00 से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश की अध्यक्षता में आयोजित होगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर भी उपस्थित रहेंगे। इसकी जानकारी देते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने बताया कि आभार समागम में विधानसभा चुनाव में मिली सफलता और मजबूत सरकार के गठन के बाद संगठन के कार्यकर्ताओं नेताओं का आभार प्रकट किया जाएगा। समागम में संगठन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जाएगी सरकार और संगठन के बीच समन्वय तथा तालमेल के लिए खाका कार्यकर्ताओं के समक्ष रखा जाएगा।

पूर्व डीडीसी को अग्रिम बेल देने से कोर्ट का इनकार

रांची। रांची सिविल कोर्ट ने शादी का झांसा देकर महिला का 16 साल तक यौन शोषण करने के आरोपी सेवानिवृत्त डीडीसी अरविंद कुमार चौधरी को राहत देने से इनकार कर दिया है। सिविल कोर्ट के अपर न्यायायुक्त मनीष रंजन की कोर्ट ने अरविंद कुमार चौधरी की ओर से दाखिल अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दी है साथ ही कोर्ट ने उनके बेटे मनीष आनंद की अग्रिम जमानत याचिका भी खारिज कर दी। जिससे दोनों की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। कोर्ट में महिला की ओर से सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता शिशिर राज ने कोर्ट में पक्ष रखा।

छात्र-छात्राओं की सुरक्षा के लिए निकला पैदल मार्च

संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में छात्राओं से छेड़छाड़ (इव-टीचिंग) की लगातार हो रही घटनाओं को रोकने को लेकर पुलिस ने मुहिम शुरू की है। इसी क्रम में शुक्रवार को एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा के निर्देश पर ग्रामीण एसपी सुमित कुमार अग्रवाल के नेतृत्व में रांची जिला के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सभी थाना क्षेत्रों में छात्र-छात्राओं की सुरक्षा के लिए पैदल मार्च किया गया।

इसके तहत सभी थाना क्षेत्रों में पड़ने वाले स्कूल, कॉलेज, कोचिंग संस्थान एवं गर्ल्स हॉस्टल में जाकर पुलिस अधिकारियों ने बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनी।

छेड़छाड़ का मामला सामने आने पर शिक्षण संस्थानों को 100, 112 डायल कर तथा क्यूआर कोड के माध्यम से शिकायत दर्ज कराने के लिए कहा गया। शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। ऐसे मामलों में कार्रवाई में लापरवाही बरतने वाले पुलिस अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

उद्योगों की मांग के अनुरूप रोजगार व कार्यबल का सृजन विभाग का उद्देश्य : श्रम मंत्री संजय

संवाददाता

रांची। श्रम मंत्री संजय प्रसाद यादव ने कहा कि उद्योगों की मांग के अनुरूप रोजगार और कार्यबल का सृजन विभाग का उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि हम प्रशिक्षण कार्यक्रमों में समय की मांग के अनुसार नए जॉब रोल शामिल करेंगे, जिससे झारखण्ड के युवा प्रतिभा प्रतिस्पर्धा में पीछे न रहें। श्रम विभाग कौशल विकास के क्षेत्र में जल्द ही नए जॉब रोल शामिल करेगा, जिसमें से एक विदेशी भाषा प्रशिक्षण में शामिल होगी।

यादव शुक्रवार को श्रम नियोजन प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग के तहत झारखंड कौशल विकास मिशन सोसाइटी की ओर से रांची के एक स्थानीय होटल में स्किल स्टेकहोल्डर्स कनेक्ट 2024 के उद्घाटन के अवसर पर बोले रहे थे। उन्होंने कहा कि कम जनसंख्या वाले देशों में बेहतर वेतन के साथ रोजगार की काफी संभावनाएं हैं। हमारी कोशिश है कि युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराए जाएं। मंत्री ने कहा कि झारखंड सरकार का श्रम विभाग कौशल विकास के महत्वपूर्ण ढांचे के रूप में काम कर रहा है।

हमारा प्रयास कौशल विकास की चुनौतियों का समाधान ढूंढना है। इसके लिए आवश्यक है कि सभी हितधारक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। बैठक को श्रम सचिव मुकेश कुमार, झारखंड कौशल विकास मिशन सोसाइटी के मिशन निदेशक-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी शैलेन्द्र कुमार लाल ने भी संबोधित किया। इस एकदिवसीय उन्मुखीकरण एवं परिचर्चा कार्यक्रम में झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाइटी के पदाधिकारी सहित अन्य प्रतिनिधि एवं कर्मचारी मौजूद थे।झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाइटी की ओर से कुल 5.25 लाख से अधिक युवाओं को प्रशिक्षित करने के साथ 4.5 लाख युवाओं को प्रमाणित किया गया, जिनमें 2.25 लाख युवाओं को नियोजित किया गया है। नियोजित युवाओं को राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासन के लिए कुल सात राज्यों में आठ प्रवासन सहायता केन्द्र खोले गए हैं।

गैर झारखंडियों को चिन्हित कर रहे हैं, फर्जी आंदोलनकारी : प्रभाकर तिर्की

वरीय संवाददाता

रांची। कुछ स्वार्थी तत्व आंदोलनकारी संगठन के नाम पर आंदोलनकारियों को गुमराह कर उनसे पैसे वसूली का कार्य कर रहे हैं तथा वैसे लोगों को भी झारखंड आंदोलनकारी के रूप में चिन्हित करने का कार्य कर रहे हैं, जो कभी आंदोलनकारी नहीं रहे। सच तो यह है कि आज भी आंदोलन में शामिल हजारों लोग आंदोलनकारी के रूप में राज सरकार द्वारा चिन्हित नहीं हो पाए हैं। यह भी सूचना मिल रही है कि झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के नाम पर कुछ लोक सक्रिय हैं और आंदोलनकारियों से अवैध रूप से एक मुश्त राशि की उगाही कर रहे हैं।

इस क्रम में एक मुश्त राशि लेकर गैर आंदोलनकारियों को भी आंदोलनकारी के रूप में चिन्हित करने का काम किया जा रहा है। उक्त बातें शुक्रवार को झारखंड आंदोलनकारी क्रांति मोर्चा के नेता प्रभाकर तिर्की ने कचहरी चौक स्थित मोर्चा के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कही। श्री तिर्की ने कहा कि वर्तमान में यह बात सामने आई है कि संगठन के द्वारा आंदोलनकारी सम्मान पत्र देने की कार्रवाई की जा रही है और उन्हें कई प्रकार से गुमराह किया जा रहा है। इस सम्मान पत्र में कुछ वरीय आंदोलनकारी एवं विधायकों का भी उनकी सहमति के बिना नाम डाल दिया गया है एवं उनका हस्ताक्षर भी कर दिया गया है, जो पूरी तरह से फर्जी है। उन्होंने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी क्रांति मोर्चा ऐसे संगठनों और उसके नेताओं के खिलाफ झारखंड आंदोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग एवं गृह विभाग और राज्य सरकार के पास शिकायत दर्ज कराएगी। आवश्यकता पड़ी तो उनके द्वारा किए जा रहे फर्जीवाड़े के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज कराया जाएगा। झारखंड आंदोलनकारी क्रांति मोर्चा को सशक्त बनाने के लिए आने वाले नए वर्ष में राज्य स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा तथा आंदोलनकारियो को दी जाने वाली सुविधाओं तथा राज्य की समस्याओं के निदान और त्वरित विकास के लिए व्यापक रणनीति पर विमर्श कर आगे का कार्यक्रम तय किया जाएगा।

स्वास्थ्य मंत्री से मिला एएचपीआई झारखंड चैप्टर का प्रतिनिधिमंडल

मरीज की वास्तविक शिकायतों पर ध्यान देः मंत्री

वरीय संवाददाता

रांची। एसोसिएशन ऑफ हेल्थकेयर प्रोवाइडर्स ऑफ इंडिया झारखंड चैप्टर का एक प्रतिनिधिमंडल स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी से मिला। और राज्य का स्वास्थ्य मंत्री बनने पर उनका स्वागत किया। प्रतिनिधिमंडल ने राज्य में एएचपीआई की गतिविधियों से अवगत कराया। उन्होंने राज्य में निजी अस्पतालों को चलाने में एएचपीआई को सरकार से मिल रहे सहयोग के बारे में भी जानकारी दी। स्वास्थ्य मंत्री ने राज्य के सभी निजी अस्पतालों के मालिकों से मिलना चाहा और प्रतिनिधिमंडल को निजी अस्पतालों और नर्सिंग होमों को हर तरह से समर्थन देने का आश्वासन दिया। उन्होंने आयुष्मान भारत योजना सहित सभी सरकारी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में निजी अस्पतालों की भूमिका की भी सराहना की, हालांकि उन्होंने निजी अस्पतालों को मरीज की वास्तविक शिकायतों पर ध्यान देने के लिए भी आग्रह किया।

झारखंड आंचलिक पत्रकार संघ का प्रतिनिधि मंडल मिला राज्यपाल से

संवाददाता

रांची। झारखंड आंचलिक पत्रकार संघ का पांच सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल शुक्रवार को राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से मिलकर छह सुत्री मांग पत्र सौंपा और उन्हें जानकारी दी कि पिछले तीन-चार दशक से ग्रामीण क्षेत्र में सीमित साधन और संसाधनों के बीच काम करने वाले पत्रकारों की स्थिति काफी दयनीय है। सरकार द्वारा समय-समय पर जो सुविधाओं की घोषणा की जाती है उसमें भी इस तरीके से वर्गीकरण कर दिया जाता है कि उसका लाभ अंचल क्षेत्र के पत्रकारों को नहीं मिल पाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार संकलन और काम करने के दौरान होने वाले विभिन्न समस्याओं एवं चुनौतियों से भी उन्हें अवगत कराया गया। राज्यपाल ने कहा कि अंचल के पत्रकारों कि समस्या को समझ सकते हैं। इस मांग पत्र को मैं मुख्यमंत्री को भेज दे रहा हूं क्योंकि झारखंड में सरकार बन गई है और आप लोग भी मुख्यमंत्री से मिलकर अपनी बात रखें। इसके बाद में प्रतिनिधिमंडल ने झामुमो के महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य से मिलकर अपनी बात रखी। श्री भट्टाचार्य ने कहा कि यथाशीघ्र पत्रकारों की बीमा चालू होगी। मुख्यमंत्री और उनके प्रधान सचिव रांची से बाहर हैं उनके आने पर सरकार स्तर पर अंचल क्षेत्र के पत्रकारों के हित में कल्याणकारी नीतियों का निर्धारण कराने का प्रयास किया जायेगा।

प्रशिक्षण पाएं, मछलीपालन कर आमदनी बढ़ाएंः डॉ.एचएन

वरीय संवाददाता

रांची। मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र, शालीमार,धुर्वा में शुक्रवार को निदेशक मत्स्य डॉ.एचएन द्विवेदी ने मत्स्य कृषकों को संबोधित किया। उन्होंने बताया कि विभाग की ओर से दिए जा रहे प्रशिक्षण द्वारा मत्स्य पालन में क्रांति लाई जा रही है।

जिसे नीली क्रांति कहा जा रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत ही विभाग की योजनाओं का बेहतर लाभ उठाया जा सकता है।

डॉ.द्विवेदी ने कहा कि तीन तरह के प्रशिक्षण मत्स्य किसान प्रशिक्षण केंद्र में संचालित किये जा रहे हैं। इससे बायोफ्लाक के मत्स्य पालक, तालाब के मत्स्यपालक, रंगीन मछलीपालन की महिलाएं लाभान्वित हो रही हैं। उन्होंने कहा केंद्र व राज्य सरकार की मत्स्य विभाग की योजनाओं के कार्यान्वयन के विभाग तत्पर है। उन्होंने मत्स्य निदेशालय की योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की।

इस अवसर पर काफी संख्या में मत्स्य कृषक उपस्थित थे। उक्त जानकारी मत्स्य निदेशालय के मुख्य अनुदेशक प्रशांत कुमार दीपक ने दी।

हथियार तस्करी गिरोह का सरगना गिरफ्तार

रांची। कोतवाली थाना पुलिस ने हथियार तस्करी गिरोह के सरगना डेविड उर्फ ओम शंकर गुप्ता को गिरफ्तार किया है। डेविड उर्फ ओम शंकर गुप्ता गत माह हुए विधानसभा चुनाव में हटिया विधानसभा से चुनाव लड़ा था। इसके पास से दो आई फोन बरामद किया गया है।

पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि कुछ अपराधी अवैध हथियार लेकर कोतवाली थाना क्षेत्र के पुरानी रांची अखाड़ा चौक के पास किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने के फिराक में हैं। कोतवाली डीएसपी के नेतृत्व में मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने हथियार तस्कर को गिरफ्तार कर लिया था। इस तस्करी में शामिल अन्य प्राथमिकी आरोपितों के खिलाफ पुलिस छापेमारी कर रही थी। इसी क्रम में डेविड उर्फ ओम शंकर गुप्ता को गिरफ्तार किया गया।

डीएसपी प्रकाश सोय ने शुक्रवार को बताया कि डेविड उर्फ ओम शंकर गुप्ता गिरोह का सरगना है। उसे न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस हथियार तस्करी के धंधे में कई अन्य आरोपितों के शामिल होने की बात पूछताछ में सामने आयी है।

फायरिंग मामले में दो अपराधी गिरफ्तार

रांची। खलारी थाना पुलिस ने फायरिंग मामले में दो अपराधी सोनालाल महतो और दीपक कुमार उर्फ दीप को गिरफ्तार किया है। इनकी बाइक और दो मोबाइल फोन जब्त किया गया है।थाना प्रभारी विजय कुमार सिंह ने शुक्रवार को बताया कि खलारी में अक्टूबर में अपराधियों ने शंकर महतो के पुरनी राय स्थित घर पर फायरिंग की थी। इस संबंध में बीकेएस तिवारी गिरोह के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था।

आरपीएफ ने हटिया रेलवे स्टेशन से भारी मात्रा में शराब जब्त कर चार व्यक्तियों को लिया हिरासत में

संवाददाता

रांची। मण्डल मे आरपीएफ कमांडेंट पवन कुमार के निर्देश पर ऑपरेशन सतर्क के तहत शराब तस्करों के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है उसी क्रम मे दिनांक 19.12.24 को शाम मे आरपीएफ पोस्ट हटिया के निरीक्षक रूपेश कुमार, उपनिरीक्षक दीपक कुमार एवं फ्लाइंग टीम रांची द्वारा चेकिंग के दौरान हटिया रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 03 पर चार व्यक्तियों को संदिग्ध अवस्था में हिरासत में लिया गया। उनके पिट्ठू बैग की जांच करने पर 94 अदद प्रतिबंधित शराब बरामद हुई।

उन चारो का नाम पता पूछने पर उसने अपना नाम शिवम कुमार, उम्र 18 वर्ष पुत्र- अशोक पासवान, निवासी- केसाबे थाना- बरौनी, जिला- बरौनी (बिहार) दूसरा नाम गुड्डु कुमार, उम्र 18 वर्ष, पुत्र-लालटुन तांती, निवासी-वार्ड नं.14, सोबरा, जिला- बरौनी (बिहार), तीसरा अमन कुमार उम्र -17 वर्ष, पुत्र- अमरजीत पासवान, निवासी-वार्ड नंबर 02, पन्नापुर, थाना- मटियानी, जिला बेगूसराय (बिहार) बताया और चौथा अंकुश कुमार उम्र 21 वर्ष, हसपूरा औरंगाबाद बिहार बताया।

पूछताछ के दौरान हिरासत में लिए गए लोगों ने बताया कि बरामद अवैध शराब वे ट्रेन संख्या 18105/18624 एक्सप्रेस से बिहार में सप्लाई करने के लिए ले जा रहे थे। सभी बरामद अवैध शराब को एएसआई आर. शेखर द्वारा जब्त कर लिया गया तथा उक्त तीनों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार व्यक्ति और पकड़े गए लड़के को जब्त सामग्री के साथ आगे की कार्रवाई के लिए 20.12.24 को राज्य उत्पाद शुल्क रांची को सौंप दिया गया। जब्त अवैध शराब की कुल कीमत 1,16,000/- रुपए है।

बड़े शहरों में एक ही भवन में होंगे चार थाने

रांची। राज्य के बड़े शहरों में अब एक ही भवन में चार तरह के थाने होंगे। इसके लिए बहुमंजिली इमरात का निर्माण किया जायेगा। भवन के एक मंजिल में साइबर थाना, दूसरे में महिला थाना, तीसरे में एससी-एसटी थाना और चौथे मंजिल पर एचटीयू थाना होगा। इंटीग्रेटेड थाना भवन के निर्माण के लिए यह योजना डीजीपी अनुराग गुप्ता ने तैयार की है। इसके क्रियान्वयन की जिम्मेवारी उन्होंने आइजी प्रोविजन पंकज कंबोज को सौंपी है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, उक्त थाना भवन में महिला पुलिसकर्मियों के रहने के लिए अलग से बैरक की व्यवस्था होगी। इसके साथ ही यहां महिला पुलिस, पुलिस पदाधिकारी और कर्मियों के लिए अलग से सुविधा होगी। अलग-अलग थाना के निर्माण से जहां एक ओर अधिक भूमि की आवश्यकता होगी, वहीं निर्माण पर अधिक खर्च भी होगा।

E-mail : jharkhanddarshan405@gmail.com ● Website: jharkhand-darshan.com

संक्षिप्त खबरें

शव दफनाने को लेकर जमीन विवाद, दो गुटों में भिड़ंत

बोकारो। सियालजोरी थाना क्षेत्र के चंदाहा में शुक्रवार को शव दफनाने को लेकर एक बार फिर जमीन विवाद गर्मा गया। घटना के दौरान एक ही समुदाय के दो गुटों में भिड़ंत हो गई, जिससे इलाके में तनाव फैल गया। दोनों पक्षों ने एक ही जमीन पर शव दफनाने की अपनी-अपनी दावेदारी की। इस विवाद के चलते दोनों गुटों के बीच तीखी नोकझोंक और संघर्ष हुआ, लेकिन अधिकारियों और पुलिस की पहल के बाद स्थिति को नियंत्रण में किया गया। मामले की सूचना मिलते ही सियालजोरी पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और चास बीडीओ प्रदीप कुमार समेत अन्य पुलिस अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए विवादित जमीन पर धारा 144 लागू कर दी, ताकि विवाद को बढ़ने से रोका जा सके। आपसी सुलह के बाद शव को विवादित स्थान से हटाकर अन्यत्र दफनाया गया। प्रशासन और पुलिस की तत्परता से मामला शांत हुआ और इलाके में शांति बनी रही।

बोकारो में राष्ट्रीय गणित दिवस पर श्रद्धांजलि समारोह

बोकारो। दुनिया के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में शुक्रवार को पीएम श्री एसएस +2 उच्च विद्यालय कसमार में मनाई गई। इस कार्यक्रम का आयोजन गणित के स्नातकोत्तर प्रशिक्षित शिक्षक अशोक कुमार रजवार के संयोजकत्व में हुआ। श्री रजवार ने श्रीनिवास रामानुजन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।।अध्यक्षीय संबोधन प्रभारी प्राचार्य डॉ० रणजीत कुमार झा ने दिया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय के वरीय शिक्षक डॉ० अवनीश कुमार झा ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन से हुई, जिसे विद्यालय के प्राचार्य और शिक्षकों ने आयोजित किया। इसके बाद, महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों मनीष कुमार, दिया मुखर्जी, ज्ञान रंजन, धनंजय कुमार, शिवम मुखर्जी, धीरज कुमार, गौतम कुमार, संतोषी कुमारी, नंदनी कुमारी, किरण कुमारी और उनकी टीम ने आकर्षक रंगोली बनाकर श्रीनिवास रामानुजन के प्रति सम्मान प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय बाल संसद के प्रधानमंत्री रोहित कुमार महतो और शिबू कुमार घांसी ने किया। कार्यक्रम में कैलाश कुमार, परमेश्वर बेसरा, सुशीला कुमारी, जितेन्द्र कुमार सिंह, खुर्शीद रजा, अजय कुमार दुबे, नितेश कुमार प्रजापति, राजेश कुमार और दिनेश कुमार महतो भी उपस्थित थे।

लोकहित अधिकार पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष बने जोधन नायक

बेरमो/ बोकारो। लोकहित अधिकार पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील साहू ने झारखंड प्रदेश कार्य समिति का गठन कर पहली सूची जारी की। जिसमें जोधन नायक को लोकहित अधिकार पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किए जाने पर श्री नायक ने प्रदेश अध्यक्ष के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि मुझे पार्टी ने जो दायित्व दिया है उस पर खरा उतरने और संगठन की मजबूत करने का प्रयास करूंगा। जोधन नायक को प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किए जाने पर राष्ट्रीय तेली साहू महासंगठन के प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह बोकारो जिला संरक्षक भुवनेश्वर प्रसाद साहू, पूर्व जिला अध्यक्ष अनिल गुप्ता, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी ज्ञानेश्वर प्रसाद, समाजसेवी विनोद कुमार साव, सुनील सिंह, सुदामा साव, सुरेश साव, भूपेन कुमार भारत, अजय कुमार एवं दीपक कुमार नायक, रमेश प्रसाद नायक, राजेश साहू, चंदन साहू, सहदेव शाह, उमेश गुप्ता, शंकर गुप्ता, बच्चन गुप्ता, सुरेंद्र साहू, सौरभ गुप्ता, मनोज गुप्ता, विनोद शाह आदि ने बधाई दी है।

चास प्रखंड में पानुलाल महतो की 13 वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

बोकारो। चास प्रखंड के बिजुलिया बिनोद हटिया मैदान में शुक्रवार को झारखंड अलग राज्य के आंदोलनकारी और पूर्व सांसद स्व. ए. के. राय के करीबी सहयोगी पानुलाल महतो की 13वीं पुण्यतिथि धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर उनकी तस्वीर पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई और उन्हें सम्मानित किया गया। श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने पानुलाल महतो के योगदान और उनके संघर्ष को याद करते हुए कहा कि उनकी राजनीति और संघर्ष ने झारखंड के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे न केवल झारखंड राज्य के निर्माण के आंदोलन के अग्रणी थे, बल्कि उन्होंने समाज के वंचित वर्गों के लिए भी हमेशा आवाज उठाई। इस कार्यक्रम में मासस जिला सचिव दिलीप तिवारी, दिलीप ओझा, समाजसेवी मंतोष रजक, चंदनकियारी विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी जगन्नाथ राजवार, अर्जुन राजवार, मासस नेता भीम रजक, रामविलास महतो, जितेंद्र महतो, विकास चौबे, लालमोहन रजवार, साधु महतो, सुरेश महतो, विजय पदम महतो, पशुपति महतो, रजनीकांत महतो, मुरारी रजवार, भावेश रजवार, श्रीपाद बाउरी, मोहन महतो, शंकर महतो, रमेश रजवार, नगेन रजवार, बिट्टू रजवार, सोना देवी, नारायण चौबे, सुधीर राय सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे। इस अवसर पर पानुलाल महतो के जीवन और संघर्ष पर प्रकाश डाला गया और उनके योगदान को याद किया गया।

सीसीएल ढोरी एरिया पर ओबी गिराने के लिए एक करोड़ फाइन

संवाददाता

बेरमो/ बोकारो। सीसीएल ढोरी एरिया के बंद पडे पिछरी कोलियरी में कार्य के दौरान प्रबंधन द्वारा माइंस के समीप दामोदर नदी के किनारे ओबी गिराकर जमा किये जाने के मामले को लेकर एनजीटी ने ढोरी प्रबधन पर एक वर्ष पूर्व एक करोड रुपए का फाइन लगाया था। साथ हीं एनजीटी ने ढोरी प्रबंधन को लगाये गये एक करोड के फाइन राशि से विकास कार्य करने का निर्देश दिया था। उसी राशि से प्रबधन कायाकल्प स्कूल का निर्माण से लेकर अन्य विकास कार्यों पर राशि खर्च कर कर रही है। शिकायतकर्ता पिछरी के आशीष पाल व अन्य ग्रामीणों ने कहा कि सीसीएल पिछरी माइंस के पास दामोदर नदी से सटे खनन कार्य की है। जिसमें लाखों टन कोयले का अवैध उत्खनन किया गया है। नदी से सटा एक गैर मजरुआ जमीन जिसका खाता नंबर 237, प्लॉट नंबर 2099 जो सर्वे खतियान में जंगल झाड़ी के रूप में दर्ज है। उस जमीन में लगे सखुआ, आम, बबूल, पीपर, कदम, अर्जुन, केंद और महुआ के हजारों पेड़ प्रबंधन ने काट लिया है। जिससे पत्थर, मलबा, ओबी जैसे कचरे को नदी के पानी में डाल दिया गया है। जिससे नदी का धारा बदल गया है और पर्यावरण को नुकसान पहुंचा है। दामोदर नदी क्षेत्र के गांवों की जीवन रेखा कृषि और पीने के लिए पानी का स्त्रोत दामोदर नदी है। लेकिन सीसीएल के कारण लोगों को नुकसान और संपूर्ण परिस्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। साथ ही स्थानीय निवासियों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा है। ढोरी क्षेत्र पर एनजीटी द्वारा जगाया गया एक करोड़ का जुमार्ना डेढ़ माह के अंदर जमा करने का निर्देश दिया है। लेकिन प्रबंधन जुमार्ना की राशि विकास कार्य में खर्च कर रहा है। शिकायतकर्ता के आवेदन पर केंद्रीय और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की जांच के बाद एनजीटी ने यह कार्रवाई की है। पांच साल पहले राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में शिकायतकर्ता आशीष पाल ने याचिका डाला था। पीएमओ से लेकर कई जगह शिकायत की गयी थी। इसे समय पर जुमार्ना नहीं भरने पर और दंड लगाने की चेतावनी दी है। शिकायतकर्ता ने वर्ष 2019 में राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में शिकायत की थी। तीन-चार बार शिकायत के बाद जांच हुई। सीसीएल पर जुमार्ना भी लगाया गया। लेकिन प्रबंधन ने जुमार्ना नहीं भरा। इसके बाद एनजीटी तक शिकायत पहुंची। तब एनजीटी ने संज्ञान में लिया। वन पर्यावरण मंत्रालय, झारखंड सरकार, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड , झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और जिला मजिस्ट्रेट, बोकारो की संयुक्त समिति का गठन कर जांच कराई गई। जिसमें आरोप सही पाया गया। ओबी जैसे अपशिष्टों को नदी में डाल दिया गया। इससे नदी की धारा में परिवर्तन हुआ और पर्यावरण को भारी नुकसान हुआ। बार-बार याचिका डालने के बाद राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में मामला दर्ज हुआ। इसकी जांच हुई और सीसीएल पर एक करोड़ जुमार्ना लगाया गया। लेकिन लंबे समय तक इसे नहीं भरा गया। तब मामला एनजीटी तक पहुंची। शिकायकर्ता आशीष पाल के आवेदन के आलोक में 27.11.2024 को माननीय न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल न्यायिक सदस्य, माननीय डॉ अफरोज अहमद विशेषज्ञ सदस्य ने अपना फैसला सुनाया है।

एटीएम चोरी मामले में दो आरोपी गिरफ्तार, मास्टरमाइंड अभी फरार

संवाददाता

बोकारो। चंदनकियारी थाना क्षेत्र के सुभाष चौक स्थित रघुनाथपुर रोड पर सब्जी पट्टी के एटीएम मशीन को उखाड़कर 29 लाख 56 हजार रुपये की चोरी करने के मामले में एक महीने बाद पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर गुरुवार को जेल भेज दिया। गिरफ्तार आरोपियों में धनबाद के तेतुलमारी थाना क्षेत्र के विशुनपुर निवासी 31 वर्षीय मनोहर कुमार साहनी और पीएसटी निवासी 28 वर्षीय रामकुमार शामिल हैं। वहीं, कांड के मास्टरमाइंड रामकुमार साव अभी पुलिस गिरफ्त से बाहर हैं। गौरतलब है कि 21 नवंबर की देर रात लगभग दो बजे, अपराधियों ने एटीएम मशीन को तोड़कर उसे चुराया था। एचडीएफसी के अधिकारी सन्नी कुमार की शिकायत पर चंदनकियारी थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। इसके बाद पुलिस ने तकनीकी और अन्य स्त्रोतों का उपयोग करते हुए एक महीने बाद दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।पुलिस के अनुसार, मास्टरमाइंड रामकुमार साव ने घटना से पहले एक सप्ताह तक घटनास्थल और आसपास के रास्तों की रेकी की थी। एटीएम में राशि डालने के बाद, उन्होंने तकनीकी गड़बड़ी की साजिश रची और विधानसभा चुनाव के दूसरे दिन रात के सन्नाटे का फायदा उठाया। तीनों बदमाशों ने एक ही बाइक पर घटनास्थल पर पहुंचकर एटीएम मशीन को उखाड़ लिया, फिर उसे ट्राली से घसीटते हुए एक बंद घर में ले गए। दूसरे दिन शाम को मशीन को काटकर राशि निकाली गई। अब तक गिरफ्तार आरोपियों से चोरी की गई राशि की बरामदगी नहीं हो पाई है। पुलिस का मानना है कि यह राशि मास्टरमाइंड रामकुमार साव के पास है।

डीपीएस बोकारो की छात्रा त्रिनयोना को मिला विश्वरत्न सम्मान

उत्कृष्ट नृत्यकला के लिए झारखंड से विद्यार्थी-वर्ग में अकेले पाई यह उपलब्धि

संवाददाता

बोकारो। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में डीपीएस बोकारो का प्रयास एक बार फिर सार्थक सिद्ध हुआ है। विद्यालय की 10 वीं कक्षा की होनहार छात्रा त्रिनयोना को उत्कृष्ट नृत्यकला के लिए प्रतिष्ठित विश्वरत्न सम्मान से नवाजा गया है। संगीत, कला सहित विभिन्न विधाओं में प्रतिभाओं का मूल्यांकन कर प्रोत्साहित करने वाली जानी-मानी संस्था वर्दी वेलनेस ने व्यापक स्तर पर एक स्पर्धा करवाई थी। इसमें नृत्य संबंधी सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए विद्यार्थियों की कैटेगरी में पूरे झारखंड से एकमात्र त्रिनयोना को विश्वरत्न सम्मान के लिए चयनित किया गया। उसे स्मृति-चिह्न, प्रशस्ति प्रमाण-पत्र और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए शुक्रवार को विद्यालय के प्राचार्य डॉ० ए० एस० गंगवार ने त्रिनयोना को पुरस्कृत करते हुए बधाई दी तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि प्रत्येक बच्चे में अपनी खास प्रतिभा होती है और डीपीएस बोकारो अपने विद्यार्थियों की हर प्रतिभा को निखारने का हर अवसर और मंच प्रदान करता रहा है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण उत्थान के लिए यह बेहद जरूरी है।

डुमरी विधायक से जनहित में चंद्रपुरा, दुगदा व जरीडीह को बोकारो कोर्ट से जोड़ने की मांग

संवाददाता

बोकारो। डुमरी विधायक जय राम महतो का बोकारो के अधिवक्ताओं ने शुक्रवार को कोर्ट परिसर में जोरदार स्वागत किया। इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने आए दिन अधिवक्ताओं पर हो रहे हमले से बचाव के लिए एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट विधान सभा से पास करवाने की मांग की। अधिवक्ता सोमनाथ शेखर ने जनहित में चंद्रपुरा, दुगदा व जरीडीह को बोकारो कोर्ट के क्षेत्राधिकार में जोड़ने की मांग की। अतुल कुमार ने अधिवक्ताओं के लिए दिल्ली के तर्ज पर इंश्योरेंस पॉलिसी लाने में पहल करने की बात कही। विधायक ने अधिवक्ताओं को आश्वस्त किया कि उनकी मांग को विधान सभा के पटल पर रखेंगे और जल्द लागू करवाने का प्रयास करेंगे। इस अवसर पर लालटू चरण महतो, शिव नाथ महतो, रंजन कुमार मिश्रा, फटीक चंद्र सिंह, शंकर दे, पिंटू मिश्रा, संजय कुमार प्रसाद,अंकित ओझा, प्रेरणा पांडेय, जितेंद्र कुमार, चंदन कुमार, कृष्ण देव प्रसाद, विकास कुमार, राज श्री, दीपिका सिंह, संजीत कुमार सिंह, मो० हसनैन आलम, अनीश अंसारी, वंशिका सहाय, दीप्ति सिंह, रीना कुमारी, बीरेंद्र प्रसाद महतो, काली पद मांझी, अरूप चक्रवर्ती, दिनेश घोषाल, इंद्रनील चैटर्जी, सुभाष चक्रवर्ती,संजीत महतो समेत सैकड़ो अधिवक्ता मौजूद थे।

कुलदीप महतो ने राज्य चयन ट्रायल में किया शानदार प्रदर्शन, राष्ट्रीय तीरंदाजी चैंपियनशिप के लिए चयनित

संवाददाता

बोकारो। वेदांता ईएसएल तीरंदाजी अकादमी के उभरते सितारे कुलदीप महतो ने राज्य चयन ट्रायल में अपनी शानदार तीरंदाजी का प्रदर्शन करते हुए बोकारो जिले को गर्व महसूस कराया। यह ट्रायल जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, जमशेदपुर में आयोजित किया गया था, जिसमें कुलदीप ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और आगामी 41वीं एनटीपीसी सब-जूनियर राष्ट्रीय तीरंदाजी चैंपियनशिप के लिए झारखंड राज्य टीम में अपना स्थान पक्का किया। कुलदीप ने इस ट्रायल में 720 में से 697 अंक प्राप्त कर दूसरा स्थान हासिल किया, जो उनकी उत्कृष्ट तीरंदाजी क्षमता का प्रतीक है। इस चैंपियनशिप का आयोजन 3 से 10 जनवरी 2025 तक जयपुर, राजस्थान में किया जाएगा। कुलदीप महतो की तीरंदाजी की यात्रा 2022 में वेदांता ईएसएल तीरंदाजी अकादमी से शुरू हुई थी, जब वह अकादमी में शामिल हुए थे। इस अकादमी में उन्हें अनुभवी हेड कोच बुद्धेश्वर मुर्मू का मार्गदर्शन मिला, जिनके नेतृत्व में उन्होंने निरंतर अभ्यास और प्रशिक्षण के जरिए अपने कौशल को निखारा। कुलदीप की कड़ी मेहनत और समर्पण ने उन्हें कई प्रतियोगिताओं में सफलता दिलाई, और उन्होंने राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर की कई प्रतियोगिताओं में पदक जीते। वेदांता ईएसएल तीरंदाजी अकादमी की स्थापना 2020 में की गई थी, जिसका उद्देश्य बोकारो जिले के ग्रामीण इलाकों के युवाओं को तीरंदाजी जैसे खेल में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए एक मंच प्रदान करना था।

भाजपा फुसरो नगर मंडल की बैठक में सदस्यता अभियान चलाने का निर्णय

संवाददाता

बेरमो/ बोकारो। भाजपा झारखंड प्रदेश के आदेशानुसार भाजपा फुसरो नगर मंडल द्वारा संगठन महापर्व सदस्यता अभियान 2024-2030 को लेकर फुसरो नगर मंडल द्वारा शुक्रवार को गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र के 16 वीं सांसद रवींद्र कुमार पांडेय के आवासीय कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता फुसरो नगर मंडल अध्यक्ष दिनेश यादव ने की। बैठक में विशेष रूप से महापर्व सदस्यता अभियान को सफल बनाने हेतु विस्तृत चर्चा हुई। भाजपा परिवार के सभी स्तर के कार्यकर्ताओं को अपने भाजपा के लिंक के माध्यम से निर्धारित सदस्य बनाने का भी उल्लेख किया गया। अब संगठन में अपने-अपने भूमिका को पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया। बैठक में विशेष रूप से भाजपा के वरिष्ठ नेता मधुसूदन प्रसाद सिंह, मदन गुप्ता, पूर्व जिला मंत्री विक्रम पांडेय, फुसरो मंडल सदस्यता प्रभारी संजय प्रसाद, फुसरो नगर मंडल सदस्यता संयोजक रोहित मित्तल सह-संयोजक शंकर सिन्हा एवं प्रशांत कुमार सिंह उर्फ सन्नी, नवल किशोर सिंह, भरत वर्मा, विनय कुमार सिंह, कन्हैया तिवारी, सुरेंद्र गिरी, चंदन राम,शंकर भदानी, सूरज सिंह, साधु चौहान, श्रीकांत सिंह, मनोज चंद्रवंशी, मूलचंद खुराना के अलावे अनेकों कार्यकर्ता मौजूद थे।

झामुमो फुसरो नगर कमेटी ने फूंका गृहमंत्री अमित शाह का पुतला

बेरमो/ बोकारो। झारखंड मुक्ति मोर्चा फुसरो नगर कमेटी द्वारा शुक्रवार की शाम को करगली गेट में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहेब ड्रॉ० भीमराव आंबेडकर के खिलाफ दिये गये कथित बयान के विरोध में पुतला दहन किया। झामुमो कार्यकर्ता करगली गेट कार्यालय से पुतला लेकर नारेबाजी करते हुए करगली गेट स्थित गांधी चौक पहुंचे। यहां झामुमो नेताओं ने गृहमंत्री अमित शाह का पुतला दहन किया। इस दौरान झामुमो के जिला सचिव जयनारायण महतो ने कहा कि बाबा साहब जैसे महान व्यक्ति का अपमान लोकतंत्र के खिलाफ है। भाजपा देश के संविधान को समाप्त कर आरएसएस के विचारों पर आधारित संविधान लागू करने की कोशिश कर रही है। कहा कि भाजपा डॉ० अंबेडकर को अपमानित करने और सांसदों को लड़ाने का काम कर रही है। फुसरो नगर अध्यक्ष दीपक महतो ने कहा कि चुनाव के समय दलितों के हितों की बात करने वाली भाजपा का दोहरा चरित्र सामने आ चुका है।

श्री अय्यप्पा पब्लिक स्कूल में 36वीं वार्षिक खेल प्रतियोगिता का समापन

संवाददाता

बोकारो। श्री अय्यप्पा पब्लिक स्कूल में 36 वीं वार्षिक द्विदिवसीय खेल प्रतियोगिता एक भारत-श्रेष्ठ भारत का समापन समारोह शुक्रवार को बड़े हीं उत्साह और हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस आयोजन में छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और कर्मचारियों की व्यापक भागीदारी देखने को मिली। विद्यालय परिसर को रंग-बिरंगे नारों और प्रसिद्ध खिलाड़ियों के पोस्टरों से सजाया गया, जो बच्चों के उत्साह और मनोबल को बढ़ाने में सहायक रहे।

समारोह की शुरूआत मुख्य अतिथि सुभाष रजक, खेल नागरिक सेवा प्रबंधक, बोकारो स्टील सिटी और डॉ० मनीषा तिवारी निदेशक दिल्ली पब्लिक स्कूल चास की गरिमामयी उपस्थिति में हुई। अतिथियों का स्वागत पौधों और छात्रों द्वारा बनाए गए विशेष बैज से किया गया। स्वागत गीत हम आपका अभिनंदन करते हैं ने माहौल को भावविभोर कर दिया, वहीं खेल गीत आओ यारों खेल-कूद में सबसे आगे हम ने सभी का मन मोह लिया। इस आयोजन में छात्रों ने विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक गतिविधियों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कक्षा 7 के छात्रों ने बॉल ड्रिल प्रस्तुत की, जिसमें बॉल और व्यायाम के माध्यम से शारीरिक और मानसिक संतुलन का अद्भुत प्रदर्शन किया गया। छात्रों के रंग-बिरंगे परिधान और उनकी सटीक गतिविधियां आयोजन में विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।।विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती पी. शैलजा जयकुमार ने अपने भाषण में कहा कि खेल दिवस न केवल छात्रों के एथलेटिक कौशल को प्रदर्शित करने का माध्यम है, बल्कि उनकी रचनात्मक और लयबद्ध प्रतिभाओं को भी उभारता है। उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को बच्चों के मानसिक और शारीरिक संतुलन के लिए आवश्यक बताया।

प्रतियोगिताओं में कक्षा 6 से 12वीं तक के छात्रों ने 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर और 800 मीटर दौड़ जैसे विभिन्न ट्रैक और फील्ड कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। मार्च पास्ट और विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में छात्रों के प्रदर्शन ने दर्शकों को प्रभावित किया। छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों और कर्मचारियों के लिए म्यूजिकल चेयर, धीमी गति साइक्लिंग, बैलेंसिंग रेस, तीरंदाजी और रस्साकशी जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें उत्साह और मनोरंजन का माहौल बना रहा।

इस आयोजन में छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा का भी एक विशेष आकर्षण था। यमुना सदन ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि गंगा और पंपा सदनों ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। मार्च पास्ट में पेरियार सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का समापन जंबल मार्च के साथ हुआ, जिसमें छात्रों और कर्मचारियों ने एकता और सौहार्द्र का शानदार प्रदर्शन किया। झंडा उतारने के समारोह को पूरे सम्मान और गंभीरता के साथ आयोजित किया गया। उप-प्रधानाचार्य सुरेश नायर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। राष्ट्रगान की प्रस्तुति के साथ इस भव्य आयोजन का समापन हुआ, जिससे उपस्थित सभी के मन में गर्व और देशभक्ति की भावना जागृत हुई। इस वार्षिक खेल प्रतियोगिता ने न केवल छात्रों के एथलेटिक और रचनात्मक कौशल को प्रदर्शित किया, बल्कि खेल भावना और समावेशिता का संदेश भी दिया।

बड़ा नाला पर किये जा रहे निर्माण कार्य को फुसरो नप प्रशासन ने रोका

संवाददाता

फुसरो/ बोकारो। फुसरो नगर परिषद प्रशासन ने पुराना बीडीओ ऑफिस में शिव साहू द्वारा नाला के उपर कराए जा रहे अवैध रूप से निर्माण कार्य को रूकवा दिया। नाला पर निर्माण की जानकारी मिलने पर नप प्रशासन ने बेरमो थाना पुलिस के साथ कार्रवाई करते हुए निर्माण कार्य को रुकवा दिया।

नगर परिषद के सिटी मैनेजर अजमल हुसैन के नेतृत्व में कनीय अभियंता, जलकर संग्रहकर्ता कर्मियों ने संयुक्त रूप से कार्रवाई की। सीटी मैनेजर श्री हुसैन ने बताया कि नाला के उपर अवैध रूप से आवास निर्माण करने की जानकारी मिलने पर कार्रवाई की गई है। कहा कि निर्माण कार्य बंद कराने हेतु दो दिन पूर्व नोटिस दिया गया था। परंतु आवास मालिक शिव साहू के द्वारा कार्य नहीं रोका गया। इसके बाद यह कार्रवाई की गई। कहा कि अतिक्रमण के कारण बड़ा नाला संकीर्ण हो गया है। जिसके कारण बारिश के दिनों में जल निकासी नहीं होने के कारण कई वार्ड के कॉलोनियों में पानी प्रवेश कर जाता है।

संक्षिप्त खबरें

चतरा में म्यूजिकल चेयर और स्केटिंग प्रतियोगिता का आयोजन

चतरा। चतरा के स्थानीय हेड क्लब में झारखंड म्यूजिकल चेयर संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसकी अध्यक्षता संघ के सचिव विकास कुमार केशरी ने की। बैठक का मुख्य उद्देश्य 3१ जिला स्तरीय म्यूजिकल चेयर और स्केटिंग प्रतियोगिता के आयोजन को लेकर चर्चा करना था। बैठक में सभी उपस्थित सदस्यों ने एकमत होकर यह निर्णय लिया कि इस प्रतियोगिता का आयोजन 22 दिसंबर, रविवार को रर +2 गर्ल्स हाई स्कूल के प्रांगण में किया जाएगा। आयोजन समिति के सदस्य भी घोषित किए गए, जिसमें पंकज दुबे, कुमार विवेक सिंह, विकास कुमार केशरी और प्रदीप कुमार को संरक्षक बनाया गया। प्रतियोगिता के अध्यक्ष के रूप में सचिंद्र पासवान, उपाध्यक्ष के रूप में संजीत मिश्रा, श्रीराम शास्त्री और सूर्यप्रकाश सिंहा का चयन किया गया। सचिव के रूप में सूरज कुमार, संयुक्त सचिव के रूप में सुनीता कुमारी, जुगल कुमार और मो. हेलाल अख्तर को नियुक्त किया गया। कोषाध्यक्ष के रूप में देवानंद कुमार को नियुक्त किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य खिलाड़ियों में उत्साह और रोमांच उत्पन्न करना है, ताकि वे अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमता को बेहतर बना सकें। आयोजन समिति के सचिव सूरज कुमार सोनी ने कहा कि इस प्रतियोगिता का आयोजन विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य में भी लाभ देगा। झारखंड म्यूजिकल चेयर संघ के सचिव विकास कुमार केशरी ने आयोजन समिति के सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दी और बैठक का समापन किया।

मलेरिया व एनीमिया मुक्त भारत का प्रशिक्षण बीटीटी, सहिया एवं सहिया साथी को दिया गया

गिद्धौर/ चतरा। प्रखंड मुख्यालय स्थित अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में शुक्रवार को सीएचसी इटखोरी के तहत कार्यरत बीटीटी, सहिया और सहिया साथियों को मलेरिया और एनीमिया मुक्त भारत अभियान का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में इटखोरी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ० सुमित कुमार जायसवाल, बीपीएम मो. मारूफ और एमटीएस अंशुमन पांडेय ने प्रतिभागियों को मलेरिया और एनीमिया की पहचान और उपचार के महत्व के बारे में बताया। इसके साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे अन्य कार्यक्रमों को बेहतर तरीके से जरूरतमंदों तक पहुंचाने का आह्वान किया गया। इस दौरान, फैमिली प्लानिंग में बेहतर कार्य करने वाले पांच एएनएम, छह सहिया और चार सहिया साथियों को शाल देकर सम्मानित किया गया।

गिद्धौर में धान क्रय केंद्र का उद्घाटन

गिद्धौर/ चतरा। प्रखंड मुख्यालय स्थित गिद्धौर पैक्स में शुक्रवार को सहकारिता विभाग के तहत धान क्रय केंद्र का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन जिला सहकारिता पदाधिकारी लोकनाथ महतो और गिद्धौर की उपमुखिया मंजू देवी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। उद्घाटन के बाद किसानों से धान की खरीदारी शुरू कर दी गई। लोकनाथ महतो ने किसानों से अपील की कि वे सूखा और साफ धान क्रय केंद्र पर लाएं ताकि किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो। उन्होंने 2300 रुपये प्रति क्विंटल धान की खरीदारी की जानकारी दी और साथ ही किसानों को 100 रुपये प्रति क्विंटल बोनस देने की बात कही।

बारिसाखी पंचायत में 'प्रशासन गांव की ओर' के तहत शिविर का आयोजन

गिद्धौर/ चतरा। प्रखंड के बारिसाखी पंचायत में 'प्रशासन गांव की ओर' के तहत शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन जिप सदस्य अनिता देवी, प्रमुख अनीता यादव, मुखिया सुमिरा कुमारी, बीससूत्री अध्यक्ष विनोद पासवान, वरीय पदाधिकारी देवंती देवी और बीडीओ अनंत शयनम विश्वकर्मा ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम में वृद्धा पेंशन, अबूवा आवास, मईया सम्मान योजना जैसे कार्यक्रमों के फार्म भी जमा किए गए। वरीय पदाधिकारियों ने प्रखंड में चल रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी और ग्रामीणों से इनका लाभ उठाने की अपील की।

15 वर्ष के बच्चों की हृदय रोग की जांच शिविर आयोजित

गिद्धौर/ चतरा। प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिमरातरी और महुआटांड़ में 70 बच्चों का हृदय रोग की जांच शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर स्वास्थ्य विभाग द्वारा चिन्हित सत्य साईं संजीवनी अस्पताल के बैनर तले किया गया। शिविर में 15 वर्ष के आयु वाले बच्चों की हृदय जांच की गई, जिसमें तेज धड़कन, वजन का बढ़ना, शरीर का नीलापन, बार-बार सर्दी-खांसी, सांस लेने में तकलीफ, और स्तनपान के दौरान पसीना आना जैसे लक्षणों की जांच की गई। श्री सत्य साईं संजीवनी अस्पताल के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर गौरव दत्त ने बताया कि हृदय रोग से प्रभावित बच्चों का इलाज बिल्कुल मुफ्त किया जा रहा है। स्वास्थ्य संस्थान द्वारा निशुल्क दवाइयां, रहने, खाने और आने-जाने का खर्च भी उठाया जाता है। उन्होंने बताया कि प्रखंड के सभी विद्यालयों में 15 वर्ष के बच्चों की हृदय रोग की जांच की जाएगी, और चिन्हित बच्चों को निशुल्क इलाज मुहैया कराया जाएगा। इस दौरान विद्यालय के सचिव, सहायक शिक्षक और अन्य लोग भी मौजूद थे।

झामुमो कार्यकर्ताओं ने किया अमित शाह का पुतला दहन

गिरिडीह। झामुमो कार्यकर्ताओं ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर का अपमान किए जाने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में झामुमो जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकताओं ने हाथों में तख्तियां और नारे लगाते हुए जुलूस निकाला और टावर चौक पर पहुंचकर अमित शाह का पुतला दहन किया। कार्यकताओं ने 'अमित शाह मुदार्बाद' और 'अंबेडकर का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान' के नारे लगाते हुए अपनी नाराजगी व्यक्त की। कार्यक्रम में झामुमो के जिला अध्यक्ष संजय सिंह ने कहा कि अमित शाह का बयान भारतीय संविधान निमार्ता बाबा साहेब अंबेडकर के प्रति अपमानजनक है और इस पर उन्हें माफी मांगनी चाहिए।

डाहा पंचायत सचिवालय में सुशासन सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन

जागरूकता और जन समस्याओं के समाधान के लिए व्यापक प्रयास

संवाददाता

हंटरगंज। उपायुक्त रमेश घोलप के निर्देशानुसार, हंटरगंज प्रखंड के डाहा पंचायत सचिवालय में शुक्रवार को सुशासन सप्ताह 'प्रशासन गांव की ओर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम गांवों में शासन की उपस्थिति को मजबूत करने और लोगों की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में पंचायत सचिव प्राण कुमार, रोजगार सेवक और अन्य ग्राम प्रतिनिधि उपस्थित थे। पंचायत सचिव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सुशासन सप्ताह का उद्देश्य महिलाओं में जागरूकता लाना और जन समस्याओं का समाधान करना है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से पंचायत और गांव स्तर पर सखी मंडल की महिलाओं के माध्यम से सरकार की विभिन्न योजनाओं और गतिविधियों के बारे में आम लोगों को जागरूक किया जाएगा। इससे ग्रामीण महिलाएं अपने अधिकारों को समझ सकेंगी और उन्हें सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाओं का लाभ उठा सकेंगी। इस शिविर में विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे जॉब कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र, पेंशन, अबूआ आवास, मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना, राशनकार्ड, ई-केवाईसी, स्वास्थ्य विभाग, कल्याण विभाग, शिक्षा विभाग, और अंचल विभाग के तहत लाभ प्रदान किया गया। कई मामलों का त्वरित निष्पादन किया गया और उपस्थित लोगों को इन योजनाओं के लाभों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

प्रशासन गांव की ओर अभियान के तहत शिविर का आयोजन

बीडीओ, सीओ और बीपीओ ने सुनीं लोगों की समस्याएं

संवाददाता

लावालौंग। लावालौंग प्रखंड क्षेत्र में सुदूरवर्ती सिलदाग और लामटा पंचायतों में प्रशासन गांव की ओर अभियान के तहत शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बीडीओ बिपिन कुमार भारती, सीओ सुमित झा, बीपीओ निरंजन कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी पहुंचे और ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं। कई मामलों का ऑन-दी-स्पॉट निपटारा किया गया। शिविर में सैकड़ों लोगों ने सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवेदन जमा किया।

बीडीओ ने सभी आवेदनों और संबंधित ऑनलाइन मामलों के निष्पादन और अपडेट करने के निर्देश दिए। इस मौके पर पंचायत सचिव संदीप कुमार, विनय कुमार, नागेश्वर यादव, रोजगार सेवक मनोरंजन कुमार, जेएसएलपीएस के बीपीएम रंजन गुप्ता सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

ऊपरघाट में शहीद कॉ. कैलाश महतो का मनाया गया 49 शहादत दिवस

महाजनों के खिलाफ आवाज उठाए थे कॉ. कैलाश : जयराम

हुकूमत के खिलाफ हमेशा लड़ाई लड़ते रहे कैलाश : पूर्व सांसद

संवाददाता

बोकारो थर्मल। नावाडीह प्रखंड के ऊपरघाट के हरलाडीह स्थित कैलाश स्मारक हाई स्कूल में शुक्रवार को शहीद कॉ. कैलाश महतो का 49वां शहादत दिवस धूमधाम से मनाया गया। शहीद के आदमकद प्रतिमा पर सर्वप्रथम उनकी धर्मपत्नी रूकमणी देवी ने पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद शहीद वेदी पर झंडोतोलन किया गया। शहादत दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में डुमरी विधायक जयराम महतो ने संबोधित करते हुए कहा कि कॉ. कैलाश महतो ने महाजनों के खिलाफ व्यापक लड़ाई लड़ी थी, जिसके कारण क्षेत्र से महाजनों को भागना पड़ा था। वे एक नए समाज और शोषण-जुल्म से मुक्त समाज निर्माण के पक्षधर थे। विधायक ने कहा कि झारखंड राज्य को बने लगभग 25 साल हो चुके हैं, लेकिन यहां की तकदीर और तस्वीर में कोई बदलाव नहीं आया है। इसके लिए यहां के लोगों को झारखंड के पुरोधा स्व. विनोद बिहारी महतो, स्व. टेकलाल महतो, स्व. शिबा महतो, कॉ. कैलाश महतो सहित अन्य शहीदों के अनुकरण करते हुए शिक्षा प्राप्त कर संघर्ष करना होगा।

आरएनएम कॉलेज में टेलीफोन उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

दूर संचार के युग में साइबर फ्रॉड से बचें और दूसरों को बचाएं : प्रदीप कुमार

संवाददाता

हंटरगंज। हंटरगंज के राम नारायण मेमोरियल डिग्री कॉलेज के सभागार में भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण और महाविद्यालय की एनएसएस इकाई के संयुक्त तत्वाधान में एक भव्य टेलिकॉम उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम एसएनएमएम सोशल डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम में कंज्यूमर ऑर्गेनाइजेशन के सदस्य प्रदीप कुमार और पन्ना लाल मुख्य रूप से उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य की उपभोक्ता शिकायत निवारण प्रणाली और उपभोक्ता हित के संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाना था। प्रदीप कुमार ने वीडियो के माध्यम से स्मार्ट बोर्ड पर द्वारा उपभोक्ता हित में चलाए जा रहे जागरूकता अभियानों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि टेलिकॉम उपभोक्ता अपनी शिकायतें कैसे दर्ज कर सकते हैं और उन शिकायतों का समाधान कैसे प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, प्रदीप कुमार ने उपभोक्ताओं के लिए जारी किए गए ऐप के बारे में विस्तृत जानकारी दी और यह भी बताया कि कैसे इन ऐप्स के माध्यम से उपभोक्ता अपनी कॉल की गुणवत्ता और समस्याओं की रिपोर्ट कर सकते हैं।

तीन दिवसीय युवा महोत्सव झूमर का समापन

संवाददाता

चतरा। चतरा महाविद्यालय में चल रहे तीन दिवसीय 28 वें युवा महोत्सव झूमर का समापन आज किया गया। इस महोत्सव का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक और कलात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना था। समापन के दिन विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें क्लासिकल डांस, पेंटिंग, क्ले मॉडलिंग, नाटक, मेंहदी, रंगोली, पोस्टर मेकिंग, डिबेट, फोटोग्राफी, क्विज, वेस्टर्न वोकल, स्किट, वेस्टर्न ग्रुप सॉन्ग, फोक डांस, वेस्टर्न इंस्ट्रूमेंटल, और सोलो म्यूजिक शामिल थे। प्रतियोगिताओं का कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे से शुरू हुआ और देर शाम तक चला। इस दौरान विद्यार्थियों ने अपनी कला और कौशल का प्रदर्शन किया, जिससे दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। खासकर नाटक और नृत्य की प्रस्तुतियों ने तालियों की गड़गड़ाहट बटोरी। डिबेट प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने हिंदी, अंग्रेजी, और संस्कृत में संवाद प्रस्तुत किए, जिनमें गहरी समझ और आत्मविश्वास देखने को मिला। लोकगीतों और कथक नृत्य की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और भी रोमांचक बना दिया। इस महोत्सव में विनोबा भावे विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले 21 महाविद्यालयों के लगभग एक हजार छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुकेश कुमार झा ने बताया कि विनोबा भावे विश्वविद्यालय पूरे देश में अपनी शिक्षा, संस्कृति, और संस्कारों के लिए जाना जाता है। उन्होंने इस महोत्सव के आयोजन को एक महत्वपूर्ण कदम बताया और कहा कि इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में रचनात्मकता और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलेगा।

समापन समारोह शुक्रवार को आयोजित किया जाएगा, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले महाविद्यालयों को पुरस्कृत किया जाएगा।

इंटक कार्यकर्ताओं ने मनाई स्व. रामचंद्र मिश्रा की 13वीं पुण्यतिथि

संवाददाता

गिरिडीह। राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ (इंटक) के बैनर तले मजदूर नेता, शिक्षाविद, और मानवाधिकार कार्यकर्ता स्वर्गीय रामचंद्र मिश्रा की 13वीं पुण्यतिथि गिरिडीह के सीसीएल के ओपन कास्ट खदान के पास स्थित खेल मैदान में श्रद्धा पूर्वक मनाई गई। इस कार्यक्रम का संचालन असंगठित इंटक के अध्यक्ष और पंचायत समिति सदस्य मनोज दास ने किया, जबकि अध्यक्षता राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के उपाध्यक्ष रमेश कुमार झा ने की। सभा के दौरान वक्ताओं ने स्वर्गीय रामचंद्र मिश्रा के जीवन और कार्यों पर विस्तार से चर्चा की। असंगठित इंटक के अध्यक्ष मनोज दास ने बताया कि स्वर्गीय मिश्रा ने अपनी श्रमिक राजनीति की शुरूआत राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के संस्थापक पूर्व मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे जी के संपर्क में आकर की थी, और इंटक की माइका यूनियन को एक नई दिशा दी थी। रमेश कुमार झा ने स्वर्गीय मिश्रा के योगदान को याद करते हुए कहा कि उनका काम हमेशा याद किया जाएगा, खासकर जब उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे के सहयोग से दूर-दराज के इलाकों में शिक्षा के लिए स्कूल स्थापित किए। उन्होंने मंडल कारा में शिक्षा का अलख जगाने जैसे कार्य किए, जो हमेशा समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बने रहेंगे। इस कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव और युवा इंटक के प्रदेश अध्यक्ष ऋषिकेश मिश्रा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि स्वर्गीय रामचंद्र मिश्रा ने मानवाधिकार की लड़ाई लड़ी और पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्रा के सहयोग से उन्हें मानवाधिकार संरक्षण प्रतिष्ठान का अध्यक्ष भी नियुक्त किया गया था।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के ऋषिकेश मिश्र के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ, जिसमें उन्होंने सभी से स्वर्गीय मिश्रा की तरह इमानदारी की राह पर चलने और मजदूरों के लिए हमेशा संघर्षरत रहने की अपील की।

समस्याओं के समाधान हेतु ग्राम पंचायत प्रतिनिधि और बाल मित्र प्रतिनिधियों ने की वार्ता

संवाददाता

गिरिडीह। कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन्स फाउंडेशन द्वारा संचालित बाल मित्र ग्रामों के विकास के लिए तिलकडीह पंचायत में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में तिलकडीह पंचायत क्षेत्र के 13 बाल मित्र ग्रामों के प्रतिनिधियों, युवा मंडल, महिला मंडल, और अन्य सामाजिक संगठनों के सदस्यों ने पंचायत मुखिया विनोद हेम्ब्रोम के साथ मिलकर गांवों की समस्याओं पर चर्चा की।

बैठक में ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों ने बाल मित्र ग्रामों से संबंधित समस्याओं की लिखित सूची पंचायत मुखिया को सौंपी, ताकि इन समस्याओं को ग्राम विकास पंजी में शामिल किया जा सके और उनका समाधान निकाला जा सके।

पंचायत मुखिया विनोद हेम्ब्रोम ने कहा कि यह कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन्स फाउंडेशन का सराहनीय प्रयास है कि वह ग्राम पंचायत के माध्यम से गांवों की समस्याओं को उठाने का काम कर रहा है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि वे सभी समस्याओं का समाधान कराने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे और पंचायत के स्तर पर निराकरण के लिए कदम उठाएंगे। बैठक में शामिल बाल मित्र ग्रामों के सदस्य जैसे निरुला, सौरभ, राजू मरांडी, फुलवा कुमारी, सूरज कुमार, सफीना खातून, और अन्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए और समस्याओं का समाधान मांगने की अपील की।

इस गोष्ठी में कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन्स फाउंडेशन के सुरेंद्र पंडित, संदीप नयन, राजू सिंह, उदय राय सहित अन्य ने भी भाग लिया और पंचायत के विकास कार्यों में सहयोग देने का वादा किया।

विद्यालय में रसोईया पद की नियुक्ति पर विवाद

हंण्टरगंज। चतरा जिले के हंण्टरगंज प्रखंड क्षेत्र में स्थित नवसृजित प्राथमिक विद्यालय महुआटाड में रसोईया के पद पर नियुक्ति को लेकर दो माह से विवाद चल रहा है। विद्यालय की प्रबंधन समिति ने इस मुद्दे पर चार बार बैठक की, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं निकल सका है। विद्यालय की एक रसोईया ने दो माह पहले त्यागपत्र दे दिया था, जिसके बाद केवल एक रसोईया 75 बच्चों का मध्याह्न भोजन बना रही है। इससे रसोईया को काफी कठिनाई हो रही है, और कभी-कभी इमरजेंसी स्थितियों में बच्चों का भोजन रुक जाता है। प्रधानाध्यापिका संगीता कुमारी ने बताया कि रसोईया की कमी को लेकर विभाग को सूचना दी गई है, और इसके लिए छाया प्रति भी उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि एक रसोईया के लिए 75 बच्चों का भोजन बनाना कठिन है, इसलिए विद्यालय प्रबंधन समिति ने एक सहायक रसोईया को रखा है।

खैवा जलप्रपात में नया साल की मस्ती, पर्यटकों का आना-जाना शुरू

मनोरम वादियों में पर्यटकों का जमावड़ा, जलप्रपात में पिकनिक का आनंद

संवाददाता

लावालौंग। लावालौंग प्रखंड मुख्यालय के पास स्थित खैवा जलप्रपात, जो अपने स्वच्छ जल और पत्थरों में बने प्रकृतिक नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है, में नया साल शुरू होने से पहले ही पर्यटकों का आना-जाना शुरू हो गया है। लोग नया साल यादगार बनाने के लिए खैवा जलप्रपात की ओर आकर्षित हो रहे हैं। खैवा जलप्रपात चतरा जिले के अलावा अन्य राज्यों में भी प्रसिद्ध है। यहां आने वाले पर्यटक मनोरम दृश्य का आनंद लेते हैं, और अब यहां कई छोटे मंदिर भी बन गए हैं, जहां लोग पूजा करने के लिए भी आते हैं। जनवरी के महीने में विशेष रूप से पर्यटकों की बड़ी संख्या उमड़ती है। इस स्थान की प्राकृतिक सुंदरता और चारों ओर फैले पहाड़ और जंगल पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। पानी की धारा से निकलने वाली कल-कल की ध्वनि और पत्थरों की नक्काशी पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। खैवा जलप्रपात में लोग परिवार सहित पिकनिक मनाने आते हैं और यहां के सौंदर्य में खो जाते हैं।

1 जनवरी और मकर संक्रांति के अवसर पर, विशेष रूप से 1 जनवरी और 14-15 जनवरी को यहां भारी भीड़ होती है। इस दिन पर्यटक पिकनिक मनाने के लिए आते हैं और मकर संक्रांति के दौरान स्नान कर पुण्य प्राप्त करने के लिए पहुंचते हैं। हालांकि खैवा जलप्रपात प्रसिद्ध है, यहां आज भी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। यदि जिला प्रशासन और स्थानीय विधायक-सांसद द्वारा यहां सुविधाओं का सुंदरीकरण किया जाए तो यह पर्यटक स्थल और भी आकर्षण का केंद्र बन सकता है।

हिन्दी दैनिक
झारखंड दर्शन
बोकारो, शनिवार 21 दिसंबर 2024

E-mail : jharkhanddarshan405@gmail.com ● Website: jharkhand-darshan.com

संक्षिप्त खबरें

उपायुक्त ने की आवंटन राशि की वर्तमान स्थिति की समीक्षा

धनबाद। उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी माधवी मिश्रा ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए विभागों को योजना और गैर योजना मद में प्राप्त आवंटन राशि की वर्तमान स्थिति की समीक्षा की। उपायुक्त ने चिरकुंडा नगर परिषद, पशुपालन, नियोजन, मत्स्य, योजना, स्पेशल डिवीजन, उद्यान, कृषि, लघु सिंचाई, पेयजल मैकेनिकल, भवन प्रमंडल, आरसीडी, सामाजिक सुरक्षा, सिविल सर्जन कार्यालय, शिक्षा, खाद्य आपूर्ति, सहकारिता, खेल, पंचायती राज, आपदा प्रबंधन, निर्वाचन, शिक्षा सहित सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी के कार्यालयों, सभी अंचलाधिकारी के कार्यालयों समेत अन्य कार्यालयों के योजना और गैर योजना मद में प्राप्त आवंटन एवं उनके व्यय की समीक्षा की। समीक्षा करने के बाद उपायुक्त ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लोगों के कल्याण एवं जिले के विकास के लिए विभागों को राशि आवंटित की जाती है। राशि का उपयोग नहीं होने से आम जनता राज्य सरकार की कई कल्याणकारी योजनाओं से वंचित रह जाती है। बैठक में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, अनुमंडल पदाधिकारी राजेश कुमार, एडीएम सप्लाई जियाउल अंसारी, निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन के अलावा सभी विभागों के पदाधिकारी, सभी प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी अंचल के अंचल अधिकारी मौजूद थे।

एडीएम लॉ एंड आर्डर ने सुनी जनता की समस्याएं

धनबाद। एडीएम लॉ एंड आर्डर पीयूष सिन्हा ने समाहरणालय में जिले के विभिन्न क्षेत्र से आए लोगों की शिकायतों को सुना। लोगों के आवेदनों को प्राप्त कर उन्होंने संबंधित पदाधिकारी को शिकायत का निष्पादन करने के लिए निर्देशित किया। जनता दरबार में रैयती खतियान जमीन को गैराबद की सूची से हटाने से संबंधित, आर्म लाइसेंस, प्रधानमंत्री आवास से संबंधित, म्युटेशन, जमीन की रजिस्ट्री, जमीन मापी से संबंधित मामले, अवैध खनन, प्रदूषण से संबंधित मामले, वंशावली निर्गत करने से संबंधित, पारिवारिक मामले, स्वास्थ्य संबंधित मामले, रोजगार एवं शिक्षा से संबंधित मामले, जमीन से जुड़े मामले सहित अन्य शिकायतें प्राप्त हुई। उन्होंने ने लोगों को पूर्ण भरोसा दिलाया कि आपकी समस्याओं को दूर करना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। जिला प्रशासन विधि सम्मत आपकी हर समस्याओं को दूर करने का प्रयास करेगा।

15 कमर्शियल प्रतिष्ठानों की टीम ने की मापी

धनबाद। अपर नगर आयुक्त संजीव कुमार के निदेर्शानुसार सहायक नगर आयुक्त प्रियंका कुमारी के नेतृत्व में निगम की गठित टीम, चास स्थित वाणिज्यिक एरिया के होल्डिंग टैक्स निर्धारण के लिए 15 कमर्शियल प्रतिष्ठान की मापी की। सहायक प्रशासक द्वारा 30 दिसंबर 2024 तक हर हाल में सभी बकाये होल्डिंग टैक्स का भुगतान करने का सख्त निर्देश दिया गया है। साथ हीं उन्होंने कहा कि उक्त निर्देश के अवहेलना करने पर झारखण्ड नगरपालिका अधिनियम-2011 की सुसंगत धाराओं के तहत कार्रवाई की जाएगी, जिसके लिए घृतिकर प्रबंधन स्वयं जिम्मेवार होंगे। क्योंकि उनको भुगतान करने हेतु कई बार समय दिया गया है। मौके पर नगर प्रबंधक, नगर मिशन प्रबंधक कर संग्रहकर्ता, पीआइयू मेसर्स श्री पब्लिकेशन एंड स्टेशनर्स के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

असर्फी हॉस्पिटल, धनबाद में क्रिसमस डे धूमधाम से मनाया गया

धनबाद। असर्फी हॉस्पिटल धनबाद में क्रिसमस डे के पूर्व शुक्रवार को क्रिसमस डे धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की शुरूआत केक काटकर की गई, जिससे वातावरण खुशियों से भर गया। कार्यक्रम के दौरान हॉस्पिटल के कर्मचारियों ने कई आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया और विभिन्न विभागों के कर्मचारियों ने नाटक प्रस्तुत किए, जो दर्शकों को मनोरंजन और उल्लास से भरपूर थे। सेंटा क्लाज के रूप में सजे हुए अस्पताल के कर्मचारियों ने उपस्थित सभी लोगों को चॉकलेट वितरित की, जिससे माहौल और भी उत्साहपूर्ण हो गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने इस विशेष दिन का भरपूर आनंद लिया। इस कार्यक्रम में असर्फी हॉस्पिटल के निदेशक डॉ० नयन प्रकाश सिंह, निदेशक जय प्रकाश सिंह, निदेशक गोपाल सिंह, उदय प्रताप सिंह, डॉ० एस० के० रॉय, डॉ० राधिका मोहन, डॉ० पंकज, डॉ० संजय कुमार सिंह, संतोष सिंह एवं अन्य सम्माननीय व्यक्ति उपस्थित थे। इस धूमधाम भरे उत्सव ने सभी को क्रिसमस की खुशियों का अहसास कराया और हॉस्पिटल के कर्मचारियों के बीच आपसी एकजुटता को भी बढ़ावा दिया।

भवन निर्माण में घटिया सामग्री का उपयोग, जेई ने संवेदक को लगायी फटकार

बाघमारा। नवागढ़ स्थित डीपीएलएम प्लस 2 उच्च विद्यालय परिसर में कम्प्यूटर कक्ष के निर्माण कार्य में बांसजोड़ा पंचायत के ग्रामीणों ने अनियमितताओं का आरोप लगाया और जांच की मांग की। इस पर शिक्षा विभाग ने मामले को गंभीरता से लिया और बाघमारा के जेई राजेश मोहली ने स्थल का निरीक्षण किया। ग्रामीणों ने जेई को बताया कि भवन निर्माण में संवेदक ने घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया है, जिसमें बंगला भट्ठा की खराब ईंटें, बालू और अन्य निर्माण सामग्री शामिल हैं। शिकायत के बाद जेई ने संवेदक को तत्काल इन सामग्री को हटाने और पुनः सही निर्माण कार्य शुरू करने का निर्देश दिया। जेई ने यह भी कहा कि चिमनी ईंटों और अन्य सामग्री को गिरने के बाद, निर्माण कार्य की अनुमति उनकी जांच के बाद ही दी जाएगी। साथ ही, भवन निर्माण का कार्य अब डीपीएलएम विद्यालय प्रबंध समिति की पांच सदस्यीय टीम की निगरानी में होगा।

भाजपा सांसद ढुल्लू महतो ने स्वास्थ्य योजनाओं पर सदन का ध्यान आकृष्ट कराया, कहा

सभी नागरिक को गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिले

संवाददाता

धनबाद। धनबाद लोकसभा क्षेत्र के सांसद ढुल्लू महतो ने संसद के शीतकालीन सत्र में जनहित से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों को सदन में उठाया। इनमें स्वास्थ्य, आयुष्मान भारत योजना, आयुष पैकेज और ग्रामीण-शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की समान पहुंच जैसे विषय शामिल थे। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने इन सवालों का विस्तार से उत्तर दिया और अपनी नीतियों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति स्पष्ट की।

गैर-संक्रामक रोगों के लिए आयुष पैकेज

सांसद श्री महतो ने पूछा कि क्या मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसे गैर-संक्रामक रोगों के इलाज के लिए आयुष पैकेजों को आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) में शामिल किया जाएगा। इस पर आयुष मंत्रालय ने जवाब दिया कि फिलहाल आयुष पैकेज योजना में शामिल नहीं हैं। हालांकि, सरकार इन पैकेजों की प्रभावशीलता, लागत-प्रभाव और राष्ट्रीय प्रासंगिकता के आधार पर विचार कर रही है। मंत्रालय ने यह भी बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य लाभ पैकेजों में 1961 उपचार पैकेज शामिल हैं, लेकिन आयुष पैकेजों को जोड़ने की प्रक्रिया पर अभी तक अंतिम निर्णय नहीं हुआ है।

आयुष्मान आरोग्य केंद्रों का वितरण और संचालन

सांसद ढुल्लू महतो ने देशभर में आयुष्मान आरोग्य केंद्रों की संख्या और उनके भौगोलिक वितरण के बारे में भी सवाल पूछा। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने उत्तर दिया कि वर्तमान में देशभर में 1,40,305 आयुष्मान आरोग्य केंद्र संचालित हो रहे हैं। इनमें से झारखंड में 3,529 और उत्तर प्रदेश में 18,494 केंद्र स्थापित किए गए हैं। महाराष्ट्र, बिहार, और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में भी बड़ी संख्या में केंद्र संचालित हैं। मंत्रालय ने बताया कि 12 दिसंबर 2024 तक कुल 4,192 केंद्रों का मूल्यांकन राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत किया गया है। इनमें झारखंड में 91 केंद्र और पश्चिम बंगाल में 770 केंद्र शामिल हैं। यह मूल्यांकन केंद्रों में दी जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता सुधारने के उद्देश्य से किया गया।

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं

सांसद श्री महतो ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए कदमों पर भी संवाद किया। जवाब में मंत्रालय ने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को देशभर में मानक आबादी के आधार पर स्थापित किया गया है। इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में हर 5,000 जनसंख्या पर एक उप-स्वास्थ्य केंद्र और हर 30,000 जनसंख्या पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित किया गया है। शहरी क्षेत्रों में आबादी के घनत्व के आधार पर इसी प्रकार का वितरण किया गया है।

सांसद के प्रयासों की सराहना

सांसद ढुल्लू महतो ने कहा कि स्वास्थ्य जैसे गंभीर मुद्दों पर मेरे सवाल करने का आशय यह है कि धनबाद और झारखंड के हर नागरिक को सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिलें। मैंने सरकार को यह भी सुझाव दिया है कि योजनाओं को लागू करने में स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखा जाय। सांसद द्वारा उठाए गए सवाल और सरकार द्वारा दिए गए उत्तर से यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में बहुत काम हुआ है, लेकिन अभी और सुधार की आवश्यकता है। श्री महतो के प्रयासों से उनके क्षेत्र के नागरिकों में सकारात्मकता बढ़ी है। लोगों को उम्मीद है कि इन मुद्दों पर ठोस कदम उठाए जाएंगे और योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन होगा।

अमित शाह के अपमानजनक बयान के खिलाफ इंडिया गठबंधन ने मनाया प्रतिवाद दिवस

संवाददाता

धनबाद। गृह मंत्री अमित शाह द्वारा डॉ० भीमराव अंबेडकर के प्रति की गई अपमानजनक टिप्पणी के विरोध में 20 दिसंबर को गोपीनाथपुर धरना स्थल पर इंडिया गठबंधन ने प्रतिवाद दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता झामुमो के जिला अध्यक्ष लखी सोरेन ने की, जबकि संचालन माले नेता एवं जीप सदस्य बादल बाउरी ने किया। इस दौरान अमित शाह का पुतला दहन किया गया और उनके बयान की कड़ी आलोचना की गई। वक्ताओं ने कहा कि संसद में अमित शाह की टिप्पणी न केवल अंबेडकर के प्रति अपमानजनक है, बल्कि भाजपा और संघ की मनुवादी मानसिकता को उजागर करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि अमित शाह बार-बार डॉ० अंबेडकर का नाम लेकर उनका उपहास करते हैं, जो भाजपा और आरएसएस की दलित-विरोधी मानसिकता का प्रमाण है।।वक्ताओं ने मांग की कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बयान के लिए देश से माफी मांगें और गृह मंत्री को बर्खास्त करें। उन्होंने कहा कि डॉ० अंबेडकर ने संविधान और विचारों के माध्यम से एक धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी और समानता पर आधारित भारत की नींव रखी। ऐसे में अमित शाह के बयान से करोड़ों दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, महिलाओं और छात्रों की भावनाओं को ठेस पहुंची है। धरने में झामुमो, कांग्रेस, और माले समेत विभिन्न दलों के नेताओं और सैकड़ों समर्थकों ने भाग लिया। उपस्थित नेताओं में जीप सदस्य दीपाली रविदास, लखी देवी, अंजू चटर्जी, इंदु देवी, झामुमो नेता समीम अंसारी, कांग्रेस के निरसा प्रखंड अध्यक्ष डी.एन. यादव, नंदन भुइयां, और कई अन्य प्रमुख नेता शामिल थे।

झरिया में निःशुल्क साइकिल और पोशाक वितरण कार्यक्रम का आयोजन

संवाददाता

झरिया। झारखंड सरकार के कल्याण विभाग द्वारा झरिया विधानसभा क्षेत्र के बीआरसी भवन में एक निःशुल्क साइकिल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में झरिया विधायक रागिनी सिंह उपस्थित रहीं, जिन्होंने झरिया विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न सरकारी स्कूलों के 460 छात्र-छात्राओं को साइकिल वितरित की और उन्हें उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। विधायक रागिनी सिंह ने इस अवसर पर कहा कि राज्य और केंद्र सरकार हमेशा यह प्रयास करती हैं कि बच्चों को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निःशुल्क साइकिल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया है, ताकि छात्रों को स्कूल जाने में कोई कठिनाई न हो।

साथ हीं झारखंड सरकार के समग्र शिक्षा अभियान के तहत, विधायक ने झरिया विधानसभा क्षेत्र के भालगढ़ा उत्क्रमित मध्य विद्यालय परिसर में स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच पोशाक का वितरण भी किया। रागिनी सिंह ने राज्य सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से निरंतर प्रयासरत है।

रैयतों की अनदेखी पर आज से रेल चौड़ीकरण कार्य ठप, आंदोलन की तैयारी

संवाददाता

कतरास। झारखंडी रैयत रेल विस्थापित समिति के केंद्रीय अध्यक्ष एवं यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व-मध्य रेलवे डिवीजन के निचितपुर से गोमो तक डीएफसीसी द्वारा चल रहे रेल चौड़ीकरण कार्य में विस्थापित और प्रभावित रैयतों को पूरी तरह नजरअंदाज किया जा रहा है। दीप नारायण सिंह ने बताया कि इस परियोजना को अंजाम देने वाली कंपनी पिछले तीन महीने से विस्थापितों और प्रभावितों को ठगने का काम कर रही है। रैयतों की मांग है कि उन्हें इस परियोजना में रोजगार दिया जाए, लेकिन कंपनी की ओर से उनकी आवाज को पूरी तरह दबाया जा रहा है।, जिसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अगर कंपनी ने रैयतों की मांगों को नहीं माना, तो ग्रामीण अपने अधिकार छीनने के लिए मजबूर

हो जाएंगे। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि गांव के लोग इस अन्याय के खिलाफ खड़े होकर आंदोलन करेंगे। रैयतों के समर्थन में और कंपनी के अड़ियल रवैये के विरोध में 21 दिसंबर से निचितपुर से गोमो तक रेल चौड़ीकरण का कार्य अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिया जाएगा। दीप नारायण सिंह ने कहा, हम अपने हक के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। कंपनी के इस दमनकारी रवैये को किसी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा। अब यह लड़ाई सिर्फ रोजगार की नहीं, बल्कि अधिकार और सम्मान की है। रैयतों की इस चेतावनी के बाद संबंधित अधिकारियों और कंपनी पर दबाव बढ़ गया है।

धनबाद में भाजपा के दिवंगत नेता शैलेश सिंह चंद्रवंशी को श्रद्धांजलि अर्पित की

संवाददाता

धनबाद। भारतीय जनता पार्टी धनबाद महानगर ओबीसी मोर्चा के तत्वावधान में जे सी मल्लीक रोड स्थित जिला परिषद भवन में भाजपा के दिवंगत नेता स्व. शैलेश सिंह चंद्रवंशी की श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इस श्रद्धांजलि सभा में भाजपा के जिला पदाधिकारी, सभी मंडल अध्यक्ष, धनबाद विधायक राज सिन्हा, झरिया विधायक रागिनी सिंह, महानगर जिला अध्यक्ष श्रवण राय सहित पार्टी कार्यकताओं ने स्व. शैलेश सिंह की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। धनबाद विधायक राज सिन्हा ने कहा कि शैलेश जी के निधन से भाजपा को अपूरणीय क्षति हुई है। वह झरिया सहित पूरे धनबाद में हिंदुत्व के प्रतीक थे और उन्होंने पार्टी में कई महत्वपूर्ण दायित्वों को बखूबी निभाया। उनका स्थान कभी नहीं भरा जा सकेगा। झरिया विधायक रागिनी सिंह ने कहा कि स्व० शैलेश जी हमारे बड़े भाई की तरह थे। वह

विधानसभा चुनाव संचालन एवं प्रबंधन समिति के सहसंयोजक भी रहे। उनकी कमी हमेशा खलेगी। भाजपा महानगर अध्यक्ष श्रवण राय ने श्रद्धांजलि सभा में कहा कि हमने एक समर्पित और प्रतिबद्ध नेता को खो दिया है, जिससे पार्टी को गहरा नुकसान हुआ है।

श्रद्धांजलि सभा में भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य चंद्रशेखर सिंह, रमेश राही, जिला महामंत्री मानस प्रसून, जिला उपाध्यक्ष महेश पासवान, जिला मंत्री पंकज सिन्हा उर्फ कुमार अमित, बीरेंद्र हांसदा, निवर्तमान पार्षद अशोक पाल, ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष पुरुषोत्तम रंजन, दिलीप सिंह, रिंकू सिंह, उमेश यादव, अमरजीत कुमार, मनोज मालाकार, राजकुमार मंडल, जिराखान सिंह, सन्नी रवानी, मनोज सिंह भवानी, पप्पू गुप्ता, अमित मोदक, बबलू फरिदी, विजय ठाकुर, रंजीत कुमार, मनोज सिंह, अजीत पोद्दार सहित सैंकड़ों पार्टी कार्यकताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

बाघमारा अंचल में रैयतों का 10 दिन से धरना जारी, 27 को सीओ के पुतला दहन का ऐलान

संवाददाता

कतरास। जमीन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर बाघमारा अंचल कार्यालय के सामने पिछले 10 दिनों से ग्राम स्वराज अभियान के बैनर तले रैयतों का धरना जारी है। लेकिन अंचल कार्यालय के अधिकारियों की उदासीनता और निष्क्रियता के कारण रैयतों में गहरा आक्रोश है। धरना स्थल पर न तो अंचल अधिकारी ने प्रदर्शनकारियों से संपर्क किया है, न ही उनकी समस्याओं को सुनने या समाधान का कोई प्रयास किया गया है। रैयतों का कहना है कि ऐसा लगता है मानो अंचल कार्यालय में सरकारी तंत्र के बजाय अंग्रेजी हुकूमत चल रही हो। कार्यालय के बाबुओं और अधिकारियों को लोगों की परेशानियों से कोई मतलब नहीं है। ग्राम स्वराज अभियान के संस्थापक जगत महतो ने बताया कि रैयतों की समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो 27 दिसंबर को अंचल अधिकारी का पुतला दहन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि धरना खत्म करने के लिए रैयतों को धमकी देकर जेल भेजने की कोशिश की जा रही है, लेकिन इससे आंदोलन खत्म नहीं होगा। जगत महतो ने स्पष्ट किया कि जब तक रैयतों की समस्याओं का समाधान नहीं होगा, आंदोलन और तेज किया जाएगा। धरने में उपस्थित प्रमुख लोगों में मुसीब अख्तर खान, सुमित्रा देवी, आरटीआई कार्यकर्ता सह रैयत अरविंद सिन्हा, विशाल कुमार महतो, तीता कुमारी उर्फ लक्ष्मी देवी, कैलाश रजवार, कमल महतो, दिलीप कुमार महतो, सलिक मिस्त्री, रूपेश रवानी, राजा राम महतो, शांति देवी, गौरी देवी, जरिए देवी, मालती देवी, लखी देवी, अंजली देवी, सारू देवी, पदावती देवी, रेशमी देवी, उर्मिला देवी समेत कई लोग शामिल हैं।

श्रद्धांजलि हीरापुर में स्व. अजीत राय की तीसरी पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई

अजीत राय ज्ञान विज्ञान आंदोलन से जुड़े हुए थे

संवाददाता

धनबाद। दुर्गा मंदिर, हीरापुर, धनबाद में अजीत राय स्मारक समिति द्वारा प्रख्यात साहित्यकार और लेखक स्वर्गीय अजीत राय की तीसरी पुण्यतिथि पर एक स्मरण सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० डॉ० दीपक कुमार सेन ने की, जबकि संचालन बरनाली गुप्ता द्वारा किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहित्यकार, लेखक, कवि और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। स्मरण सभा की शुरूआत स्व० अजीत राय की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर हुई। समिति के अध्यक्ष प्रो० डॉ० दीपक कुमार

सेन ने स्व० अजीत राय को हिंदी और बांग्ला साहित्य का प्रखर लेखक बताया। उन्होंने कहा कि अजीत राय ने अपने जीवन में 40 पुस्तकों की रचना की, जिनमें झारखंड का इतिहास और धनबाद की इति-कथा विशेष शोधपरक और तथ्यात्मक हैं। मात्र 59 वर्ष की अल्पायु में उनका निधन साहित्य जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ० काशी नाथ चटर्जी ने अजीत राय के निधन को कोयलांचल के गरीब और शोषित वर्गों के लिए बड़ा नुकसान बताया। उन्होंने कहा कि अजीत राय ने अपने उपन्यासों में कोयलांचल के गरीबों और शोषितों की समस्याओं को आवाज दी। उनके उपन्यासों में कॉमरेड ए. के. रॉय पर आधारित रचनाएं भी शामिल हैं। उनके नाम पर पुस्तकालय खोलने का सुझाव दिया गया ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके कार्यों से प्रेरणा ले सकें। स्मरण सभा में प्रो० वरुण सरकार ने उन्हें महान लेखक बताया, जबकि हेमंत जायसवाल ने उन्हें क्रांतिकारी लेखक की संज्ञा दी। कवि कनकन गुप्ता ने अजीत राय को बांग्ला साहित्य का प्रख्यात लेखक बताया। कल्याण कुमार घोषाल ने उनके शोध कार्यों की सराहना की और कहा कि अजीत राय हमेशा नई जानकारी जुटाने और उन्हें कलमबद्ध करने में लगे रहते थे।

बरनाली गुप्ता ने अपने भावुक वक्तव्य में कहा कि अजीत राय उनके लिए साहित्यकार से बढ़कर परिवार के सदस्य जैसे थे। उनके और उनके पति डॉ० प्रियदर्शी गुप्ता के पास अजीत राय की सभी पुस्तकें आज भी संरक्षित हैं। कार्यक्रम में अन्य प्रमुख वक्ताओं ने भी अपने विचार साझा किए। ज्ञान विज्ञान समिति के सचिव भोला नाथ राम ने कहा कि अजीत राय ज्ञान विज्ञान आंदोलन से जुड़े हुए थे और उनके नाम पर पुस्तकालय खोलने की आवश्यकता है। तपन राय ने कहा कि धनबाद हमेशा अजीत राय को याद रखेगा। वहीं, विकास कुमार ठाकुर ने घोषणा की कि चौथी पुण्यतिथि सिंदरी में मनाई जाएगी। इस अवसर पर जयदीप बनर्जी, स्वप्न माजी, शिशिर राय चौधरी, जगबंधु आचार्य समेत कई विशिष्ट व्यक्तियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम को सफल बनाने में मधेश्वर नाथ भगत, बाबला सेन गुप्ता, विश्वजीत गुप्ता, लेखिका सुदेशना राणा, चिरणमय मित्र और अजीत राय के बड़े भाई माणिक राय मित्रा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हैप्पी चाइल्ड नर्सरी में धूमधाम से मनाया गया क्रिसमस डे

संवाददाता

धनबाद। हैप्पी चाइल्ड नर्सरी में क्रिसमस डे का आयोजन बड़े ही हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत में बच्चों को प्रभु ईसा मसीह के जन्म की कहानी सुनाई गई। सभी बच्चे लाल रंग के वस्त्र पहनकर सांता क्लॉज के रूप में सजधज कर आए थे। बच्चों ने क्रिसमस ट्री को सितारों, गेंदों और उपहारों से सजाया। ₹जिंगल बेल, जिंगल बेल₹ गीत पर उन्होंने उत्साहपूर्वक नृत्य किया और एक-दूसरे को ₹मेरी क्रिसमस₹ कहकर शुभकामनाएँ दीं। बच्चों ने सांता क्लॉज के साथ मिलकर नृत्य किया और उनसे चॉकलेट प्राप्त किया। स्कूल की प्रधानाचार्या गीता

सिंह ने बच्चों को क्रिसमस की शुभकामनाएँ दीं और उनके साथ मिलकर केक काटा। उपप्रधानाचार्या ने भी बच्चों को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर प्रधानाचार्या के हाथों सभी बच्चों को कागज से बने सांता उपहार स्वरूप भेंट किए गए। कार्यक्रम में स्कूल के सभी शिक्षक एवं स्टाफ उपस्थित थे, जिन्होंने बच्चों के उत्साह में सहभागी बनकर आयोजन को सफल बनाया।

सुभाषितम्

आशा कभी आपको छोड़कर नहीं जाती है, आप इसे छोड़ते है। - जॉर्ज वीनवर्ग

सच ही है, आंबेडकर जी सम्मान का विषय, फैशन के नहीं

भाजपा के डीएनए में प्रारंभ से ही 'दलित विमर्श' रहा है, क्योंकि इसका मातृ संगठन आरएसएस प्रारंभ से ही 'सामाजिक समरसता' के मार्ग पर चलने वाला संगठन रहा है। आंबेडकर जी, संत पेरियार, महात्मा फुले, नारायण स्वामी जैसे दलित महापुरुष संघ के प्रतिदिन होने प्रातः स्मरण मंत्र में सम्मिलित हैं। संघ के स्वयंसेवक जो भाजपा के कार्यकर्ता बनते हैं वे प्रतिदिन अपने प्रातः स्मरण के मंत्र में आंबेडकर जी का नाम श्रद्धा से लेते हैं। संघ के वरिष्ठ प्रचारक और विश्व के सबसे बड़े मजदूर नेता दत्तोपंत ठेंगड़ी तो बाबासाहेब के चुनाव में आधिकारिक एजेंट की भूमिका में रहे हैं। इस तथ्य से आप उस कालखंड में संघ व आंबेडकर जी की म्यूचुअल अंडरस्टेंडिंग समझ सकते हैं। संघ के मूल चिंतन में दलित चिंता सदैव रही है, इसका परिणाम है कि मुंबई में जिस स्थान पर भाजपा का जन्म हुआ, उस स्थान का नाम संघ के प्रचारकों ने 'समता नगर' रखा था। यह नाम एक बड़ा प्रतीक था भाजपा के दलित चिंतन वाले डीएनए का। बड़े दलित नेता व दलित पेंथर मूवमेंट के नेता दत्ताराव शिंदे यह सब देखकर ही भाजपा के कार्यकर्ता बने थे। संविधान पर चर्चा में देश के गृहमंत्री अमित शाह ने संसद में जो कहा उसके पहले 11 सेकंड के अंश को भ्रामक रूप से देशभर में फैलाया जा रहा है। इससे कांग्रेस, आंबेडकर जी को फैशन का विषय मानने के अपने चिर पुराने चरित्र को ही दोहरा रही है।

गृहमंत्री के इस वक्तव्य को यदि पूरा सुनेंगे तो आंबेडकर जी के अपमान के सारे वहम दूर हो जाते हैं। अमित शाह ने कहा हमे तो आनंद है कि आंबेडकर का नाम लेते हैं। आंबेडकर का नाम आप 100 बार ज्यादा लो, लेकिन साथ-साथ आंबेडकर जी के प्रति आपका भाव क्या है, ये भी बताता हूं। आंबेडकर को देश की पहली कैबिनेट से इस्तीफा क्यों देना पड़ा। आंबेडकर जी ने कई बार कहा, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के प्रति हो रहे व्यवहार से मैं असंतुष्ट हूं। सरकार की विदेश नीति से मैं असहमत हूं और अनुच्छेद 370 से मैं असहमत हूं। शाह ने आगे कहा, आंबेडकर जी को आश्वासन दिया गया, लेकिन उसे पूरा नहीं किया गया, बाद में उन्होंने इस्तीफा दे दिया। उन्होंने कई बार कहा कि वह अनुसूचित जातियों और जनजातियों के साथ होने वाले व्यवहार से असंतुष्ट हैं। आंबेडकर को आश्वासन दिया गया था, जो पूरा नहीं हुआ इसलिए कैबिनेट से इस्तीफा दे दिया था। बार-बार संविधान और फैशन में डॉ. आंबेडकर का नाम रटने वाली कांग्रेस ने तो बाबा साहेब को संविधान सभा के 296 सदस्यों में डॉ. आंबेडकर को प्रवेश तक न मिलने देने के षड्यंत्र रचे थे। बाद में दलित नेता जोगेंद्रनाथ मंडल के सहयोग से वे येन-केन प्रकारेण संविधान सभा में प्रवेश कर पाये थे। डॉ. आंबेडकर बंगाल की जिस खुलना जैसोर सीट से संविधान सभा में पहुँचे थे, वह इकहत्तर प्रतिशत हिंदू बहुल थी। देश विभाजन में इक्यावन प्रतिशत हिंदू बहुल क्षेत्रों को भारत में रहने देना तय हुआ था। केवल बाबासाहेब को संविधान सभा में घुसने से रोकने के लिए कांग्रेस ने बंगाल का यह इकहत्तर प्रतिशत वाला जिला पाकिस्तान को दे दिया ताकि डॉ. आंबेडकर की संविधान सभा की सदस्यता रद्द हो जाए।

आज आंबेडकर जी का नाम फैशन में लेने वाली कांग्रेस ने तो उनका चित्र तक लोकसभा में नहीं लगने दिया था। संसद में, गैरकांग्रेसी सरकार बनने पर ही उनका चित्र लग पाया था। भाजपा ने आंबेडकर जी से जुड़े पांच स्थानों को पंचतीर्थ के रूप में विकसित किया। बाबासाहेब लंदन में जिस घर में रहे, भाजपा सरकार ने उसका भी अधिग्रहण किया व उनके स्मारक के रूप में उसे लंदन तक में विकसित किया। भाजपा ने ही चैत्य भूमि को विकसित किया और प्रधानमंत्री मोदी वहां स्वयं प्रार्थना के लिए गए। भाजपा ने दिल्ली के 26, अलीपुर रोड को भी विकसित किया, जहां बाबासाहेब ने अपना अंतिम समय व्यतीत किया था। कांग्रेस के दुष्प्रचार के विरुद्ध प्रधानमंत्री मोदी जी के इस ट्वीट (एक्स) का एक-एक शब्द एक-एक पुस्तक के बराबर है। देश विभाजन की जनक कांग्रेस के सामने बाबासाहेब प्रारंभ से ही अखंड भारत के पक्ष में थे। यह नेहरू जी को बहुत भयभीत करता था। नेहरू जी, आंबेडकर जी की प्रतिभा को जानते थे अतः वे उन्हें सत्ता की दहलीज तक भी नहीं आने देना चाहते थे। आंबेडकर जी मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए किए जा रहे गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू और जिन्ना के प्रयासों के पुरजोर विरोधी थे। आंबेडकर जी की पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में इसका पूरा विवरण है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि 'मुस्लिम तुष्टिकरण' की नीति के चलते कांग्रेस ने देश का विभाजन कर डाला। बाबासाहेब का यह स्पष्ट मानना था कि चूंकि धर्म आधारित विभाजन हुआ है अतः संपूर्णतः 'तुम उधर-हम इधर' की नीति अपनाई जानी चाहिए। बाबासाहेब ने अपनी पुस्तक 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान' में भारत के धार्मिक आधार पर पूर्ण विभाजन के आशय से पृष्ठ 103 पर लिखा यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए कि पाकिस्तान बनने से हिंदुस्तान सांप्रदायिक समस्या से मुक्त नहीं हो जाएगा।

'कैंसर' से मुक्ति की दिशा में वरदान साबित होगा 'वैक्सीन'

विजय केसरी

रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि कैंसर के खिलाफ उसने अपनी एम आर एन ए नामक वैक्सीन को विकसित कर लिया है। वर्ष के अंत में विश्ववासियों के लिए एक बड़ी राहत देने वाली खबर है। विश्व का ऐसा कोई देश बचा नहीं है, जिस देश में कैंसर के रोगी नहीं है। विश्व के सभी देश कैंसर से लड़ रहे हैं। हर साल कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। कैंसर से पीड़ितों की बढ़ती संख्या से विश्व स्वास्थ्य संगठन भी चिंतित हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी से विश्वासियों को राहत देने के लिए कई तरह की योजनाएं चला रखी है। इसके साथ ही कैंसर से रोक थाम के लिए विश्व वासियों के बीच जन जागरण का भी अभियान भी चला रखा है। इसके बावजूद भी कैंसर रोगियों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती चली जा रही है। यह बीमारी संपूर्ण विश्व के लिए एक चुनौती के समान है। ऐसे में रूस द्वारा कैंसर का वैक्सीन की खोज कर लेना, अपने आप में बड़ी बात है।

रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि सब क्लिनिकल ट्रायल के बाद पता चला है कि वैक्सीन से कैंसर के ट्यूमर को विकसित होने से रोकने में मदद मिलेगी। अगर यह सच साबित हो जाती है, तो कैंसर से मुक्ति की दिशा में एक बड़ी वैज्ञानिक जीत साबित होगी। विज्ञान की जबरदस्त प्रगति के बावजूद कई बड़ी बीमारियों का अब तक इलाज संभव नहीं हो पाया है। कोरोनो जैसी विश्व महामारी ने यह बता दिया कि विज्ञान कितना भी तरक्की कर ले, प्रकृति की बीमारियों का आगे बौना ही रहेगा। एक जमाने में टीवी का लाइलाज महामारी के समान थी। लेकिन वैज्ञानिकों ने अपनी मेहनत और लगन की बदौलत टीवी पर पूर्णता विजय प्राप्त कर लिया। चेचक सहित कई ऐसी बीमारियां महामारी के रूप में दस्तक दी थी, लेकिन वैज्ञानिकों ने उस पर भी सफलता प्राप्त कर लिया। वैज्ञानिक खोजों का आलम यह है कि जब तक एक बीमारी से लड़ने की दवा खोजी जाती है, तब तक कई किस्म की नई बीमारियां दस्तक दे देती हैं। चूंकि बात जब कैंसर की हो रही है, तब कैंसर बीमारी के संबंध में और भी गहराई तक जाने की जरूरत है। विश्व में कैंसर बीमारी पहली बार कब दस्तक दी थी। इस पर भी चर्चा करना लाजमी हो जाता है। एक अध्ययन से यह बात खुलकर सामने आती है कि कैंसर का सबसे पुराना वर्णन मिस्त्र में मिलता है। यह बात लगभग तीन हजार वर्ष ईसा पूर्व का है।

कैंसर तब वैज्ञानिकों की पंहुचा से बाहर थी। लेकिन आज स्थिति बदली है। इसके बावजूद कैंसर इतने परीक्षणों के बाद भी वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती के समान ही है। लोगों को यह जानना चाहिए कि कैंसर आखिर क्या मर्ज है? कैंसर शब्द का इस्तेमाल उन कोशिकाओं के संग्रह के लिए किया जाता है, जो असामान्य रूप से बढ़ती और फैलती है। कैंसर का पहला स्टेज तो सामान्य ही रहता है, लेकिन दूसरे तीसरे चरण में जब यह रोग पहुंच जाता है, तब रोगी को इस बात का पता चल पाता है। तब तक काफी देर हो चुका होता है। ऐसे हालात में रोगियों का उपचार करना चिकित्सकों के लिए भी चुनौती पूर्ण हो जाता है। वहीं दूसरी ओर एक अध्ययन यह बताता है कि दुनिया में कैंसर का प्रथम मरीज चौथी शताब्दी में ईसा पूर्व पाया गया था।

काला सागर के नजदीक बसे हेराकिला शहर के तानाशाह शासक सैटिरस को कैंसर हुआ था। तब ऐसी कोई दवा नहीं थी कि जिससे उसका दर्द कम हो सके। उस शासक की 65 वर्ष की उम्र में ही निधन हो गया था। भारत वर्ष के संदर्भ भी में एक जानकारी यह भी सामने आई है कि ईसा से पांच सौ पूर्व कैंसर के ट्यूमर के विकास को रोकने के लिए आर्सेनिक पेस्ट का इस्तेमाल किया जाता था। इस बात का उल्लेख रामायण महाकाव्य में भी मिलता है। अगर भारत के वैज्ञानिक अपने इस पारंपरिक खोज को आगे बढ़ाते तो शायद भारत कैंसर को जड़ से मिटा देने की औषधि खोज करने वाला पहला देश बन जाता। कैंसर को मात देने के लिए इतनी दवाइयों की खोज हो जाने के बावजूद यह बीमारी अभी तक एक लाइलाज बीमारी समझा जाता है। हालांकि रूस ने कैंसर की वैक्सीन बनाने में सफलता हासिल कर ली है। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को यह ऐलान किया और अब रूस की न्यूज एजेंसी तास ने कहा है कि रूस के लोगों को यह वैक्सीन 2025 से मुफ्त लगाई जाएगी। सर्वविदित है कि हर साल कैंसर दुनिया में लाखों लोगों को मौत के आगोश में ले लेता है। ऐसे में रूस की इस कैंसर वैक्सीन को सदी की सबसे बड़ी खोज माना जा रहा है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस साल के शुरूआत में ही कहा था कि हम वैक्सीन और इसकी दवा बनाने के बहुत करीब आ गए हैं। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर के डायरेक्टर आंद्रेई कप्रीन ने कहा कि कैंसर के खिलाफ रूस ने अपनी एमआरएनए ने वैक्सीन को विकसित कर लिया है। क्लिनिकल ट्रायल के बाद यह पता चला है कि कैंसर की वैक्सीन ट्यूमर को विकसित होने से रोकने में मदद करती है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि जब कैंसर रोगी के शरीर में कोई भी सेल अप्रत्याशित रूप से तेजी से बढ़ने लगता है और ट्यूमर का रूप ले लेता हैं, ऐसे में यह वैक्सीन शरीर में मौजूद इस तरह के ट्यूमर को रोकने में मदद करता है। इंसानों के जेनेटिक कोड के हिस्से में आरएनए होता है, जो हमारे सेल्स के लिए विशिष्ट प्रोटीन का निर्माण का कार्य करता है। वहीं जब हमारे शरीर पर किसी वायरस या बैक्टीरिया का हमला होता है तो एम आर एन ए टेक्नोलॉजी हमारी सेल्स को एक मैसेज भेजती है, जिसमें प्रोटीन बनाने का संदेश दिया जाता है। इस मैसेज का उद्देश्य होता है कि हमारे इम्यून सिस्टम को लड़ने के लिए जो भी जरूरी प्रोटीन होता है, वो उसे मिल सके। यह जरूरी प्रोटीन मिलने से शरीर में एंटीबॉडी बन जाती है। इसमें जल्द वैक्सीन बन जाती है और व्यक्ति की इम्युनिटी मजबूत हो जाती है। लोगों यह जानना चाहिए कि दरअसल कैंसर कोई बीमारी नहीं है। यह शरीर में अलग-अलग परिस्थितियों का परिणाम है, जो शरीर को नुकसान पहुंचाता है। यही कारण है कि कैंसर विशेषज्ञों के मुताबिक, कैंसर की वैक्सीन बनाना एक तरह से असंभव है। हालांकि वैक्सीन कुछ प्रकार के कैंसर में उपयोगी होती हैं और सुरक्षा प्रदान करती हैं। हालांकि कैंसर वैक्सीन कभी भी रोग से पहले नहीं दी जाती है। यह उन लोगों को दी जाती है, जिन्हें कैंसर का ट्यूमर होता है। वैक्सीन इम्यून सिस्टम को यह बताती है कि कैंसर सेल्स किस तरह की हैं। दुनिया में में होने वाली लाखों मौतों के लिए कैंसर एक प्रमुख कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक, वैश्विक स्तर पर 2022 में अनुमानित करीब 2 करोड़ नए कैंसर के मामले सामने आए थे और करीब 97 लाख लोगों को इस बीमारी से अपनी जान गंवानी पड़ी थी । वहीं इसी साल सबसे आम कैंसर फेफड़े का कैंसर था। वहीं भारत में 2022 में कैंसर के 14.13 लाख मामले सामने आए थे। इनमें 7.22 लाख महिलाओं और 6.91 लाख पुरुषों में कैंसर की पहचान की गई। वहीं 9.16 लाख मरीजों की कैंसर से मौत हो गई।

रूस के साथ ही दुनिया के कई देश कैंसर को लेकर काम कर रहे हैं। डॉक्टरों ने इस साल अगस्त में अमेरिका और ब्रिटेन सहित सात देशों में रोगियों पर फेफड़े के कैंसर के टीके का क्लीनिकल ट्रायल शुरू किया है। जर्मनी स्थित बायो एन टेक ने कैंसर की वैक्सीन बीएनटी 116 विकसित की है जो नॉन स्माल सेल लंग कैंसर का इलाज करेगी, जो बीमारी का सबसे आम रूप है। अब देखना है कि रूस ने जो दावा किया है कि 2025 में यह वैक्सीन रूसी को उपलब्ध कराया जाएगा। अगर यह वैक्सीन ठीक ढंग से कम कर गया तो इस सदी के लिए यह वैक्सीन वरदान साबित होगा।

दिल्ली विधानसभा चुनाव में वजूद बचाने की लड़ाई लड़ेगी कांग्रेस

मनोज कुमार मिश्र

करीब दो महीने बाद होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस अपने वजूद बचाने के लिए हर प्रयास करती दिख रही है। आम आदमी पार्टी (आआपा) संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की कांग्रेस के साथ विधानसभा चुनाव में तालमेल न करने के ऐलान के बाद कांग्रेस ने भी अपने दम पर चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी। इतना ही नहीं आआपा के तरह चुनाव की तारीख घोषित हुए बिना 70 में से 21 सीटों पर अपने मजबूत उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। उसमें अरविंद केजरीवाल के सामने नई दिल्ली सीट से पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र और पूर्व सांसद संदीप दीक्षित को उम्मीदवार बनाया गया है। अभी तक यही माना जा रहा है कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में इस बार मुकाबला आआपा और भाजपा के बीच ही मुख्य रूप से होगा। सालों तक दिल्ली पर राज करने वाली कांग्रेस 2013 यानी आआपा के वजूद में आने के बाद से ही लगातार हाशिए पर सिमटती जा रही है। लगातार 15 साल दिल्ली की मुख्यमंत्री रही शीला दीक्षित 2013 का विधानसभा चुनाव न केवल खुद हारी बल्कि कांग्रेस को 24.50 फीसद वोट और केवल आठ सीटें मिली। 2015 के विधानसभा चुनाव में उसे कोई सीट नहीं मिली और उसका वोट औसत घटकर 9.71 फीसद रह गया। इतना ही नहीं उसे 2020 के विधानसभा चुनाव में उसे केवल 4.26 फीसद वोट मिले। अभी 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का आआपा से सीटों का तालमेल था। सात में से तीन सीटें कांग्रेस और चार आआपा लड़ी। चुनाव में सभी सातों सीटों पर लगातार तीसरी बार भाजपा जीती। कांग्रेस को 18.50 फीसद वोट मिले। माना जा रहा है कि कांग्रेस समर्थक वोटों पर दिल्ली में राज कर रही आआपा को लग रहा है कि उसके साथ तालमेल करने से कांग्रेस मजबूत हो जाएगी और देर-सबेरे आआपा को ही नुकसान पहुंचाएगी।

वैसे आआपा के लिए यह तो खतरा बना ही हुआ है कि अगर कांग्रेस मजबूती से चुनाव लड़ी तो आआपा को ही नुकसान पहुंचाएगी और इससे भाजपा को फायदा होगा। अब यह सार्वजनिक हो गया है कि जिस आआपा को कांग्रेस ने भाजपा के मध्यमवर्गीय लोगों का समर्थन लेकर भाजपा को कमजोर करने के लिए तन-मन और धन से सहयोग किया था,उसी पार्टी ने कांग्रेस के समर्थक माने जाने वाले कमजोर वर्गों,अल्पसंख्यक और पूर्वांचल (पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड आदि के मूल निवासी) के प्रवासियों को अपना स्थाई वोटर बना लिया। 2013 के विधानसभा चुनाव में दिल्ली के अल्पसंख्यकों ने गलतफहमी में कांग्रेस को वोट दिया। तब उन्हें लगा कि भाजपा को कांग्रेस हरा रही है। उसके बाद के दोनों चुनावों में इस वर्ग ने आआपा को वोट किया। कांग्रेस इस चुनाव में इस वर्ग को अपने साथ लाने के प्रयास में लगी हुई है। कट्टर धार्मिक छवि वाले उत्तराखंड के मंगलोर के विधायक काजी निजामुद्दीन दिल्ली के प्रभारी,राजस्थान के पूर्व विधायक दानिश अबरार सह प्रभारी और टिकटों की छानबीन समिति में पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन के साथ सहारनपुर के सांसद इमरान मसूद हैं। दिल्ली में मुस्लिम आबादी अब 12 से बढ़कर अब 15 फीसद से ज्यादा हो गई है। 70 में से 17 सीटें ऐसी हैं जहां मुस्लिम मतदाता 20 फीसद से ज्यादा हैं। इनमें सीलमपुर, मटिया महल, बल्लीमरान, ओखला, मुस्तफाबाद, किराड़ी, चांदनी चौक, गांधीनगर, करावल नगर, विकास पुरी, ग्रेटर कैलाश, कस्तूरबा नगर, बाबरपुर, मोतीनगर, मालवीय नगर, सीमापुरी और छत्तरपुर शामिल हैं।

इसी तरह 12 अनूसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर भी कांग्रेस ने पूरी तैयारी की है। दलितों में कांग्रेस का कुछ असर अब भी बचा है। पूर्वांचल के प्रवासी दिल्ली में सालों कांग्रेस का साथ देकर उसे सत्ता दिलाते रहे। दिल्ली के 70 में से 42 सीटों पर पूरबियों (पूवार्चंल के प्रवासी) का वोट 20 फीसदी से ज्यादा है। यह तीनों और दिल्ली के गांव का एक वर्ग अगर कांग्रेस से जुड़ जाए तो उसके पुराने दिन लौट आ जाएंगे। कांग्रेस के पास आज की तारीख में कोई बड़ा पूरबिया नेता न होने से उसकी फिर से इस वर्ग में पैठ होने में कठिनाई हो रही है। जो गलती 2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने किया,वह दोहराना नहीं चाहती। तब उम्मीदवार कमजोर नहीं थे लेकिन जयप्रकाश अग्रवाल के अलावा दोनों पार्टी में नए थे। इसके चलते पार्टी में भारी विद्रोह हो गया था। कांग्रेस के नेता चतर सिंह कहते हैं कि जो पद पाने के लिए दूसरे दलों में गए उनमें काफी को निराशा हाथ लगी है और बाकी की भी वही गति होनी है। अब ऐसा कुछ होनेवाला नहीं है।

2006 के परिसीमन में पूर्वी दिल्ली सीट दो हिस्सों में (पूर्वी दिल्ली और दिल्ली उत्तर पूर्व) बंटी। उससे पहले पूर्वी दिल्ली सीट से दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित सांसद थे जो परिसीमन के बाद 2009 में उसकी एक सीट से सांसद बने और 2014 में पराजित हुए। 2019 में पूर्वी दिल्ली की दूसरी सीट दिल्ली उत्तर पूर्व से उनकी मां और दिल्ली की 15 साल मुख्यमंत्री रही शीला दीक्षित चुनाव लड़ी और पराजित हुई। शीला दीक्षित 2019 में आआपा से समझौते का विरोध किया तो उन्हें प्रदेश अध्यक्ष के साथ जबरन लोकसभा चुनाव लड़वाया गया। सत्ता सुख भोगने की आदत पड़ जाने के चलते एक चुनाव की हार ने कांग्रेस को संकट में ही ला दिया। अपनी चिंता में लगे नेताओं ने पार्टी को हाशिए पर ला दिया। 2013 विधानसभा चुनाव की हार के बाद पार्टी बिखरती गई। 2015 के चुनाव के समय प्रदेश अध्यक्ष थे अरविंद सिंह लवली और मुख्यमंत्री का उम्मीदवार बना दिया गया अजय माकन को। इससे नाराज लवली ने चुनाव लड़ने से मना कर दिया। उसके बाद प्रदेश अध्यक्ष बने अजय माकन 2019 के लोक सभा चुनाव में आआपा से तालमेल की मुहिम चलाई। बताया गया कि कांग्रेस का एक वर्ग सात में से दो सीटों पर भी समझौता करने को तैयार हो गया था। जिस पार्टी ने कांग्रेस को हाशिए पर पहुंचाया उससे समझौता करने का शीला दीक्षित ने भारी विरोध किया। समझौता न होने पर भारी मन से अजय माकन नई दिल्ली सीट से चुनाव लड़कर हारे। वे भी बिना प्रदेश अध्यक्ष तय हुए बीमारी के बहाने प्रदेश अध्यक्ष की कुर्सी छोड़ दी।

2020 के विधानसभा चुनाव के लिए पहले बिहार मूल के नेता कीर्ति आजाद को प्रदेश अध्यक्ष बनाना तय किया गया। वे पहले भाजपा के दिल्ली से विधायक और बिहार से सांसद थे। अचानक वरिष्ठ नेता सुभाष चोपड़ा को अध्यक्ष और आजाद को चुनाव अभियान समिति का अध्यक्ष बना दिया गया। गुटबाजी में आजाद अलग-थलग हो गए,उन्हें दिल्ली कांग्रेस दफ्तर में नियमित बैठने के लिए कमरा तक नहीं दिया गया। बाद में चुनाव नतीजों के बाद उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और तृणमूल कांग्रेस में शामिल होकर लोकसभा के सदस्य बन गए। उस विधानसभा चुनाव के कुछ समय बाद कांग्रेस के पूर्वांचल के सबसे लोकप्रिय चेहरा रहे पूर्व सांसद महाबल मिश्र भी कांग्रेस छोड़कर आआपा में शामिल हो गए। इस बार आआपा ने उन्हें पश्चिमी दिल्ली से लोक सभा उम्मीदवार बनाया। उनके पुत्र विनय मिश्र पहले से ही आआपा में शामिल होकर विधायक और दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष बने हुए हैं। इस बार भी विधानसभा चुनाव में आआपा ने विनय मिश्र को उम्मीदवार बनाया है।

मूर्त और अमूर्त चित्रण- दोनों विधाएं कला के क्षेत्र में विशेष

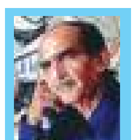

राम प्रताप मिश्र साकेती

मूर्त और अमूर्त चित्रण- दोनों विधाएं कला के क्षेत्र में विशेष महत्व रखते हैं। परंपरागत से आधुनिक कला तक में पारंगत अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार ज्ञानेंद्र कुमार उत्तराखंड की पहचान हैं। वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) के मुख्य कलाधिकारी पद से सेवानिवृत्त ज्ञानेंद्र कुमार चित्रकला, मूर्तिकला और काव्य कला की त्रिवेणी के रूप में उत्तराखंड की कीर्ति विश्व भर में फैला रहे हैं। ज्ञानेंद्र कुमार का जन्म 1 जून 1941 को हुआ था। ज्ञानेंद्र कुमार हिन्दी, अंग्रेजी और बांग्ला तीनों भाषाओं के अच्छे जानकार हैं और तीनों भाषाओं में साहित्य रचना का कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही साथ कला को व्यावसायिक रूप से जन सामान्य में प्रस्तुत करना उनकी विशिष्टता है।

2013 में उत्तराखंड के केदारनाथ में आयी बाढ़ तथा इस विविषिका पर बनी उनकी लंबी कलाकृति वर्षों तक चर्चा का विषय रही है। ज्ञानेंद्र कुमार ने एमए दर्शनशास्त्र करने के बाद विश्व भारतीय विश्वविद्यालय शांति निकेतन से ललितकला का डिप्लोमा प्राप्त कर अपनी कला साधना प्रारंभ की। वन अनुसंधान संस्थान के मुख्य कलाधिकारी रहते हुए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ललित कला ग्रीष्म अकादमी, आस्ट्रिया में अमूर्त चित्रकला संगोष्ठी में भाग लिया। मूर्तिकला एवं चित्रकला की नई संभावनाओं पर अध्ययन हाईवैकम कॉलेज आफ आर्ट टैक्नोलॉजी इंग्लैण्ड से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। विश्वविख्यात वन अनुसंधान संस्थान देहरादून में मुख्य चित्रकला अधिकारी (वर्ष 1965 से 2001 तक) रहते हुए उन्होंने संस्थान को कला के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां देने का काम किया और वैज्ञानिक वानिकी में कला का योगदान जैसे महत्वपूर्ण विषय पर विशेष कार्य किया। उनके इन्हीं महत्वपूर्ण कृत्यों के कारण उन्हें उत्तरांचल कला परिषद उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया जहां उनका लक्ष्य है कि वह उत्तराखण्ड में आधुनिक कला प्रवृत्तियों से कला प्रेमियों को परिचित कराने के साथ साथ प्रदर्शिनियां के माध्यम से लोगों को जागृत कर रहे हैं। ज्ञानेंद्र कुमार के चित्रों और मूर्तियों का मुख्य विषय नारी संसार रहा है। उनके कई चित्रों को विशेष सम्मान मिला है,जिसमें उलझन नामक चित्र में नारी को पीले और कत्थई रंग से घूमती हुई तूलिका से उकेरा गया है जो अपने आप में विशेष है। इसी तरह अमूर्त चित्रण में प्रकाश की ओर कृति में चित्रकार ने प्रकाशीय रंगों का अद्भुत प्रयोग किया है। चित्र दुआ में चित्रकार ने समुद्री नीले रंगों का सार्थक उपयोग किया है। विश्वभारती शांति निकेतन से शिक्षा प्राप्त प्रख्यात चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतकार एवं साहित्यकार, बहुमुखी प्रतिभा के धनी ज्ञानेंद्र कुमार अपनी कला के बल पर जिन विशिष्ट विभूतियों का आशीर्वाद प्राप्त कर चुके हैं उनमें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा, राजीव गांधी, उपराष्ट्रपति डॉ. बीडी जत्ती, डॉ. भगवत शरण उपाध्याय, डॉ. हरिवंशराय बच्चन, रानी एलिजाबेथ तथा जार्ज बुश शामिल हैं।

देश-विदेश में अपनी कला प्रदशर्नियों तथा संगीत संध्या के माध्यम से ज्ञानेंद्र कुमार ने लोगों का दिल जीता है। जिन प्रमुख स्थलों पर ज्ञानेंद्र कुमार की कला प्रदशर्नियां आयोजित की गई हैं उनमें भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद नई दिल्ली का नाम प्रमुख है। यहां निर्भयाकांड के समय ज्ञानेंद्र कुमार की नारी सशक्तिकरण पर आधारित प्रदर्शनी आयोजित की गई और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शनी का सम्मान हुआ। संचार माध्यमों में इसका विशेष प्रसारण हुआ। ज्ञानेंद्र कुमार के कला जीवन पर आधारित साक्षात्कार दूरदर्शन और आकाशवाणी पर प्रसारित होते रहते हैं। उनके प्रभात गीत कई प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में गाए जाते हैं।

ज्ञानेंद्र कुमार ने एक साक्षात्कार के दौरान बताया कि वे चित्रकला, मूर्तिकला और काव्य कला के माध्यम से समाज को प्रेरित करते हैं। जो बात सीधे नहीं कही जा सकती वह चित्रों और कला के माध्यम से आसानी से व्यक्त की जा सकती है। ज्ञानेंद्र कुमार मानते हैं कि समाज में लगातार परिवर्तन हो रहा है। यह विकास और परिवर्तन कई मायनों में अनूठा है लेकिन यह भी सच है कि आज लोगों को कला, साहित्य और मूर्तिकला क्षेत्र के बारे में न तो जानकारी प्राप्त करने का समय है और न ही लोग इस क्षेत्र में अभिरुचि रखते हैं जबकि कला संसार ही जीवन का यथार्थ स्वरूप है। कला के बिना यह संसार आधूरा है। उन्होंने कहा कि भारतीय कला में अभिव्यक्ति की प्रधानता होती है। भारतीय कलाकार वाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आंतरिक भावों के अंकन में अपने मन को अधिक लगाते हैं। शांति निकेतन से निकले छात्र-छात्राओं ने कला के माध्यम से समाज को झंकृत करने का काम किया है। उन्होंने बताया कि समकालीन भारतीय कला का क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय और बहुत प्रयोगात्मक रहा है। इसमें अभी भी देश के लंबे और समृद्ध कलात्मक इतिहास के संदर्भ शामिल हैं।

आज का राशिफल

मेष : निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति दिला देगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। लाभदायक रहेगा।

वृष : अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। आर्थिक हित में मदद मिल जाएगी।

मिथुन : अपने काम को प्राथमिकता से करें। बुरी संगति से बचें। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। शत्रुहानि की आशंका रहेगी।

कर्क : दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे।

सिंह : मान-सम्मान में वृद्धि होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी।

कन्या : संतोषजनक सफलता मिलेगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। मेहमानों का आगमन होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें।

तुला : परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे।

वृश्चिक : अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। पदोन्नति की संभावना है।

धनु : शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। वैचारिक उत्तेजना पर नियत्रंण रखें।

मकर : व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है।

कुंभ : महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। कोष में कमी व व्यय की अधिकता से परेशान होंगे। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। कार्य भार बढ़ेगा।

मीन : प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी।

संक्षिप्त खबरें

बड़कागांव में मोबाइल छिनतई का उद्भेदन

बड़कागांव। बड़कागांव में महिला से मोबाइल छिनने की घटना को पुलिस ने सफलतापूर्वक सुलझा लिया है। यह घटना कुछ दिन पहले घटित हुई थी, जब एक व्यक्ति ने महिला के हाथ से मोबाइल छीनकर मोटरसाइकिल से फरार हो गया था। महिला ने थाना में लिखित आवेदन दिया था, जिसके बाद मामला दर्ज किया गया और जांच शुरू की गई।।एसडीपीओ पवन कुमार के आदेश पर, बड़कागांव थाना और डाडीकला ओपी प्रभारी की टीम ने मामले की गंभीरता को समझते हुए एक विशेष जांच टीम गठित की। इस टीम ने गुप्त सूचना और तकनीकी साक्ष्य की मदद से आरोपी जुबैर अंसारी को सोनबरसा स्थित एनटीपीसी ग्राउंड से गिरफ्तार किया। गिरफ्तारी के दौरान, आरोपी से पीड़िता का छीना हुआ मोबाइल फोन और घटना में प्रयुक्त पल्सर मोटरसाइकिल बरामद की गई। इस पूरे मामले की जानकारी एसडीपीओ पवन कुमार ने प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से दी। उन्होंने बताया कि अपराधी को गिरफ्तार करने में तकनीकी साक्ष्य और गुप्त सूचना का अहम योगदान रहा। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसे विधिवत न्यायिक हिरासत में भेज दिया है।

बृजेश कुमार सिंह का अखिल भारतीय मास्टर ट्रेनर के रूप में चयन

हजारीबाग। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित पंचपदी शिक्षण विषय पर अखिल भारतीय प्रशिक्षण वर्ग, संस्कृति भवन, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में 19 दिसंबर से 24 दिसंबर 2024 तक चलने वाले प्रशिक्षण वर्ग के लिए सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, कुम्हारटोली, हजारीबाग के प्राचार्य सह प्रवासी कार्यकर्ता, विद्या विकास समिति, झारखंड, बृजेश कुमार सिंह का चयन अखिल भारतीय मास्टर ट्रेनर के रूप में हुआ है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरे भारतवर्ष से चयनित 100 मास्टर ट्रेनरों के लिए आयोजित किया जा रहा है, जिसमें झारखंड प्रांत से बृजेश कुमार सिंह और सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, भूली नगर, धनबाद के प्राचार्य उत्तम मुखर्जी का चयन हुआ है। बृजेश कुमार सिंह और उत्तम मुखर्जी दोनों प्राचार्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षण संस्थानों में विभिन्न आयामों पर प्रशिक्षण देंगे। वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सभी पहलुओं को लेकर शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे। यह चयन पूरे विद्यालय परिवार के लिए गर्व की बात है, क्योंकि यह केवल इन दोनों प्राचार्यों की मेहनत और निष्ठा का परिणाम है, बल्कि यह हजारीबाग जिले के शिक्षा क्षेत्र के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विद्यालय परिवार में इस चयन को लेकर खुशी का माहौल है और सभी ने बृजेश कुमार सिंह को इस सम्मानजनक भूमिका के लिए शुभकामनाएं दीं।

बाइक सवार उचक्के ने युवती से मोबाइल की छिनतई की

बड़कागांव। बड़कागांव प्रखंड में थाना से महज आधा किलोमीटर दूर बड़कागांव मुख्य चौक स्थित प्रभात होटल के पास एक युवती से बाइक सवार उचक्के ने मोबाइल छीन लिया और फरार हो गया। पीड़िता रिंकी कुमारी, जो ढेंगा कदमाडीह ग्राम की निवासी हैं, ने बताया कि वह 1 बजकर 55 मिनट के समय प्रभात होटल के पास मोबाइल से बात कर रही थी। इसी दौरान काले रंग की अपाची बाइक पर सवार तीन लोग आए, जिसमें से एक व्यक्ति ने उनके हाथ से मोबाइल छीन लिया और तेज गति से फरार हो गया। जब तक वह शोर मचाती, तब तक बाइक सवार तीनों लोग भाग चुके थे। इस घटना की जानकारी एसडीपीओ पवन कुमार और बड़कागांव थाना प्रभारी को दी गई है। मामले की जांच जारी है और उचक्के को पकड़ने की कोशिश की जा रही है। यह घटना पिछले तीन दिनों में बड़कागांव मुख्य चौक पर महिलाओं से मोबाइल छीनने की दूसरी घटना है।

कुंज बिहारी साव लोकहित अधिकार पार्टी के प्रधान प्रदेश महासचिव बनाए गए

बड़कागांव। लोकहित अधिकार पार्टी के पूर्व प्रदेश मंत्री कुंज बिहारी साव को पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुनील साहू द्वारा प्रदेश महासचिव नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कुंज बिहारी साव ने प्रदेश अध्यक्ष को धन्यवाद देते हुए कहा कि वह पार्टी और समाज के सम्मान में हर संभव कार्य करते रहेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि पार्टी का लक्ष्य निशुल्क उच्च शिक्षा, असाध्य बिमारियों के लिए निशुल्क चिकित्सा, हर क्षेत्र में सामाजिक न्याय, और वोटर पेंशन के लिए आवाज उठाना है। इस अवसर पर बधाई देने वालों में रणधीर साहू, शिवलाल महतो, संतोष राम, उपेंद्र साहू, विशाल प्रसाद, रवि कुमार, दिलीप साहू, नंदकिशोर साहू, अशोक साहू, गणेश प्रसाद गुप्ता, चंद्रिका साहू, रामकुमार राणा, गजाधर प्रजापति, अरविंद कुमार और अन्य लोग शामिल थे।

डॉ. अंबेडकर का अपमान व राहुल गांधी पर फर्जी एफआईआर करने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जोरदार विरोध प्रदर्शन

डॉ. अंबेडकर के विचारों का अपमान नहीं होने देंगे

भाजपा के खिलाफ नारेबाजी की और अमित शाह से इस्तीफे की मांग की

संवाददाता

हजारीबाग। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निदेर्शानुसार और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा भारत रत्न डॉ० भीमराव अंबेडकर के बारे में की गई आपत्तिजनक टिप्पणी के खिलाफ हजारीबाग जिले में कांग्रेस कार्यकताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर राज्यसभा में बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान किए जाने के खिलाफ आवाज उठाई। साथ ही, राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ भाजपा द्वारा की गई फर्जी एफआईआर को लेकर भी गहरी निंदा की गई।।कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन का आयोजन जिला कांग्रेस कार्यालय कृष्ण बल्लभ आश्रम से शुरू होकर आनंद चौक तक किया गया। इस दौरान जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने अपने संबोधन में कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह बार-बार लोकतंत्र के मंदिर संसद में बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान कर रहे हैं, जो देश के करोड़ों दलितों और पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए एक गहरी चोट है। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा अपने भ्रष्टाचार और अडानी के मुद्दे से जनता का ध्यान भटकाने के लिए मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी के खिलाफ फर्जी मुकदमे दर्ज करा रही है। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पूरी एकजुटता से केंद्र सरकार और भाजपा के खिलाफ नारेबाजी की और अमित शाह से इस्तीफे की मांग की। प्रदर्शन में कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस विरोध प्रदर्शन में महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत, प्रदेश महासचिव बिनोद कुशवाहा, प्रदेश सचिव अवधेश कुमार सिंह, बिनोद सिंह, जिला उपाध्यक्ष निसार खान, महिला अध्यक्ष बेबी देवी, युवा अध्यक्ष प्रकाश यादव, साजिद हुसैन, रघु जायसवाल, गोविंद राम, कृष्णा किशोर प्रसाद, और अन्य कई वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने भाग लिया। सभी नेताओं ने सरकार की नीतियों की कड़ी आलोचना की और कहा कि कांग्रेस कभी भी बाबा साहेब अंबेडकर के योगदान और उनके विचारों का अपमान नहीं सहने देगी। उन्होंने यह भी बताया कि भाजपा की मंशा केवल अडानी के मुद्दे से ध्यान भटकाने और विपक्षी नेताओं को निशाना बनाने की है। कांग्रेस पार्टी ने संकल्प लिया कि बाबा साहेब अंबेडकर के विचारों को बढ़ावा देने और उनके सम्मान की रक्षा करने के लिए हर स्तर पर संघर्ष किया जाएगा।

कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने रांची में विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया

भारत रत्न डॉ. अंबेडकर के प्रति अपमानजनक टिप्पणी अस्वीकार्य है : मुन्ना सिंह

संवाददाता

हजारीबाग। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा संसद में भारत रत्न डॉ० भीमराव अंबेडकर पर कथित अपमानजनक टिप्पणी और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर झूठा मुकदमा दर्ज किए जाने के विरोध में झारखंड कांग्रेस ने शुक्रवार को जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इस विरोध प्रदर्शन में कांग्रेस कार्यकताओं और नेताओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और सरकार की नीतियों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के नेतृत्व में यह विरोध मार्च कांग्रेस भवन से अल्बर्ट एक्का चौक तक निकाला गया। मार्च में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह सहित कई प्रमुख नेता और कार्यकर्ता शामिल हुए। प्रदर्शन के दौरान मुन्ना सिंह ने कहा कि अमित शाह द्वारा संसद में की गई टिप्पणी भारत रत्न डॉ० अंबेडकर के प्रति अपमानजनक और अस्वीकार्य है। यह न केवल संविधान निमार्ता का अपमान है, बल्कि पूरे देश के लिए दुखद है। मुन्ना सिंह ने आगे कहा कि राहुल गांधी के खिलाफ झूठे मुकदमे से यह साफ हो गया है कि सरकार विपक्ष को दबाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकार लोकतंत्र और संविधान के खिलाफ काम कर रही है। प्रदर्शनकारियों ने इस दौरान जमकर नारेबाजी की और डॉ० अंबेडकर का सम्मान सुरक्षित रखने और राहुल गांधी पर लगे झूठे मुकदमे को वापस लेने की मांग की।।कांग्रेस के कार्यकताओं ने सरकार से यह स्पष्ट संदेश दिया कि वे देश के संविधान और अंबेडकर के योगदान के खिलाफ किसी भी प्रकार के अपमान को सहन नहीं करेंगे। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस नेताओं ने यह भी चेतावनी दी कि यदि सरकार ने अपनी नीति में बदलाव नहीं किया, तो वे आंदोलन को और अधिक व्यापक बनाएंगे और विरोध की यह लहर और तेज होगी।

हजारीबाग में प्रश्नोत्तरी सह कैरियर परामर्श सत्र का आयोजन

संवाददाता

हजारीबाग। जिला मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय, हजारीबाग में समरिटन वेलफेयर फाउंडेशन के सहयोग से एक विशेष प्रश्नोत्तरी सह कैरियर परामर्श सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य छात्रों को जीवन की चुनौतियों को अवसर में बदलने के महत्व से अवगत कराना था। सत्र में यह समझाया गया कि किस प्रकार हम चुनौतियों को अपने विकास और सफलता के रास्ते के रूप में देख सकते हैं।

कार्यक्रम की शुरूआत प्रभारी प्राचार्य, गणित विभागाध्यक्ष गिरीश कुमार, वीवीएम राष्ट्रीय विजेता अभिषेक मेहता और अश्विन मेहता ने दीप प्रज्वलित करके की। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से स्कूल के कक्षा 9 वीं और 11 वीं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने, उनकी सोच को सकारात्मक दिशा देने और उन्हें जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अभिषेक मेहता, जो कि आईआईटी दिल्ली के छात्र और वीवीएम राष्ट्रीय स्तर के दो बार के विजेता हैं, ने छात्रों से अपील करते हुए कहा कि भविष्य में किसी भी प्रकार की परीक्षा की तैयारी के लिए एक अच्छी रणनीति और योजना का होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने छात्रों को बताया कि कैसे वे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर सकते हैं, खासकर वीवीएम झारखंड और राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित वीवीएम परीक्षा में। वहीं, अश्विन मेहता, जो एनआईटी जमशेदपुर के छात्र हैं, ने ग्यारहवीं के छात्रों को अपनी सफलता की कहानी सुनाते हुए उन्हें आगे की शिक्षा के प्रति प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और सही मार्गदर्शन से सफलता प्राप्त की और छात्रों को यह बताया कि कड़ी मेहनत के साथ सही दिशा में प्रयास किए जाएं तो कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। कार्यक्रम के दौरान छात्रों को यह भी बताया गया कि असफलता कोई अंत नहीं होती, बल्कि यह सफलता की ओर एक कदम और बढ़ने का मौका है। अशोक कुमार, जो कि इस कार्यक्रम के आयोजक और राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता हैं, ने छात्रों से अपील की कि वे चुनौतियों का सामना करने में न डरें, बल्कि उन्हें अवसर के रूप में देखें। उन्होंने छात्रों को नवोन्मेषी और सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के समापन पर गिरीश कुमार ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस तरह के आयोजनों से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है और उन्हें अपनी कड़ी मेहनत के रास्ते पर आगे बढ़ने का नया उत्साह मिलता है।

हजारीबाग नगर निगम के सफाई कर्मियों की बैठक संपन्न

संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग नगर निगम के सफाई कर्मचारियों की बैठक हरी नगर हॉल परिसर में आयोजित की गई। बैठक में सफाई कर्मचारियों ने झारखंड सरकार द्वारा सफाई कर्मचारियों को परमानेंट नौकरी न देने और कई वर्षों से चल रहे आश्वासनों पर नाराजगी व्यक्त की। कर्मचारियों का कहना है कि सरकार ने उन्हें हमेशा बहाने और अस्वीकृत आश्वासन दिए हैं, जिसके कारण वे पिछले 20 वर्षों से अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

साफ-सफाई कार्य में लगे ये कर्मचारी अब रिटायरमेंट की ओर बढ़ रहे हैं और उनमें से कुछ कर्मचारियों की तो काम के दौरान ही मृत्यु हो रही है। बावजूद इसके, झारखंड सरकार और नगर निगम के द्वारा इनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया जा रहा है। इस साल भी सफाई कर्मचारियों ने हड़ताल की, लेकिन इसका कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। बैठक में निर्णय लिया गया कि अब सफाई कर्मचारी उच्च न्यायालय का रुख करेंगे। वे जनहित याचिका दायर करके अपनी बात सरकार तक पहुंचाएंगे।

सफाई कर्मचारियों का कहना है कि उन्होंने पिछले दो दशकों में झारखंड लोकल बॉडीज इंप्लाइज फेडरेशन के नेता अशोक सिंह के नेतृत्व में कई बार सरकार को जागरूक किया, लेकिन कोई हल नहीं निकला। अब उनकी आखिरी उम्मीद न्यायालय पर टिकी है। बैठक में यूनियन अध्यक्ष विवेक कुमार वाल्मीकि की अध्यक्षता में यह फैसला लिया गया कि सफाई कर्मचारी अब स्वयं 1500 की राशि देकर उच्च न्यायालय में याचिका दायर करेंगे। सफाई कर्मचारियों का यह आंदोलन उनके अधिकारों के लिए एक निर्णायक कदम साबित हो सकता है। बैठक में प्रमुख रूप से ज्योति चंद्र, दीपक कुमार, रविकांत सिंह, सुबोध पासवान, ननकू राम, महेंद्र राणा, जीवन तिवारी यादव, मनोज यादव सहित कई अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

आनंदा महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का समापन

संवाददाता

हजारीबाग। आनंदा महाविद्यालय हजारीबाग में चल रहे दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न हुआ। इस सेमिनार में मुख्य अतिथि व वक्ता के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय असम के डॉ० निरंजन महापात्र राजनीति विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष तथा रिसोर्स पर्सन के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम के प्रो० डॉ० अजय त्रिपाठी , विभागाध्यक्ष भौतिकी विभाग तथा डॉ० दिनेश शाहू केंद्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम हिंदी विभाग के ऑनलाइन के माध्यम से जुड़े। राष्ट्रीय सेमिनार 2024, के संदर्भ में वक्ताओं ने कहा कि मानव क्षमताओं को बढान्ने के लिए समग्र और बहुविषयक शिक्षा को एकीकृत करना था।

इस संदर्भ में अतिथियों ने अपना महत्वपूर्ण विचार हम सबों के सामने रखा। मुख्य वक्ताओं ने भी बड़े हीं विस्तार पूर्वक इस विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। वक्ताओं की प्रस्तुति के बाद श्रोताओं के साथ इस विषय पर प्रशन उत्तर कार्यक्रम चला। इस सेमिनार में अतिथियों के अलावा महाविद्यालय के सचिव डॉ० सजल मुखर्जी ,प्राचार्य डॉ० नीलमणि मुखर्जी , प्रो० इंचार्ज सुभाष कुमार के अलावा महाविद्यालय के सभी शिक्षकों के साथ आयोजन समिति के सभी सदस्य मौजूद रहे। ऑनलाइन सेशन के बाद समापन समारोह का आयोजन किया गया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए महाविद्याल प्राचार्य ने कहा कि सेमिनार के दो दिनों के निष्कर्ष पर एक समीक्षात्मक बैठक की जाएगी और कैसे इसको समाज के विकास के लिए उपयोगी हो उस पर कदम उठाया जाएगा। वहीं सचिव ने कहा कि सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन सपना सच होने जैसा है। समापन सत्र में दो दिनों के विचारों का निचोड़ व रिपोर्ट डॉ० पंकज कुमार पंकज ने प्रस्तुत किया। महाविद्यालय प्राचार्य ने सहयोगात्मक संस्था आई०सी० एस०आर०डी० के सदस्यों को सम्मानित किया। प्रतिभागियों के बीच प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। धन्यवाद ज्ञापन सेमिनार के आयोजन सचिव डॉ० ए पी वर्मा ने किया। अंत में राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

चौकीदार पदों पर कदाचार मुक्त परीक्षा संपन्न

हजारीबाग। हजारीबाग जिले में 20 दिसम्बर को चौकीदार पदों के लिए लिखित परीक्षा सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस परीक्षा में कुल 194 पदों के लिए अभ्यर्थियों ने भाग लिया। परीक्षा शांतिपूर्ण, निष्पक्ष और कदाचार मुक्त तरीके से संपन्न हुई। परीक्षा का आयोजन हजारीबाग जिले के 10 केंद्रों पर किया गया, जहां प्रशासन ने सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित की। उपायुक्त श्रीमती नैंसी सहाय के निर्देशन में, सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए थे और केंद्रों पर पानी, शौचालय, विद्युत व्यवस्था जैसी बुनियादी सुविधाओं की पूरी व्यवस्था की गई थी। इसके साथ ही, परीक्षा के दौरान सभी केंद्रों पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल और दंडाधिकारी तैनात थे। परीक्षा के दौरान प्रवेश से पहले सभी उम्मीदवारों की पूरी तलाशी ली गई और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया। लिखित परीक्षा में कुल 50 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे गए थे, जिनमें 35 सामान्य ज्ञान से संबंधित और 15 स्थानीय भाषा से जुड़े थे। इन प्रश्नों के माध्यम से जिला से संबंधित सामान्य ज्ञान और स्थानीय भाषा की जानकारी की परीक्षा ली गई।

कला हजारीबाग की शान, कलाकारों की पहचान

बैंजो वादन में ईश्वरी प्रसाद की बनी है पहचान

प्रदीप पाठक

हजारीबाग। हजारीबाग जिले के गोरियाकरमा निवासी ईश्वरी प्रसाद की पहचान बैंजो वादन एवं हारमोनियम वादन से है। बड़े-बड़े मंचों पर अपनी इस कला का वे लोहा मनवा चुके हैं। वर्तमान में सिंदूर सियारी टांड़ हजारीबाग में रहकर बार एसोसिएशन हजारीबाग में वकालत कर रहे हैं।

बचपन से हीं संगीत के प्रति उनका गहरा लगाव रहा। बैंजो के, चौपारण विगहा बाजार के भीम सिंह विद्यार्थी कव्वाल इनके गुरु हैं। गोरिया करमा के लुकन प्रजापति एवं कारू चौधरी से भी यह कला सीखने का अवसर प्राप्त हुआ और प्रेरणा मिली। 1980 से हीं वे अपने गांव पंचायत में कार्यक्रम करने लगे।

गांव में इनके द्वारा किए गए कार्यक्रम को बहुत लोकप्रियता मिली। नाटक लेखन एवं मंचन भी इस कला में चार चांद लगाते रहें। इनके द्वारा बहुत सारे नाटक लिखे गए। जिसमें से स्वरचित क्षणभर की सुहागन नाटक में इन्होंने बहू का मुख्य रोल किया एवं राखी की लाज नाटक में मुनीम का यादगार रोल में दिखें। वहीं भोजपुरी दुग्गल का कार्यक्रम गायक विनय बिहारी बिहार, गायक संजय पासवान धनबाद, गायक भगवान जी बोकारो, गायक ओम प्रकाश सिंह व अरविंद सिंह रामगढ़, गायक अशोक व्यास, दयानंद यादव व महादेव चौधरी जैसे बड़े-बड़े कलाकारों के साथ इन्होंने अपने बेंजो से इनके कार्यक्रमों में संगत की। बिहार एवं झारखंड के लगभग सभी जिलों में इन्होंने अपनी कला बैंजो वादन से खूब नाम कमाया एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आज भी इस कला वादन से अपना और हजारीबाग जिले का नाम रौशन कर रहे हैं।

आवासित बालिका 5 वर्ष बाद अपने परिवार से मिली

संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग जिले में जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, शिप्रा सिंहा के निर्देशन में एक महत्वपूर्ण सफलता हासिल की गई है। शक्ति सदन में आवासित एक बालिका को उसके परिवार से मिलवाने का कार्य किया गया। यह बालिका लगभग 5 वर्ष पूर्व अपने माता-पिता और परिवार से बिछड़ गई थी। 16 अक्टूबर को उसे पुलिस ने शक्ति सदन में भेजा था, लेकिन उत्पीड़न के कारण वह अपने परिवार के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं दे पा रही थी। शुरू में बालिका ने अपना घर चतरा जिले के नवाटाँड के पास बताया था, लेकिन वहां से कोई ठोस जानकारी नहीं मिली।।इसके बाद, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी के आदेश पर एक विशेष टीम का गठन किया गया, जिसमें विधि-सह-परिवीक्षा पदाधिकारी राकेश कुमार सिंह और शक्ति सदन की प्रभारी प्रतिमा कुमारी शामिल थे। इसके अतिरिक्त बाल कल्याण समिति के सदस्य मुन्ना पाण्डेय और महिला पर्यवेक्षिका अनुसूइया कुमारी को भी इस टीम में शामिल किया गया। टीम ने बालिका को लेकर लंबी खोजबीन की और अंततः हजारीबाग जिले के कदमा क्षेत्र में नवाटाँड गाँव में उसके परिवार को ढूंढ निकाला। बालिका को अपने घर वापस देखकर न केवल वह खुश हुई, बल्कि उसके परिवार वाले भी बहुत प्रसन्न हुए। परिवार ने बताया कि उसकी गुमशुदगी के बाद लगभग दो वर्षों तक खोजबीन की गई थी, लेकिन जब कोई जानकारी नहीं मिली, तो पुलिस को सूचित किया गया और फिर खोजबीन बंद कर दी गई। बालिका के पिता का निधन हो चुका है, और उसकी मां शारीरिक रूप से लाचार है।

हिन्दी दैनिक
झारखंड दर्शन
बोकारो, शनिवार 21 दिसंबर 2024

E-mail : jharkhanddarshan405@gmail.com ● Website: jharkhand-darshan.com

संक्षिप्त खबरें

मुख्यमंत्री नीतीश की तबीयत अचानक बिगड़ी, सभी कार्यक्रम रद्द

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तबीयत अचानक बिगड़ गई। इसके चलते उनके शुक्रवार को पूर्व में निर्धारित सभी कार्यक्रम रद्द कर दिए गए हैं। नीतीश पटना में चल रहे ग्लोबल निवेशक सम्मेलन-बिहार बिजनेस कनेक्ट 2024 में भी हिस्सा नहीं लेंगे। हालांकि, सीएम के स्वास्थ्य के बारे में अभी तक ज्यादा जानकारी नहीं मिल पाई है। बताया जा रहा है कि सर्दी के मौसम की वजह से वे बीमार हुए हैं। डॉक्टर ने उन्हें आराम की सलाह दी है। मुख्यमंत्री का शुक्रवार को अपने गृह जिले नालंदा के दौरे का कार्यक्रम था। वे राजगीर में मगध सम्राट जरासंध की प्रतिमा का अनावरण करने वाले थे। प्रशासन ने इसकी तैयारी भी पूरी कर ली थी। लेकिन, ऐन वक्त पर सीएम का दौरा रद्द हो गया। इसके अलावा मुख्यमंत्री पटना में आयोजित बिहार बिजनेस कनेक्ट के समापन समारोह में शामिल होने वाले थे। शुक्रवार को निवेशक सम्मेलन में उनका संबोधन था। इसके अलावा विभिन्न कंपनियों के पदाधिकारियों से उनकी मीटिंग भी तय थी। हालांकि, तबीयत खराब होने की वजह से अब ये बैठक रद्द हो गई है। मुख्यमंत्री सचिवालय की ओर से फिलहाल सीएम नीतीश के स्वास्थ्य के बारे में कोई विस्तृत सूचना नहीं दी गई है। माना जा रहा है कि मौसम में बदलाव की वजह से मुख्यमंत्री को सर्दी, जुखाम और बुखार हो गया है।

अंतर्राष्ट्रीय मानवता एकता जुटता दिवस पर मानव श्रृंखला

अररिया । फारबिसगंज के तिरसकुंड पंचायत के प्राथमिक विद्यालय आदिवासी टोला मधुरा में स्कूली बच्चों ने अंतर्राष्ट्रीय मानवता एकता जुटता दिवस पर मानव श्रृंखला बनाकर एकजुटता की अपील की।कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधान शिक्षक कुमार राजीव रंजन ने अंतर्राष्ट्रीय मानवता एकता जुटता दिवस की प्रासंगिकता पर बच्चों से बातचीत की और दुनिया भर में एकजुटता और सहनशीलता को बढ़ावा देने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने बताया कि यह दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा मनाया जाता है।लोगों की विविधता के बीच एकता,शांति और भाईचारा बनाए रखने के उद्देश्य से यह दिवस प्रतिवर्ष 20 दिसंबर को मनाया जाता है। मौके पर स्कूल के अन्य शिक्षक और ग्रामीण मौजूद थे।

अनुमंडल पदाधिकारी और अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने नगर में किया श्रमदान

अररिया। फारबिसगंज में अनुमंडल पदाधिकारी शैलजा पांडेय और अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी मुकेश कुमार साहा ने अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ आज शुक्रवार को सड़क पर उतर कर श्रमदान किया और झाड़ू पकड़कर लगाने के साथ सड़क पर फैले कूड़ा कचड़ा को अपने हाथों से उठाकर आमजनों को सफाई को लेकर संदेश दिया। शहर के सुभाष चौक से नगर परिषद के कार्यालय तक अनुमंडल प्रशासन और कर्मचारियों ने सफाई अभियान चलाया। वही, प्रशासन ने लोगों से अपने घरों के साथ आसपास साफ सफाई की अपील की.एसडीएम और एसडीपीओ के अलावा इस अभियान में नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी सूयानंद सिंह,अनुमंडल कृषि पदाधिकारी सुधांशु कुमार,प्रखंड विकास पदाधिकारी संजय कुमार,स्वच्छता अधिकारी वंदना प्रेयसी,नगर परिषद के प्रभारी प्रधान सहायक कामख्या नारायण सिंह उर्फ कुंदन सिंह के साथ बड़ी संख्या में कर्मचारी मौजूद थे।

टॉपसीआ में कई झोपड़ियों में लगी आग

कोलकाता। टॉपसीआ में कई झोपड़ियां जल गईं। घटनास्थल पर दमकल की 8 गाड़ियां। सूचना पाकर प्रगति मैदान पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। पहले से ही पूरा इलाका काले धुएं से ढका हुआ था। कई झोपड़ियां नष्ट हो गई हैं। स्थानीय सूत्रों के अनुसार आज यानि शुक्रवार की दोपहर करीब 12 बजे ईएम बाइपास से सटे डी एन दे रोड पर झोपड़ियों में आग लग गयी। यह इलाका बहुत घना है। नतीजतन, दमकलकर्मियों को आग बुझाने में मशक्कत करनी पड़ी। पुलिस और दमकलकर्मी पहले से ही जांच कर रहे हैं कि क्या झोपड़ी में कोई फंसा है। अग्निशमन मंत्री सुजीत बसु भी मौके पर पहुंचे। वह आग बुझाने के काम की निगरानी कर रहे। झोपड़ी में ज्वलनशील पदार्थ भरा होने के कारण आग तेजी से फैल गयी। नतीजा यह हुआ कि झोपड़ी से सटे मल्टीस्टोरी को भी खाली कराने का काम शुरू किया गया हालांकि अभी तक यह पता नहीं चल पाया है कि आग कैसे लगी। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। नुकसान की सीमा अभी तक ज्ञात नहीं है। पूरे मामले की जांच की जा रही है।

प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में अनोखा बदलाव, बंसल एवं राइस ग्रुप की एक नई पहल

कोलकाता। प्रसिद्ध बंसल क्लासेज प्राइवेट लिमिटेड और राइस ग्रुप राइस इंस्टीट्यूट ऑफ कॉम्पिटिटिव एग्जामिनेशन प्राइवेट लिमिटेड ने पश्चिम बंगाल की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में विकास लाने के लिए एक संयुक्त उद्यम लिया है। राइस-बंसल इंस्टीट्यूट के नाम से जानी जाने वाली इस रणनीतिक साझेदारी का उद्देश्य आईआईटी-जेईई और एनईईटी जैसी परीक्षाओं के लिए शीर्ष स्तर की कोचिंग प्रदान करना है।यह सहयोग दोनों संस्थानों की विशेषज्ञता को एक साथ लाता है, जिसमें बंसल क्लासेज के पास भारत की सबसे कठिन परीक्षाओं के लिए छात्रों को तैयार करने का 43 वर्षों से अधिक का अनुभव है और फ्क्ळए ग्रुप के पास 1985से छात्रों को प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं के लिए सशक्त बनाने का अनुभव है।राइस-बंसल संस्थान उन्नत शिक्षण तकनीक, व्यक्तिगत परामर्श और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच प्रदान करने का वादा करता है।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने एसएसबी के 61वें स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया

एसएसबी की सतर्कता ने लोगों में सुरक्षा की भावना को मजबूत किया: अमित शाह

एजेंसी

कोलकाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के रानीडांगा में सिलीगुड़ी फ्रंटियर मुख्यालय में आयोजित सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के 61वें स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया। इस मौके पर उन्होंने एसएसबी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यह बल नेपाल और भूटान के साथ भारत की सीमाओं को सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि एसएसबी ने न

केवल सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि बिहार, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में नक्सलवाद के खतरों को भी कमजोर किया है। उन्होंने कहा कि भारत की 2450 किलोमीटर की अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा सशस्त्र सीमा बल द्वारा की जाती है। इन जवानों के होने से कोई चिंता नहीं है। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि सिलीगुड़ी गलियारे और पूर्वोत्तर क्षेत्र में एसएसबी की सतर्कता ने लोगों में सुरक्षा की भावना को मजबूत किया है। उन्होंने बल के नक्सलवाद विरोधी अभियानों को सराहा और कहा कि एसएसबी ने अन्य सुरक्षा एजेंसियों और स्थानीय पुलिस के साथ मिलकर छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद को कमजोर करने में बड़ी सफलता हासिल की है। उन्होंने बल के जवानों से कहा कि सीमा क्षेत्रों में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर अंकुश लगाकर ऐसे मामलों को कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सौंपा जाए। उन्होंने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का दिन बताया और कहा कि एसएसबी ने अवैध गतिविधियों को रोकने और राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने का अनुकरणीय काम किया है।"स्कृति और विरासत को जोड़ने की पहल-शाह ने एसएसबी की उस पहल की भी प्रशंसा की, जिसमें सीमावर्ती गांवों की संस्कृति, भाषा और विरासत को देश की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि यह प्रयास सीमावर्ती समुदायों और राष्ट्र के बीच गहरे संबंधों को मजबूत करता है। उल्लेखनीय है कि लोकसभा चुनाव के बाद गृह मंत्री का यह दूसरा बंगाल दौरा है, जिसमें उन्होंने एसएसबी के कार्यों की सराहना कर उनकी जिम्मेदारी और योगदान को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा। अमित शाह गुरुवार रात को ही सिलीगुड़ी पहुंचे हैं।

कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय से दो छात्रा लापता

भागलपुर। जिले के सुल्तानगंज के सूर्यमल स्कूल के कैंपस में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय से देर रात दो छात्रा गायब हो गई है। इसकी जानकारी शुक्रवार सुबह विद्यालय में हो रहे प्रार्थना के दौरान मिली। उस समय दो छात्रा नहीं देखी गई। विद्यालय के प्रभारी वार्डेन विनीता कुमारी ने घटना की सूचना सुलतानगंज थाना पुलिस को दी। जानकारी मिलते ही जिला शिक्षा पदाधिकारी और सुलतानगंज थाना अध्यक्ष मौके पर पहुंचे। सुलतानगंज थाना पुलिस ने प्रभारी वार्डन से लंबी पूछताछ किया है। उल्लेखनीय है कि विद्यालय कैंपस से लगे सीसीटीवी कैमरा कई महीनों से खराब पड़ा हुआ है।

प्राथमिकता सूची के कार्यों के निष्पादन को लेकर जिलाधिकारी ने की बैठक

एजेंसी

भागलपुर। भागलपुर के जिलाधिकारी डॉ नवल किशोर चौधरी की अध्यक्षता में जिला एवं अनुमंडल स्तरीय पदाधिकारीयों की प्राथमिकता सूची वाले लंबित कार्यों के निष्पादन की स्थिति को लेकर समीक्षा बैठक जिलाधिकारी के कार्यालय कक्ष में आयोजित की गई। बैठक में सामान्य प्रशाखा, राजस्व शाखा, ग्रामीण विकास, विधि प्रशाखा, आपूर्ति प्रशाखा, सामाजिक सुरक्षा, निर्वाचन बाल विकास परियोजना, समाज कल्याण, भू अर्जन, परिवहन, योजना, अल्पसंख्यक कल्याण, जिला नजारत, उद्योग, आपदा प्रबंधन से संबंधित प्राथमिकता सूची वाले कार्यों के लंबित कार्यों की समीक्षा बारी- बारी से की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने भागलपुर जिले को कुपोषण मुक्त करने को लेकर चलाए गए अभियान मिशन केयर 45 की उपलब्धियां से संबंधित प्रतिवेदन को राज्य स्तर पर भेजने के लिए जिला प्रोग्राम पदाधिकारी को निर्देशित किया। सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के लाभ प्राप्त करने को लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए सभी मुखिया को पत्र प्रेषित करने के लिए निर्देशित किया गया। जिलाधिकारी ने सभी विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारी को प्रत्येक दिन अपनी प्राथमिकता सूची वाले कार्यों को संवेदनशीलता से शीघ्र निष्पादन करने के लिए निर्देशित किया।

चिकित्सा में लापरवाही से शिशु की मौत का आरोप

कोलकाता। चिकित्सकीय लापरवाही से शिशु की मौत का आरोप एक नर्सिंग होम के खिलाफ लगा है। सिलीगुड़ी के विधान रोड पर कंचनजंगा स्टेडियम के पास उक्त नर्सिंग होम में शुक्रवार को हुई एक बच्चे मौत को लेकर तनाव फैल गया। शिशु के परिजनों ने बताया कि शिशु की तबीयत खराब होने पर नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया था। शिशु को जन्म से देखरेख करने वाले चिकित्सक के अंदर गुरुवार को भर्ती कराया गया। आज सुबह शिशु की मौत हो गई। घटना के बाद शिशु के परिजनों ने नर्सिंग होम प्रशासन और चिकित्सक के खिलाफ रोष जताते हुए हंगामा शुरू कर दिया जिससे नर्सिंग होम परिसर में तनाव फेल गया। खबर पाकर सिलीगुड़ी थाने की पुलिस नर्सिंग होम पहुंची। परिजनों की शिकायत के आधार पर पुलिस ने घटना की जांच शुरू कर दी है। हालांकि नर्सिंग होम अधिकारियों या चिकित्सक की ओर से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली है। परिवार की ओर से बताया गया कि गुरुवार दोपहर से शिशु की तबीयत खराब हो गई थी। जिसके बाद उसे पहले चिकित्सक के पास ले जाया गया। इसके बाद उनकी सलाह पर नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया।

ऑल इंडिया आर्य महासभा के कोलकाता कार्यालय का उद्घाटन

संवाददाता

कोलकाता। ऑल इंडिया आर्य महासभा ने कोलकाता में अपना कार्यालय शुरू कर दिया है। यह कार्यालय मानिकतला ब्लड बैंक के सामने स्थित है और इसका उद्घाटन संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिभास चंद्र अधिकारी ने किया। उन्होंने कहा कि देश या राज्य में राजनीतिक दलों की कमी नहीं है, लेकिन लोगों के लिए सच्चे दिल से काम करने की कोशिश या पहल का अभाव है। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान वाम मोर्चा को देखा, जिसने जीवन बदलने के सपने दिखाए। उससे पहले उन्होंने कांग्रेस शासन का अनुभव किया। वर्तमान में, उन्होंने देखा कि कैसे योग्य लोगों को दरकिनार कर अयोग्य लोगों को नौकरियां दी जा रही हैं और राज्य पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि समाज के विभिन्न वर्गों के लोग काम की तलाश में अन्य राज्यों में पलायन कर रहे हैं।

हालांकि यह स्थिति पश्चिम बंगाल में न हो, लेकिन पड़ोसी राज्यों में भाजपा और अन्य राजनीतिक दलों के नेताओं की गतिविधियों से लोग परिचित हैं। ये दल घुमा-फिराकर लोगों को अच्छे जीवन के झूठे वादे देते हैं, लेकिन उनमें वास्तविक विकास और सही काम करने की सोच नहीं है।

इसी कारण से, ये दल धर्म और न्याय के रास्ते से भटक गए हैं और अब असफल हो रहे हैं। ऑल इंडिया आर्य महासभा, उम्र में भले ही अन्य दलों की तुलना में नई हो, लेकिन अपने विचारों में बहुत आगे है। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, संगठन ने ठाकुर अनुकूलचंद्र की शिक्षाओं पर आधारित एक सर्वजनहितकारी राजनीतिक दल का निर्माण किया। 2023 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने भाग लिया और जनता से सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त की। पश्चिम बंगाल राज्य समिति के कार्यकारी अध्यक्ष और कोलकाता हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश दीपक साहा राय ने कहा कि बड़े पैमाने पर लोगों के लिए काम करना केवल एक राजनीतिक मंच के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने विवेकशील और शुभचिंतक लोगों से इस पहल में जुड़ने का आह्वान किया।

उद्घाटन समारोह में अखिल भारतीय संत समिति के प्रांताध्यक्ष महामंडलेश्वर स्वामी परमात्मानंदजी महाराज भी उपस्थित थे।

56 किलो गांजा के साथ पांच तस्कर गिरफ्तार

एजेंसी

रोहतास। बिहार में रोहतास जिले के डेहरी नगर थाना के पाली रोड से छत्तीसगढ़ से आ रही बस से 56 .225 किलो गांजा के साथ पांच तस्करों को गिरफ्तार किया गया। एसपी रौशन कुमार ने आज पत्रकार वार्ता में कहा कि गुरुवार रात सूचना मिली कि कुख्यात गांजा तस्कर बिंदयाचल सिंह ने अनुष कुमार और एक बालक को ओडिसा गांजा लाने को भेजे। जो रॉयल बस सीजी 06जी वाई 8154 से गांजा लेकर सासाराम आ रहा है।सूचना को गंभीरता से लिया गया। डेहरी नगर थानाध्यक्ष के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम में डेहरी बीडीओ और डीआईयू को सम्मिलित किया गया। उन्होंने बताया कि टीम ने पाली रोड में औरंगाबाद से आने वाले वाहनों को जांच शुरू किया।बस के आने पर उसकी सघन जांच शुरू किया गया।बस से अनुष कुमार और एक विधि विरुद्ध बालक को निरुद्ध किया गया।उनकी निशानदेही पर साड़ी के बंडल में छिपाकर लाया जा रहा भारी मात्रा

में गांजा बरामद किया गया। गिरफ्तार अनुष ने बताया कि विंध्याचल सिंह को सासाराम में गांजा देना था।उसने बताया कि ओडिसा से छत्तीसगढ़ के रास्ते वे गांजा लेकर सासाराम जा रहे थे। बस के कर्मियों ने बताया कि रायपुर से साड़ी का गट्ठर सासाराम के अनुष कुमार ले जा रहे थे। उन्होंने बताया कि शिवसागर थाना के तोडनी गांव निवासी अनुष की निशानदेही पर सासाराम बस स्टैंड पर स्कार्पियो यूपी 65 एसी 6438 लेकर गांजा की डिलेवरी लेने आए कारगहर थाना के डुमरा गांव निवासी कुख्यात गांजा तस्कर विंध्याचल सिंह और उसके दो सहयोगियों उसी थाना के तेंदुआ निवासी धन्नु कुमार और सासाराम मुफस्सिल थाना के खंडा निवासी सोनू कुमार को गिरफ्तार कर लिया गया। एसपी ने बताया कि विंध्याचल सिंह पर एनडीपीएस एक्ट के तहत जिले में चार कांड डेहरी नगर थाना में दो , दरिहट और सासाराम में पूर्व से कांड दर्ज है।जबकि सोनू चौधरी पर मद्य निषेध एक्ट के तहत सासाराम मुफस्सिल थाना में कांड दर्ज है।उन्होंने बताया कि गांजा तस्करी के फॉरवर्ड लिंकेज का पता करने के लिए पुलिस टीम जाएगी छत्तीसगढ़ और ओडिसा जाएगी।

आरजी कर कांड के विरोध में डॉक्टरों के धरने को हाई कोर्ट ने दी मंजूरी

एजेंसी

कोलकाता । आरजी कर मेडिकल कॉलेज की महिला चिकित्सक के साथ बलात्कार और हत्या के मामले में न्याय की मांग को लेकर डॉक्टरों का एक समूह शुक्रवार शाम से धर्मतला के मेट्रो चैनल पर धरने पर बैठेगा। कलकत्ता हाई कोर्ट ने डॉक्टरों के इस धरने को मंजूरी दे दी है, हालांकि इसके लिए कुछ शर्तें भी लगाई गई हैं। राज्य सरकार ने डॉक्टरों के धरने पर आपत्ति जताई थी और इसे रोकने की कोशिश की थी लेकिन हाई कोर्ट के न्यायाधीश तीर्थंकर घोष ने राज्य की आपत्ति खारिज करते हुए डॉक्टरों को मेट्रो चैनल पर धरना देने की अनुमति दी। अदालत ने निर्देश दिया है कि धरना स्थल डोरिना क्रॉसिंग से कम से कम 50 फीट की दूरी पर होना चाहिए। साथ ही, वहां एक समय में 200-250 से अधिक लोग इकट्ठा नहीं हो सकते। यह धरना 26 दिसंबर तक चलेगा। कोर्ट ने यह भी कहा है कि धरना स्थल पर 40 फीट लंबा और 23 फीट चौड़ा मंच बनाया जाएगा। धरने के दौरान कोई भी अपमानजनक बयान नहीं दिया जा सकेगा और पुलिस के साथ समन्वय बनाकर कानून-व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। आरजी कर कॉलेज की महिला चिकित्सक के बलात्कार और हत्या के मामले में 90 दिनों के बाद भी सीबीआई चार्जशीट दाखिल नहीं कर पाई है। इस देरी के कारण मामले में गिरफ्तार आरजी कर के पूर्व प्राचार्य संदीप घोष और टाला थाने के पूर्व ओसी अभिजीत मंडल को अदालत ने जमानत दे दी है।

इस फैसले के विरोध में डॉक्टरों ने धरने का आयोजन किया है। राज्य सरकार ने शुरू में धरने का विरोध करते हुए सुझाव दिया था कि यह कार्यक्रम धर्मतला की जगह वाई चैनल पर आयोजित हो, जहां एक हजार लोगों तक की भीड़ को नियंत्रित किया जा सकता है। लेकिन कोर्ट ने इस सुझाव को खारिज करते हुए कहा कि डॉक्टर पहले से मानसिक रूप से तैयार हैं और उन्हें अपनी योजना बदलने की आवश्यकता नहीं है। अदालत ने राज्य को निर्देश दिया है कि 24 और 25 दिसंबर को बाहरी लोगों को धरना स्थल पर प्रवेश की अनुमति न दी जाए। साथ ही, धरना स्थल के चारों ओर सात फीट ऊंचे गार्ड रेल लगाए जाएं ताकि भीड़ को नियंत्रित किया जा सके।

मुसीबत में 'हेल्पिंग हैंड' बनकर लोगों की 'मुस्कान' लौटा रही पुलिस

एजेंसी

पटना। राज्य में कानून-व्यवस्था में तेजी से सुधार हो रहा है। पुलिस महानिदेशक विनय कुमार रात-रात भर शहर व पुलिस थानों में घूमकर विधि व्यवस्था के बारे में जानकारी ले रहे हैं, तो पुलिस की टीम मुस्तैदी से काम कर रही है। बिहार पुलिस की डायल 112 कम से कम समय में पहुंचकर लोगों की अपनी सेवा दे रही है। दिसम्बर माह की ही कुछ घटनाओं पर नजर डालें, तो सूचना मिलने के 5 से 10 मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुंच कर पुलिस आमलोगों को अपनी सेवा मुहैया करा रही है। कुछ महीने पहले बिहार पुलिस मुख्यालय से जारी आंकड़ों के अनुसार, कॉल हैंडिलिंग में बिहार पुलिस की डायल 112 की टीम

दूसरे नंबर पर थी, तो रेस्पॉन्स टाइम में राज्य का स्थान 7 वां था। उस वक्त रेस्पॉन्स टाइम औसतन 20 मिनट था, जो लगातार बेहतर होता जा रहा है। मुख्यालय के अनुसार, पिछले दो वर्षों में डायल 112 ने 20 लाख से अधिक लोगों को सेवा प्रदान की है। इसके तहत लगभग 5,000 लोग प्रतिदिन सेवा प्राप्त करते हैं।

5 मिनट में ही घटनास्थल पहुंचकर घायलों को पहुंचाया जा रहा अस्पताल

वैशाली जिले के देसरी थानांतर्गत 2 मालवाहक वाहन की टक्कर की सूचना मिली थी, जिसके बाद डायल 112 की टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 5 मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुंचकर घायल चालक को अस्पताल पहुंचा दिया।

मारपीट व वाहन चोरी के मामले में भी अब मिनटों में हो रही कार्रवाई

ऐसा नहीं है कि डायल 112 की टीम सिर्फ सड़क दुर्घटनाओं में ही घटनास्थल पर पहुंच कर लोगों को सहायता पहुंचा रही है। मारपीट व वाहन चोरी जैसे मामले में भी जानकारी मिलने के तुरंत बाद कार्रवाई हो रही है। पूर्वी चम्पारण (मोतिहारी) जिले के पिपरा थानांतर्गत दो पक्षों के बीच मारपीट की सूचना मिलते ही डायल 112 टीम ने त्वरित कार्रवाई की। पुलिस टीम ने 7 मिनट के अंदर घटनास्थल पर पहुंचकर मामले को शांत कराया और मारपीट में घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाया गया। इसी तरह की एक और घटना पूर्वी चम्पारण के ही चिरैया थानांतर्गत हुई, जिसमें घायल महिला को फौरन अस्पताल पहुंचाया गया। शेखपुरा जिले के शेखपुरा थानांतर्गत ई-रिक्शा चोरी होने की सूचना पर डायल 112 की टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए ई-रिक्शा को बरामद कर उसके मालिक को सौंपा गया। 18 दिसंबर को दोपहर में बिहार पुलिस के पटना स्थित कमांड एंड कंट्रोल सेंटर में एक महिला द्वारा हत्या का प्रयास किए जाने में संबंधी एक कॉल प्राप्त हुई। मुजफ्फरपुर जिले में स्थित मोतीपुर-ईआरवी2 ने बहुत ही कम समय यानी लगभग 10 मिनट में घटनास्थल पर पहुंचकर त्वरित कार्रवाई की। घटनास्थल पर पहुंचने के बाद ईआरवी पुलिसकर्मियों ने घायल महिला को निकटतम अस्पताल में भर्ती कराया और एसएचओ को इस घटना के बारे में सूचित किया। पुलिस की इस त्वरित कार्रवाई को लेकर स्थानीय लोगों में बहुत खुशी थी। ऐसी ही एक घटना अरवल जिले में हुई, यहां करपी थानांतर्गत आत्महत्या का प्रयास कर रही एक महिला को इलाज हेतु तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया, जिससे उसकी जान बच पाई।

गुमशुदगी मामले में त्वरित कार्रवाई कर लोगों की 'मुस्कान' लौटा रही पुलिस

बिहार पुलिस की डायल 112 की टीम अब सिर्फ शहर में ही सक्रिय नहीं है, राज्य के हर जिले में पुलिस की टीम चौबीसों घंटे काम कर रही है। बच्चों की गुमशुदगी मामले में भी पुलिस तुरंत कार्रवाई कर रही है।

दिव्यांगों के लिए लगाया गया निःशुल्क जांच शिविर

एजेंसी

भागलपुर। लायंस क्लब ऑफ भागलपुर फेमिना द्वारा तीन दिवसीय निःशुल्क विशाल कृत्रिम अंग उपकरण मापी एवं वितरण शिविर का शुभारंभ शुक्रवार को मोती मातृ सेवा सदन नयाबाजार भागलपुर में हुआ। शिविर का उद्घाटन ईस्टर्न बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज के अध्यक्ष श्रवण कुमार बाजोरिया, निर्वतमान जिलापाल लायन बिनोद अग्रवाल, कैबिनेट सचिव लायन डॉ पंकज टण्डन, पूर्व उप महापौर प्रीति शेखर एवं जीएमटी कॉर्डिनेटर लायन गोपाल खेतडीवाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। भारत विकास एवं संजय आनंद विकलांग अस्पताल के सौजन्य से ये कृत्रिम उपकरण शिविर का निःशुल्क आयोजन किया गया है। इस शिविर में सभी लाभार्थी को विश्व स्तरीय उत्कृष्ट हाथ एवं पैर के उपकरण प्रदान किए जाने के लिए नापी का कार्य किया जा रहा है। अब तक सुल्तानगंज, मधेपुरा, सहरसा, कटिहार, बिहपुर, जगदीशपुर, मुंगेर, बांका, बौंसी, बाराहाट, घोघा, कहलगांव के 75से अधिक दिव्यांग बंधुओ ने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया है। इस शिविर को पहली बार भागलपुर की धरती पर कि महिला संगठन लायन्स क्लब ऑफ भागलपुर फेमिना ने लगाया है। शिविर में आए दिव्यांग बंधुओ और सहयोगी को भोजन एवं कम्बल भी दिया गया।

हिन्दी दैनिक
झारखंड दर्शन
बोकारो, शनिवार 21 दिसंबर 2024

E-mail : jharkhanddarshan405@gmail.com ● Website: jharkhand-darshan.com

जफरनामा दशम गुरु की अप्रतिम शौर्य गाथा : डिम्पल

संवाददाता

मेदिनीनगर। धिक्कार पत्र जिसके पढ़ते ही औरंगजेब की सदमे से मौत हो गई थी। गुरु गोविन्द सिंह जी के बलिदान पर विशेष - गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा अपने समकालीन बर्बर, कट्टर व मतान्ध मुगल शासक औरंगजेब को लिखे गये ऐतिहासिक पत्र 'जफरनामा' को भारतीय इतिहास में आध्यात्मिकता, कूटनीति तथा शौर्य का अद्भुत संगम माना जाता है। जफरनामा : दशम गुरु की अप्रतिम शौर्य गाथा।

हमारी भारतभूमि सदा से सनातन जीवन संस्कृति की पोषक रही है और हर सच्चा भारतीय शौर्य व संस्कार से आपूरित अपने गौरवशाली अतीत पर सदैव गौरवान्वित होता है। इतिहास गवाह है कि जब-जब विदेशी आक्रान्ता लुटेरों व षड्यंत्रकारियों ने छल-बल से हमारी धर्म-संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित प्रयास किये, तब-तब भारतमाता के महान रणबांकुरे वीरों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया।

विश्व की बलिदानी परम्परा में अद्वितीय स्थान रखने वाले सिख समाज के दशम गुरु श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी की गणना इसी श्रेणी के महामानवों में होती है। नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार सन् 1666 में पौष माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि (इस वर्ष 29 दिसम्बर) को नौवें सिख गुरु तेग बहादुर की पत्नी गूजरी देवी ने बिहार प्रांत के पटना शहर में जिस तेजस्वी बालक को जन्म दिया था, उसकी अप्रतिम शौर्य गाथा भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा अपने समकालीन बर्बर, कट्टर व मतान्ध मुगल शासक औरंगजेब को लिखे गये ऐतिहासिक पत्र 'जफरनामा' को भारतीय इतिहास में आध्यात्मिकता, कूटनीति तथा शौर्य का अद्भुत संगम माना जाता है।मूल रूप से फारसी भाषा में लिखा गया 'जफरनामा' गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा मुगल आक्रान्ता औरंगजेब को लिखा गया वह 'विजय पत्र' है जो उन्होंने अपने चारों पुत्रों और सैकड़ों साथियों के बलिदान के उपरांत आनन्दपुर छोड़ने के बाद सन 1706 में तब लिखा था' जब औरंगजेब दक्षिण भारत के अहमदनगर किले में अपने जीवन की अंतिम सांसें गिन रहा था।फारसी में लिखे इस पत्र में कुल 111 काव्यमय पदों में खालसा पंथ की स्थापना, आनंदपुर साहिब छोड़ना, फतेहगढ़ की घटना, 40 सिखों के साथ अपने चार पुत्रों के बलिदान तथा चमकौर के संघर्ष के साथ मराठों तथा

राजपूतों द्वारा औरंगजेब की करारी हार का वृत्तांत ऐसी शौर्यपूर्ण तथा रोमांचकारी शैली में मिलता है ,जो किसी भी राष्ट्रभक्त की भुजाओं में नवजीवन का संचार करने के लिए पर्याप्त है।

भारतीय इतिहासकारों के मुताबिक 'जफरनामा' में श्री गुरु गोविन्द सिंह द्वारा औरंगजेब के अत्याचारों के विरुद्ध मुखर विरोध अभिव्यक्त होता है। इस पत्र में दशम गुरु पूरी निर्भीकता से औरंगजेब की झूठी कुरान की कसमों एवं उसके कुशासन की चर्चा के साथ उसकी क्रूर व बर्बर सोच की भर्त्सना करते हैं। 'जफरनामा' के लेखक का स्वर एक विजेता का स्वर है, जिसमें अत्यन्त ओजस्वी भाषा में गुरु गोविन्द सिंह औरंगजेब को ललकार कर अपने स्वाभिमान तथा वीरभाव का परिचय देते हुए लिखते हैं, औरंगजेब! तू धर्म से कोसों दूर है जो अपने भाइयों व बाप की हत्या करके अल्लाह की इबादत करने का 'ढोंग' रचता है। तूने कुरान की कसम खाकर कहा था कि मैं सुलह रखूंगा, लड़ाई नहीं करूंगा, मंदिरों को नष्ट नहीं करूंगा, हिंदुओं के धर्म की रक्षा और धार्मिक भावनाओं का आदर करूंगा, पर तू अव्वल दर्जे का 'धूर्त', 'फरेबी' और 'मक्कार' है। तूने अपने बाप की मिट्टी को अपने भाइयों के खून से गूंथा और उस खून से सनी मिट्टी से अपने राज्य की नींव रख अपना आलीशान महल तैयार किया है। तेरे खुदा की कसम तेरे सिर पर भार है। इसके लिए तेरा खुदा भी तुझे कभी माफ नहीं करेगा।

औरंगजेब को चुनौती देते हुए दशम गुरु लिखते हैं कि क्या हुआ (परवाह नहीं) अगर जो मेरे चार बच्चे (अजीत सिंह, जुझार सिंह, फतेह सिंह, जोरावर सिंह) देश और सनातन की मिट्टी के लिए कुर्बान हो गये, पर कुंडली मारे तुझे डंसने वाला नाग अभी जिन्दा बाकी है। अगर तू कमजोरों पर जुल्म करना और उन्हें सताना बंद नहीं करेगा तो मुझे कसम है उस परवरदिगार की कि तुझे आरे से चिरवा दूंगा। मैं युद्ध के मैदान में अकेला आऊंगा और मैं तेरे पांव के नीचे ऐसी आग रखूंगा कि पूरे मुल्क में उसे बुझाने वाला तथा तुझे पानी पिलाने वाला एक भी न मिलेगा। मैंने पंजाब में तेरी पराजय की पूरी व्यवस्था कर ली है। फिर इसके आगे गुरु गोविंद सिंह औरंगजेब को इतिहास से सीख लेने की सलाह देते हुए लिखते हैं कि तू अपनी मन की आंखों से देख कर विचार कर कि भारत को जीतने का सपना देखने वाले सिकंदर और शेरशाह, तैमूर, बाबर, हुमायूं और अकबर आज कहां हैं? फिर आगे इस संदेश पत्र में गुरु गोविंद सिंह औरंगजेब को चेतावनी देते हुए कहते हैं। औरंगजेब! तू मेरी यह बात ध्यान से सुन कि जिस ईश्वर ने तुझे इस मुल्क की बादशाहत दी है, उसी ने मुझे धर्म और मेरे देश की रक्षा का जिम्मा सौंपकर वह शक्ति दी है कि मैं धर्म और सत्य का परचम बुलंद करूं।

संक्षिप्त खबरें

लातेहार में बस और ट्रक के बीच भीषण टक्कर, 10 से अधिक यात्री घायल

लातेहार। सदर थाना क्षेत्र के उदयपुरा के पास एनएच 75 पर शुक्रवार को एक भीषण सड़क दुर्घटना हुई। यहां यात्री बस और ट्रक के बीच सीधी टक्कर हो गई, जिसमें 10 से अधिक यात्री गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। सभी का इलाज लातेहार सदर अस्पताल में चल रहा है। घायलों में चार यात्रियों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। दरअसल, लातेहार से हजारीबाग की ओर एक यात्री बस जा रही थी। इसी दौरान उदयपुरा से थोड़ी दूर पहले यात्री बस और कोयला से लदे ट्रक के बीच सीधी टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों गाड़ियों के परखच्चे उड़ गए। बस में सवार यात्रियों के अलावा बस और ट्रक के चालक गंभीर रूप से घायल हो गए। इधर, घटना की जानकारी मिलने के बाद लातेहार अंचल अधिकारी अरविंद देवाशीष टोप्पो और पुलिस इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार सिन्हा दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे, जहां सभी घायल यात्रियों को तत्काल इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया। घायलों में लातेहार निवासी नीतू कुमारी, ललिता मिंज, देवलाल राम, फैजान अंसारी, रीता देवी, निक्कू कुमार, बालूमाथ निवासी रितु कुमारी, परी कुमारी, लोहरदगा निवासी मेराज मियां आदि शामिल हैं। इधर, दो गाड़ियों की टक्कर होने के बाद रांची लातेहार मार्ग पर जाम की स्थिति बन गई। बाद में पुलिस और प्रशासन के द्वारा जेसीबी की मदद से दुर्घटनाग्रस्त बस को सड़क से हटाया गया और यातायात को सुचारू किया गया। इस संबंध में अंचल अधिकारी अरविंद देवाशीष टोप्पो ने बताया कि सभी घायल यात्रियों को अस्पताल पहुंचाया गया है। फिलहाल सभी का इलाज चल रहा है, साथ ही घटना के बाद यातायात को सुचारू कर दिया गया है।

केंद्रीय मंत्री के दौरे को लेकर उप विकास आयुक्त एवं नगर आयुक्त ने पदाधिकारियों संग बैठक की

मेदिनीनगर। नीति आयोग के तहत आकांक्षी जिला कार्यक्रम अंतर्गत हुए कार्यों का जायजा लेने को लेकर केंद्रीय मंत्री डॉ एल.मुरुगन का दौरा जिले में 23, 24 और 25 दिसंबर को संभावित है। केंद्रीय मंत्री के संभावित दौरे को लेकर गुरुवार को उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद व मेदिनीनगर नगर आयुक्त जावेद हुसैन ने आकांक्षी जिला कार्यक्रम अंतर्गत स्वास्थ्य, शिक्षा, समेत सभी 5 क्षेत्रों के विभिन्न सुचकांको की जानकारी ली। समाहरणालय के सभागार में आयोजित बैठक में इस आकांक्षी जिला कार्यक्रम से जुड़े पदाधिकारियों को उनके विभाग से जुड़े कार्यों का अद्यतन रिपोर्ट तैयार करने की बात कही गयी। बैठक में माननीय मंत्री को कहां-कहां विजिट करवाया जायेगा इसपर भी चर्चा किया गया। इसके अलावे हरिहरगंज ब्लॉक का अलग से प्रतिवेदन तैयार करने पर बल दिया गया। बैठक में शिक्षा,स्वास्थ्य और पोषण, कृषि और जल संसाधन, वित्तिय समावेशन और कौशल विकास, व बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर के सभी बिंदुओ पर पीपीटी पर चर्चा किया गया। इस अवसर पर निदेशक डीआरडीए, जिला योजना पदाधिकारी, पेयजल एवं बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जेएसएलपीएस के डीपीएम समेत अन्य मौजूद रहे।

किसान भारत के आन बान और शान है : शैलू

मेदिनीनगर। चैनपुर में धान अधिप्राप्ति केंद्र का उद्घाटन किया गया।पूर्व जिला परिसर सदस्य शैलेंद्र कुमार शैलू, रंजन दुबे और गायत्री गुप्ता ने संयुक्त रूप से पिता काटकर धान अधिप्राप्ति केंद्र का उद्घाटन किया। मौके पर उपस्थित शैलेंद्र कुमार शैलू ने कहा की किसान भारत के आन बान शान है देश की पहचान है।भारत को मजबूत बनाने में किसानों का बहुत बड़ा योगदान है इसलिए किसानों का सदैव सम्मान होना चाहिए। किसानों के साथ किसी भी कीमत पर अन्याय शोषण बर्दाश्त नही किया जाएगा। कोई भी अधिकारी पदाधिकारी किसानों के साथ मित्रवत व्यवहार करें।वही मौके पर उपस्थित रंजन दुबे ने कहा कि किसान देश के भविष्य हैं क्योंकि वे देश को भोजन मुहैया कराते हैं और भारतीय संस्कृति को सहेजकर रखते हैं। किसानों के बिना भोजन नहीं हो सकता. वे दिन-रात गर्मी, बारिश, ठंड की परवाह किए बिना अपने खेतों में मेहनत करके फसलें उगाते हैं। किसान भारतीय समाज की रीढ़ हैं। वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता को भी सहेजकर रखते हैं। इसलिए किसानों को हमें सम्मान देने की जरूरत है।मौके पर पूर्व प्रमुख विजय गुप्ता, ध्रुव साव, सागर दास, पैक्स अध्यक्ष अजय गुप्ता,प्रखंड अध्यक्ष शैलेंद्र चौरसिया,बबलू चौरसिया ,विकास सिंह,राजू सोनी,दिनेश प्रधान,निरंजन कमलापुरी आदि उपस्थित थे।

मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर में निशुल्क सेवा बंद होने से गरीब मरीज परेशान

- सीटी स्कैन, अल्ट्रासाउंड एक्सरे नहीं होने के कारण उन्हें काफी परेशानी हो रही है
- हेल्थ मैप सेंटर का एक करोड़ 30 लाख रुपया बकाया है

संवाददाता

मेदिनीनगर। मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल के मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर में निःशुल्क सेवा करीब दो महीने से बंद है। निःशुल्क सेवा बंद होने के कारण गरीब मरीजों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वही अस्पताल में ज्यादातर गरीब मरीज ही अपना इलाज करवाने के लिए पहुंचते हैं। परंतु गरीब मरीजों का यहां पर सीटी स्कैन, अल्ट्रासाउंड एक्सरे नहीं होने के कारण उन्हें काफी परेशानी हो रही है।

बताते चले की मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर का झारखंड सरकार के पास करीब एक करोड़ 33 लाख रुपया बकाया है। जिसके कारण राशन कार्ड से मिलने वाली निःशुल्क सभी सेवा बंद कर दी गई है। जिसके वजह से मरीजों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। अभी हाल में हेल्थ मैप सेंटर में सरकारी दर पर लोगों का अल्ट्रासाउंड, सीटी स्कैन और एक्स-रे किया जा रहा है। वही राशन कार्ड से सेवा बंद होने के बाद से मरीजों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

इस संबंध में मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर के मैनेजर शैलेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि झारखंड सरकार के पास मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर का एक करोड़ 30 लाख रुपया बकाया है।

दो महीना बीत जाने के बाद भी बकाया पैसा कंपनी को नहीं मिल पाया है। जिसके कारण रांची मणिपाल हेल्थ मैप सेंटर हेडक्वार्टर से आदेश मिला है की जब तक सरकार के द्वारा बकाया पैसा नहीं मिलता है तब तक अस्पताल में निःशुल्क सभी सुविधा बंद रहेगी। उन्होंने बताया कि पैसा बकाया को लेकर पलामू सिविल सर्जन अनिल कुमार सिंह को भी पत्र लिखा गया है। ताकि बकाया पैसा मिल जाने पर फिर से गरीब मरीजो को निःशुल्क सुविधा उपलब्ध हो सके।

प्रभारी समाल अहमद ने चलाया वाहन चेकिंग अभियान

मेदिनीनगर। पलामू एसपी के निर्देश पर ट्रैफिक प्रभारी समाल अहमद के नेतृत्व में शुक्रवार को छह मुहान चौक के पास सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। वाहन चेकिंग अभियान के दौरान एक ई रिक्शा जो गाड़ी चलाने के क्रम में शराब का सेवन किया था। उसका चालान किया गया। वही वाहन चेकिंग अभियान के दौरान बिना हेलमेट और लाइसेंस के दर्जनों वाहन को पड़कर सुरक्षा के दृष्टिकोण से शहर थाना में रखा गया। इसके बाद ट्रैफिक प्रभारी समाल अहमद के द्वारा सभी वाहनों को फाइन के लिए परिवहन विभाग को भेज दिया गया। वही ट्रैफिक प्रभारी के द्वारा सभी वाहनों का टोटल चालान 26600 रुपया किया गया। वही मौके पर उपस्थित ट्रैफिक प्रभारी समाल अहमद ने बताया कि पलामू एसपी के निर्देश पर प्रतिदिन वाहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसके बाद भी लोग बिना हेलमेट और बिना कागजात के वाहन चला रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन सड़क दुर्घटना में बिना हेलमेट के लोग सड़क दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं।

90 प्रतिशत विकलांग चुन्नू सिंह को अविलंब मिले विकलांग पेंशन: रूचिर

संवाददाता

मेदिनीनगर। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जिला सचिव श्री रूचिर कुमार तिवारी ने पलामू उपायुक्त को पत्र लिखकर मौजा- गणके पंचायत सुआ कौड़िया के निवासी चुन्नू कुमार सिंह के विकलांग पेंशन बनाने को लेकर पलामू उपयुक्त को पत्र लिखा उन्होंने पलामू उपायुक्त को पत्र लिखकर यह आग्रह किया कि चुन्नू कुमार सिंह 90% आंख से विकलांग है उसे कुछ दिखाई नहीं देता लेकिन आज 3 वर्ष से विकलांग पेंशन बंद पड़ा है लेकिन पदाधिकारी के उदासीन रवैया के चलते यह दर-दर की ठोकरे खा रहा चुन्नू कुमार सिंह एक स्वालंबी युवा है जो 90% आंख से विकलांग होने के बाद भी बिजनेस करना चाहता है और सरकार से लोन उपलब्ध कराने की गुहार लगा रहा है पलामू उपायुक्त महोदय अभिलंब जुझारू युवा को कल्याण विभाग के तहत सरकार से मिलने वाला 10 लाख का लोन निर्गत करवाएं ताकि यह विकलांग व्यक्ति अपना स्वरोजगार कर सके पूछने पर इस दिव्यांग ने कहा कि मैं आंटा ,बेसन एवं अन्य खदान के सामग्री का मिल खोलना चाहता हूं और स्वरोजगार करना चाहता हूं जिसके लिए मुझे पूंजी की आवश्यकता है जिला सचिव श्री तिवारी ने आम आवाम डाल्टनगंज भंडारिया विधानसभा वासियों के नौजवानों युवक युवतियों एवं अन्य लोगों से अपील भी किया कि आज के समय में युवा एवं अन्य लोग हताश निराश होकर बेरोजगारी के चलते या कोई जन समस्याओं के चलते अपना प्राण त्याग दे रहे हैं।

सड़क दुर्घटना में मां और बेटा घायल

मेदिनीनगर। हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के दाता नगर के पास सड़क दुर्घटना में हुसैनाबाद निवासी सुहेल अंसारी की पत्नी रिफत सबा और उनका पुत्र साकिब अंसारी गंभीर रूप से घायल हो गए। इस घटना के बारे में परिजनों ने बताया कि सुहेल अंसारी की पत्नी रिफत सबा और उनका पुत्र शाकिब अंसारी अपने रिश्तेदार के साथ शुक्रवार को बाइक पर सवार होकर किसी काम से हुसैनाबाद बाजार गए थे। बाजार से घर लौट के क्रम में हुसैनाबाद दाता नगर में एक स्कार्पियो ने उन्हें पीछे से धक्का मार दिया। जिसमें बाइक से गिरकर दोनों मा और बेटा गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बाद स्थानीय लोगों के द्वारा दोनों मा बेटा को इलाज के लिए हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल लाया गया। जहां इलाज के बाद भी चिकित्सको ने दोनों मा बेटा की गंभीर स्थिति को देखते हुए दोनों को बेहतर इलाज के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। जहां इलाज के बाद भी दोनों मां बेटा की स्थिति गंभीर बनी हुई है। वहीं घटना की जानकारी मिलने पर घायल के अन्य परिजन अस्पताल पहुंचकर अपने देखरेख में दोनों घायलों का इलाज करवा रहे हैं।

अतिक्रमण में मंदिर का दीवार टूटने के विरोध में व्यवसायियों ने दुकान को रखा बंद

संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू जिला मुख्यालय मेदिनीनगर में नगर निगम की कार्यशैली के खिलाफ व्यवसायियों ने शुक्रवार को अपनी दुकानें बंद रखी। गुरुवार को अतिक्रमण हटाने के दौरान मंदिर की दीवार गिराए जाने से व्यवसायी और आम लोग आक्रोशित हैं। इधर, सहायक नगर आयुक्त ने कहा कि जिसने भी दीवार गिराया है, उसे निलंबित कर दिया गया है। सैकड़ों की संख्या में लोगों का हुजूम नगर निगम तेरी मनमानी नहीं चलेगी जैसे नारे लगाते हुए मुख्य मार्ग से नगर निगम कार्यालय पहुंचा और अपना विरोध प्रकट किया। पूर्व डिप्टी मेयर मंगल सिंह के नेतृत्व में व्यवसायियों ने प्रदर्शन किया। स्थानीय विधायक आलोक चौरसिया भी इसमें शामिल हुए।जुलूस की शक्ल में नगर निगम कार्यालय पहुंचे लोगों की वार्ता सहायक नगर आयुक्त से हुई। लोगों ने पूछा कि मंदिर की दीवार किसके आदेश पर तोड़ी गई। सहायक नगर आयुक्त ने कहा कि जिसने भी दीवार गिराया है, उसे निलंबित कर दिया गया है। लोगों ने नगर निगम के कर्मी सिटी मैनेजर पर बिना किसी जानकारी के दीवार गिराने का आरोप लगाया और इन्हें बर्खास्त करने की मांग की। व्यवसायियों की मांग है कि दोषी कर्मियों पर कारवाई किया जाए।

रोड के दोनों तरफ व्हाईट लाइनिंग होने तक निगम का अभियान स्थगित रहे। रोड किनारे दुकान लगा रहे छोटे दुकानदार को हटाने के पहले वैकल्पिक व्यवस्था दी जाए। कॉपरेटिव बैंक परिसर में वेंडर मार्केट बना कर शहर को जाम से मुक्ति मिलेगी। अतिक्रमण को चिन्हित करने के लिए एक टीम बने, जिसमें निगम के साथ डालटनगंज चैम्बर ऑफ कॉमर्स और व्यवसायी संघ भी रहे। वाहन पार्किंग के लिए कांग्रेस भवन के बगल में निगम की जमीन पर पांच तल्ला पार्किंग बनाई जाए। थाना रोड से तालाब के बीच पहले से बने दीनदयाल मार्ग को चालू किया जाए।

मेदिनीनगर : सिंचाई के लिए नदी नालों के पानी को खेत तक पहुंचाया जाए : अविनाश देव

संवाददाता

मेदिनीनगर। संत मरियम स्कूल के चेयरमैन शह झामुमो नेता अविनाश देव ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि जीवन की कल्पना पानी के बिना नहीं की जा सकती है, इसीलिए सदियों से एक कहावत चली आ रही है - जल ही जीवन है। मानव सभ्यता का विकास ही नदी घाटी के किनारे हुआ है। इंसान को शौहरत की भूख मौत के करीब ला दिया। नेशनल हाईवे, रेलवे, सेज गेज के नाम पर सड़के बहुमंजिला इमारतें इन सब के लिए माइनिंग क्रसिंग जंगल की बेतहाशा कटाई ग्लोबल वार्मिंग का स्थाई बना दिया। जिसका नतीजा है भूगर्भीय जल पाताल पकड़ लिया। पीने का पानी बोतल से खरीददारी हो रहा है। पर्यावरणविद का कहना है अगर इसी तरस जल का दोहन रहा तो 2050 तक पीने के पानी का टोटा पड़ जाएगा। आज समग्र ग्राम विकास समिति द्वारा स्थानीय एच एम रिसॉर्ट में जल संचय व संवर्धन नदियों के पुनर्जीवन हेतु पलामू प्रमंडल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के विषय था समुदाय के भागीदारी से नदी नालों का संरक्षण। इस विषय पर उपरोक्त वक्तव्यों को आगे बढ़ाते हमने कहा कि यू एन के एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में बोर वेल के जरिए सबसे ज्यादा पानी निकाला गया किंतु बहाव को रोका नहीं गया, सबसे पहले इस पर रोक लगनी चाहिए। समूह बना कर इस पानी को दिया जाए। सिंचाई के लिए नदी नालों के पानी को खेत तक पहुंचाया जाए। आजादी के बाद तत्कालीन पलामू में एक रिपोर्ट के मुताबिक पैंतालीस फीसदी जंगल था और आज नौ फीसदी बचा है।

हम उम्मीद करते है प्राण वायु की कोविड समझा दिया है। जंगल के कटाई को हर हाल में रोका जाए और काटने से पहले पौधों को लगाया जाए। अब वक्त आ गया है विकास के नाम पर कॉरपोरेटीकरण से बचने और सामुदायिक पट्टा लेकर जल जंगल बचाने का तभी आने वाली पीढ़ी सुरक्षित रहेगी।

विनोद प्रसाद,जेम्स हेरेंज, मिथिलेश, शिवशंकर प्रसाद, मेघा श्री राम,प्रेम प्रकाश, सेवानिवृत प्रोफेसर डी एस श्रीवास्तव सहित पूरी टीम को हार्दिक बधाई जो अपने जल संचय संवर्धन पर कार्यशाला आयोजन का लोगों को जागरूक किया।

शौचालय का गंदा पानी बहने से मरीज के परिजन व चिकित्सक भी परेशान

संवाददाता

मेदिनीनगर। मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में स्वच्छता का हाल इन दिनों बेहाल है। मरीजों को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराने वाला अस्पताल इन दिनों खुद बीमार हो गया है। कई महीनो से अस्पताल का मुख्य मार्ग सौचलय के गंदा पानी से जलमग्न है। वह भी अस्पताल के गंदे नाले व शौचालय के पानी से। जिले को स्वच्छता व स्वस्थ रहने का संदेश देने वाला मेदनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल के शौचालय का टंकी साफ-सफाई के अभाव में जाम हो गया है। जिससे शौचालय का गंदा पानी सड़क पर फैल गया है। इसके वजह से यहां अपना इलाज कराने आए मरीजों को शौचालय के गंदा पानी से निकलने वाले बदबू से काफी परेशानी हो रही है। इसके बावजूद अस्पताल से सौचाल्य का गंदा पानी की निकासी को लेकर कोई ठोस व्यवस्था नहीं की जा रही है। राज्य स्वास्थ्य समिति के अधिकारियों द्वारा बार-बार अस्पताल निरीक्षण के दौरान साफ-सफाई पर जोर दिए जाने के बावजूद स्थिति यथावत है। शुक्रवार को अस्पताल परिसर में शौचालय का गंदा पानी बहने से मरीज समेत उनके परिजन व चिकित्सकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।सौचालय का पानी बहकर सड़क पर फैल गया। पानी की दुर्गंध से मरीजों व परिजनों को बाहर में शुद्ध हवा लेना कठिन हो गया है।

संक्षिप्त खबरें

ऑस्ट्रेलियाई पुरुष घरेलू वन डे कप का नाम डीन जोन्स ट्रॉफी रखा गया

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलियाई पुरुष घरेलू वन डे कप का नाम डीन जोन्स ट्रॉफी रखा गया है, जो उस खिलाड़ी के सम्मान में होगा जिसने सीमित ओवरों के खेल में 'क्रांति' ला दी थी। इस वर्ष की शुरूआत में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के डिजिटल प्लेटफार्मों पर एक अभियान शुरू किया गया था, जिसमें टूर्नामेंट का नाम रखने के लिए खिलाड़ियों की एक सूची बनाई गई थी, जिसमें जोन्स, माइकल बेवन और एंड्रयू साइमंड्स शामिल थे, जिनका मूल्यांकन ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट हॉल ऑफ फेम समिति द्वारा किया गया था। पुरस्कार के लिए मुख्य मानदंडों में पुरुषों की एक दिवसीय प्रतियोगिता में उनका रिकॉर्ड, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष प्रदर्शन करने वाला खिलाड़ी होना और 50 ओवर के प्रारूप का पर्याय बनने वाला खिलाड़ी होना शामिल था। सितंबर 2020 में 59 वर्ष की आयु में निधन हो जाने वाले जोन्स ने विक्टोरिया के लिए 55 घरेलू एक दिवसीय मैचों में 50.52 की औसत से 2122 रन बनाए और उन्हें 1994-95 का खिताब दिलाया, जबकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, जहां वह 50 ओवर के खेल में अग्रणी थे।

अर्जेंटीना लगातार दूसरे वर्ष फीफा पुरुष फुटबॉल रैंकिंग में शीर्ष पर

नई दिल्ली। फुटबॉल विश्व चैंपियन अर्जेंटीना लगातार दूसरी साल फीफा रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर काबिज हुई है। गुरुवार को प्रकाशित रैंकिंग में केवल सीमित बदलाव हुए और नवंबर में पिछली रैंकिंग जारी होने के बाद से केवल 21 अंतरराष्ट्रीय मैच हुए। अर्जेंटीना ने वर्ष के अंत में फ्रांस को पछाड़कर शीर्ष स्थान हासिल किया है। जबकि यूरोपीय चैंपियन स्पेन ने पोडियम पूरा किया। शेष शीर्ष 10 में कोई बदलाव नहीं हुआ है। शीर्ष दस टीमों के क्रम में, अर्जेंटीना, फ्रांस, स्पेन, इंग्लैंड, ब्राजील, पुर्तगाल, नीदरलैंड, बेल्जियम, इटली और जर्मनी है। रैंकिंग जारी करते हुए फीफा ने कहा कि अंगोला, जिसने 2024 में सबसे अधिक मैच खेले, ने पिछले 12 महीनों में सबसे बड़ी प्रगति दर्ज की है। वो 32 स्थान ऊपर चढ़कर 85वें स्थान पर पहुंच गया। फीफा की अगली टीम रैंकिंग अप्रैल में प्रकाशित की जाएगी।

एसएस मेमोरियल और बीएस कॉलेज के बीच होगी खिताबी भिड़ंत

रांची। रांची विश्वविद्यालय अंतर कॉलेज क्रिकेट प्रतियोगिता 2024- 25 में शुक्रवार को सेमीफाइनल मुकाबले खेला गया। बीएस कॉलेज लोहरदगा के क्रिकेट मैदान में एसएस मेमोरियल और बीएस कॉलेज ने सेमीफाइनल मुकाबले को जीतकर फाइनल में प्रवेश किया। शनिवार को दोनों टीमें खिताब के लिए भिड़ेंगे। बता दें पिछले सत्र में भी एसएस मेमोरियल और बीएस कॉलेज फाइनल में पहुंची थी, जिसमे बीएस कॉलेज ने बाजी मारी थी। शुक्रवार को पहला सेमीफाइनल एसएस मेमोरियल और डोरंडा कॉलेज के बीच खेला गया। एसएस मेमोरियल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट पर 160 रन बनाए। टीम की ओर से आशीष ने 58 रन बनाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरे डोरंडा की टीम निर्धारित ओवर में 8 विकेट पर 112 रन ही बना सकी। दूसरा सेमीफाइनल बीएस कॉलेज लोहरदगा और गोस्सनर कॉलेज के बीच खेला गया। बीएस कॉलेज ने 6 विकेट खोकर 181 रन बनाए।टीम की ओर से राहुल ने 60 रन की पारी खेली। लक्ष्य का पीछा करने उतरी गोस्सनर कॉलेज की टीम 86 रन पर ढेर हो गई।

चेन्नइयन एफसी के खिलाफ मेजबानी करेगी मुम्बई सिटी

● मुम्बई ने अपने पिछले तीन आईएसएल मैचों में कोई गोल नहीं खाया है

मुम्बई। एजेंसी

मुम्बई सिटी एफसी शनिवार शाम इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले के लिए मुम्बई फुटबॉल एरिना (एमएफए) में चेन्नइयन एफसी की मेजबानी करेगी। मुम्बई चेन्नइयन एफसी के खिलाफ अपने पिछले नौ आईएसएल मुकाबलों में सात जीत और दो ड्रा के साथ अपराजित रहे हैं। मुम्बई ने अपने पिछले पांच मैचों में दो जीते हैं और दो ड्रा खेले हैं। मुम्बई सिटी एफसी 11 मैचों में चार जीत, पांच ड्रा और दो हार से 17 अंक लेकर तालिका में सातवें स्थान पर है।

चेन्नइयन एफसी 12 मैचों में चार जीत, तीन ड्रा और पांच हार से 15 अंक लेकर तालिका में नौवें स्थान पर है। लेकिन उसने अपने पिछले पांच मुकाबलों में तीन हारे हैं।

मुम्बई ने अपने पिछले तीन आईएसएल मैचों में कोई गोल नहीं खाया है। मुम्बई ने इस सीजन में सात बार पोस्ट-क्रॉसबार को निशाना बनाया है, जो दूसरा सबसे बड़ा आंकड़ा है। पिछले साल, उसने 10 बार सबसे ज्यादा पोस्ट-क्रॉसबार पर निशाने मारे थे। चेन्नइयन एफसी अपने पिछले दो अवे मैच हारी है, जिनमें कोई गोल नहीं कर पाई है।

चेन्नइयन ने घर से बाहर लंबे समय तक दिसंबर 2023 और फरवरी 2024 के बीच चार मैच हारे थे। चेन्नइयन ने इस सीजन में अपने मैचों के पहले हाफ में केवल सबसे कम चार गोल खाए हैं। हालांकि, उन्होंने दूसरे हाफ में 14 गोल खाए और यह केरला ब्लास्टर्स के साथ संयुक्त रूप से सबसे ज्यादा है। मुम्बई के चेक हेड कोच पीटर क्रेटकी चाहते हैं कि उनकी टीम चेन्नइयन एफसी के खिलाफ आगामी मुकाबले में सुधार करे।

उन्होंने कहा हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम अच्छी तरह से बचाव करें, तेज गति से हमले करें और अधिक मौके बनाकर गोल दागें। इन क्षेत्रों पर हम अभी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। चेन्नइयन एफसी के सहायक कोच नोएल विल्सन ने कहा कि उनकी टीम प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई करने के लिए पिछले सीजन के दूसरे हाफ के अपने शानदार प्रदर्शन को दोहराना चाहेगी। उन्होंने कहा हम हमेशा प्लेऑफ में पहुंचना चाहते हैं। हमने पिछले सीजन के दूसरे हाफ में बहुत सारे मैच जीतकर ऐसा ही किया था और इस बार भी ऐसा करना हमारा लक्ष्य होगा।

क्रिकेट : ईश्वरदेव की जीत में चमके अमित

वाराणसी। एजेंसी

मैन आफ द मैच अमित मिश्र (अजेय 37 रन, 2 विकेट) के हरफनमौला खेल की बदौलत गत उपजेता ईश्वरदेव मिश्र एकादश ने विद्याभास्कर एकादश को आठ विकेट से पराजित कर दिया। शुक्रवार को आनन्द चंदोला खेल महोत्सव के तहत खेली जा रही 37वीं कनिष्कदेव गोरावाला मीडिया क्रिकेट के उद्घाटन मुकाबले में विद्याभास्कर एकादश टास हारने पर पहले खेलने के लिए बाध्य हुई। काशी पत्रकार संघ से संचालित वाराणसी प्रेस क्लब एवं जिला प्रशासन के संयुक्त बैनर तले सांसद सांस्कृतिक जागरूकता महोत्सव के अन्तर्गत डॉक्टर सम्पूर्णानन्द स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स सिगरा में यह मैच खेला गया। विद्याभास्कर एकादश ने 20 ओवर में आठ विकेट खोकर 96 रन बनाये। विनय शंकर सिंह ने 28, सुभाष राय, सुब्रतो ने 12-12 तथा राहुल ने 11 रन बनाये। अमित मिश्र के अलावा रवि सिंह ने तीन विकेट लिए। जवाब में ईश्वरदेव मिश्र एकादश ने 11.4 ओवर में दो विकेट खोकर 97 रन बना लिए। अमित के अलावा अमित मिश्र द्वितीय ने 34 रन बनाये। इससे पूर्व प्रतियोगिता का उद्घाटन पूर्व ब्लाक प्रमुख एवं समाजसेवी अवधेश पाठक ने किया।

इस मौके पर काशी पत्रकार संघ के अध्यक्ष डॉ. अत्रि भारद्वाज, महामंत्री अखिलेश मिश्र, कोषाध्यक्ष पंकज, वाराणसी प्रेस क्लब के अध्यक्ष अरुण मिश्र, मंत्री विनय शंकर, कोषाध्यक्ष संदीप, पूर्व अध्यक्ष केडीएन राय, योगेश कुमार, सुभाषचन्द्र, बीबी, राजनाथ तिवारी, शुभाकर दुबे, केबी रावत, सुरेश सिंह, जितेन्द्र श्रीवास्तव आदि की मौजूदगी रही।

धीरज, दीपिका ने खिताब जीता, टीम पदक भी जीते

जमशेदपुर। एजेंसी

ओलंपियन बी. धीरज और दीपिका कुमारी शुक्रवार को गोपाल मैदान में राष्ट्रीय तीरंदाजी चैंपियनशिप के अंतिम दिन क्रमशः रिकर्व पुरुष और महिला वर्ग में चैंपियन बनकर उभरे। उन्होंने टीम मेडल जीतकर अपनी खुशी दोगुनी कर दी। दिव्यांश चौधरी के साथ व्यक्तिगत खिताबी मुकाबले में धीरज ने पहले दो सेटों में अंक बांटे, जबकि दूसरे सेट में उन्होंने परफेक्ट 30 स्कोर किया, उन्होंने लगातार येलो जोन में पहुंचकर 6-2 के स्कोर के साथ अपना पहला खिताब जीता। उनके 18 वर्षीय प्रतिद्वंद्वी पहली बार पोडियम पर शूटिंग करने के दबाव को नहीं झेल पाए। धीरज ने सर्विसेस पुरुष टीम की कांस्य पदक जीत में भी योगदान दिया। धीरज ने कहा यह एक अच्छा प्रदर्शन था। मैंने जो कुछ भी किया है, वह सही दिशा में जा रहा है। पेट्रोलियम स्पोर्ट्स प्रमोशन के रंग में रंगी दीपिका ने अपने पति अतनु दास के साथ मिलकर पंजाब की सिमरनजीत कौर और आदित्य चौधरी की जोड़ी को 6-2 से हराकर मिश्रित टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। महिलाओं के व्यक्तिगत फाइनल में दीपिका ने स्थानीय पसंदीदा अंकिता भक्त को 6-2 से हराकर अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता। दीपिका ने कहा मैं नतीजों की परवाह किए बिना कुछ प्रयोग कर रही हूं। मेरा अंतिम लक्ष्य ओलंपिक है।

परिणाम : रिकर्व : पुरुषः स्वर्णः बी. धीरज (एसएससीबी) ने दिव्यांश चौधरी (हरियाणा) को 6-2 से हराया, कांस्यः अतुल वर्मा (उत्तराखंड) ने चिंगखम अचनबा सिंह (अरुणाचल) को 7-1 से हराया।

महिला : स्वर्ण : दीपिका कुमारी (पीएसपीबी) ने अंकिता भक्त (झा) को 6-2 से हराया,

कांस्यः सिमरनजीत कौर (पंजाब) ने भार्गवी भगोरा (गुजरात) को 6-5 (शूट-ऑफः 8-7) से हराया।

टीमः पुरुषः स्वर्ण : रेलवे ने हरियाणा को 6-2 से हराया; कांस्यः एसएससीबी ने राजस्थान को 5-4 से हराया (शूट-ऑफः 29-28)।

महिला : स्वर्ण : झारखंड ने मध्य प्रदेश को 5-3 से हराया,

कांस्य : महाराष्ट्र ने रेलवे को 6-2 से हराया, **मिश्रित : स्वर्णः** पीएसपीबी ने पंजाब को 6-2 से हराया, **कांस्य :** मध्य प्रदेश ने महाराष्ट्र को 5-1 से हराया।

एचआईएल का भव्य समारोह के साथ होगा आगाज, सारा अली खान और किंग होंगे आकर्षण

● भारतीय हस्तियों द्वारा शानदार प्रदर्शन किया जाएगा, जिसका थीम 'हॉकी का जश्न' होगा

नई दिल्ली। एजेंसी

बहुप्रतीक्षित हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) 2024-25 भव्य शैली में वापसी करने के लिए तैयार है, जिसकी शुरूआत 28 दिसंबर को उद्घाटन मैच से पहले राउरकेला के बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में एक भव्य उद्घाटन समारोह के साथ होगी। यह कार्यक्रम, जो खेल, मनोरंजन और अत्याधुनिक तकनीक का एक शानदार उत्सव होने का वादा करता है, में शीर्ष भारतीय हस्तियों द्वारा शानदार प्रदर्शन किया जाएगा, जिसका थीम 'हॉकी का जश्न' होगा। बॉलीवुड सनसनी सारा अली खान और प्रसिद्ध संगीत कलाकार किंग अपने शानदार प्रदर्शन के साथ शाम को सुर्खियाँ बटोरेंगे। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित श्यामक डावर डांस ट्रूप गतिशील कोरियोग्राफी के साथ मंच को जीवंत करेंगे।

रात की एक खास विशेषता अभिनव एनामॉर्फिक फ़्लोर प्रोजेक्शन मैपिंग होगी, जो स्टेडियम के फ़्लोर पर प्रोजेक्ट किए गए 3डी भ्रम के साथ प्रशंसकों के लिए एक विजुअल इमर्सिव अनुभव प्रदान करेगी। प्रशंसकों को एक्शन के और करीब लाने के प्रयास में, राउरकेला में दर्शकों के लिए उद्घाटन समारोह और एचआईएल 2024-25 के सभी मैचों के टिकट निःशुल्क होंगे।

इस पहल का उद्देश्य लीग को देश भर के प्रशंसकों के लिए और अधिक सुलभ बनाना है, ताकि वे विश्व स्तरीय खेल तमाशा लाइव देख सकें। हॉकी इंडिया लीग के अध्यक्ष दिलीप तिर्की ने एचआईएल द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से कहा, ₹राउरकेला हॉकी के प्रति गहरा प्रेम रखने वाला शहर है, और यह उचित ही है कि हम यहां इतने भव्य समारोह के साथ लीग का शुभारंभ करें।

पैरा एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप 2025 की मेजबानी करेगा नई दिल्ली

नई दिल्ली। एजेंसी

पैरा एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप 2025 का आयोजन 26 सितंबर से 5 अक्टूबर 2025 तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में होगा, जो अगले मार्च में पहली बार विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स की मेजबानी भी करेगा। अगले साल पैरा एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप नई दिल्ली में होगी, जो पहली बार भारत में इस आयोजन की मेजबानी करेगा, विश्व पैरा एथलेटिक्स (डब्ल्यूपीए) ने गुरुवार (19 दिसंबर) को उक्त घोषणा की। पैरा एथलेटिक्स विश्व चैंपियनशिप, दुनिया की सबसे बड़ी एकल पैरा खेल प्रतियोगिता, 26 सितंबर से 5 अक्टूबर 2025 तक जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित की जाएगी। नई दिल्ली 2025 चैंपियनशिप का 12वां संस्करण होगा और दोहा 2015, दुबई 2019 और कोबे 2024 के बाद चौथी बार एशिया में इसकी मेजबानी की जाएगी। इसके अलावा, डब्ल्यूपीए ने घोषणा की कि नई दिल्ली अगले साल पहली बार विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रैंड प्रिक्स की मेजबानी भी करेगा। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 11 से 13 मार्च तक होने वाला यह आयोजन प्रशंसकों को विश्व चैंपियनशिप से पहले पैरा एथलेटिक्स के रोमांच का अनुभव करने का एक प्रारंभिक अवसर देगा।

आईओसी ने अध्यक्ष पद की उम्मीदवारी के दस्तावेज जारी किये

जिनेवा। अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने ग्रीस में 144वें आईओसी सत्र में होने वाले आईओसी अध्यक्ष पद के चुनाव के लिए सात उम्मीदवारों के उम्मीदवारी दस्तावेज जारी किए। ये दस्तावेज सभी के लिए ioc.org पर डाउनलोड करने और देखने के लिए उपलब्ध हैं, और कुछ दस्तावेज अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश संस्करणों में उपलब्ध कराए गए हैं। सात उम्मीदवार, एचआरएच प्रिंस फैसल अल हुसैन , डेविड लैपर्टिएंट , जोहान एलियाश , जुआन एंटोनियो समरंच, क्रिस्टी कोवेंट्री , सेबेस्टियन को , मोरिनारी वतनबे , 30 जनवरी, 2025 को स्विट्जरलैंड के लॉजेन में आईओसी सदस्यों के समक्ष ऑनलाइन अपने अध्यक्षीय उम्मीदवारी की प्रस्तुति देंगे।

शेयर बाजार में कोहराम, सेंसेक्स व निफ्टी में 5वें दिन भी बड़ी गिरावट

नई दिल्ली। एजेंसी

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को लगातार 5वें दिन बड़ी गिरावट के साथ बंद हुआ। इस सप्ताह बाजार में करीब 5 प्रतिशत की गिरावट हुई है। जून 2022 के बाद घरेलू शेयर बाजार में ये अभी तक की सबसे तेज गिरावट दर्ज की गई है। निफ्टी अपने ऑलटाइम हाई से करीब 10 प्रतिशत तक टूट चुका है। कारोबार में सेंसेक्स ऊपरी स्तर से 1,700 अंक और निफ्टी 525 अंक से अधिक टूट गए। हालांकि आखिरी 20 मिनट के कारोबार में हुई खरीदारी के कारण दोनों सूचकांक निचले स्तर से मामूली सुधार करने में सफल रहे। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 1.49 प्रतिशत और निफ्टी 1.52 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए। निवेशकों को एक ही दिन में लगभग 8.65 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। शुक्रवार को कारोबार की शुरूआत मामूली तेजी के साथ हुई थी। शुरूआती कारोबार में खरीदारी के सपोर्ट से बाजार में मजबूती आने के संकेत भी नजर आए, लेकिन पहले आधे घंटे के कारोबार के बाद ही बिकवाली का दबाव बन जाने के कारण शेयर बाजार के दोनों सूचकांक लगातार गिरते चले गए। आज के कारोबार में सभी सेक्टोरल इंडेक्स में लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा। रियल्टी, पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज और आईटी सेक्टर में आज सबसे अधिक बिकवाली होती रही। ऑटोमोबाइल, एनर्जी, इंफ्रास्ट्रक्चर, मेटल, ऑयल एंड गैस, एफएमसीजी, फार्मास्यूटिकल, कैपिटल गुड्स, टेक और कंज्यूमर ड्यूरेबल इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 2.43 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 2.11 प्रतिशत की कमजोरी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

सस्ता हुआ सोना, चांदी की भी घटी चमक

नई दिल्ली। एजेंसी

घरेलू सर्राफा बाजार में कमजोरी नजर आ रही है। सोना 650 रुपये से 710 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हुआ है। सोने की कीमत में गिरावट आने के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना भी 77,280 रुपये से लेकर 77,130 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी 70,850 रुपये से लेकर 70,700 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी भी 1 हजार रुपये प्रति किलोग्राम तक सस्ता हुआ है। कीमत में आई इस गिरावट के कारण दिल्ली सरार्फा बाजार में इसकी कीमत आज 91,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर आ गई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना 77,280 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 70,850 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 77,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,700 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 77,180 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 70,750 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

अब 31 दिसंबर तक दाखिल कर सकेंगे विलंबित आईटीआर

नई दिल्ली। आयकर विभाग ने आकलन वर्ष 2024-25 के लिए विलंबित आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अब 31 दिसंबर तक आईटीआर दाखिल किया जा सकता है। यह जानकारी आयकर विभाग ने शुक्रवार को दी है। आयकर विभाग ने 'एक्स' पोस्ट पर एक बयान जारी कर कहा कि यदि आप आकलन वर्ष 2024-25 कि लिए अपना आईटीआर दाखिल करने से चूक गए हैं, तो आपके लिए विलंबित आयकर रिटर्न जमा करने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर, 2024 है। आखिरी समय का इंतजार न करें और अपना आयकर रिटर्न दाखिल करेंके, विभाग के मुताबिक वित्त वर्ष 2023-24 और आकलन वर्ष 2024-25 के लिए आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2024 थी, लेकिन अगर कोई करदाता आईटीआर दाखिल करने की अंतिम तिथि से चूक गया है, तो भी लेट फीस के साथ वह अपना रिटर्न दाखिल कर सकता है।

ग्लोबल मार्केट से कमजोरी के संकेत एशिया में मिला-जुला कारोबार

नई दिल्ली। एजेंसी

ग्लोबल मार्केट से कमजोरी के संकेत मिल रहे हैं। अमेरिकी बाजार पिछले सत्र के दौरान मामूली कमजोरी के साथ बंद हुए। हालांकि डाउ जॉन्स फ्यूचर्स आज बड़ी गिरावट के साथ कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। यूरोपीय बाजार भी पिछले सत्र के दौरान जबरदस्त बिकवाली का शिकार हो गया। एशियाई बाजारों में आज मिला-जुला कारोबार हो रहा है। अमेरिकी बाजार में पिछले सत्र के दौरान लगातार दबाव बना रहा, जिसके कारण वॉल स्ट्रीट के सूचकांक गिरावट के साथ बंद हुए। एसएंडपी 500 इंडेक्स 0.09 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 5,867.08 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह नैस्डेक ने 0.12 प्रतिशत फिसल कर 19,369.58 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया। डाउ जॉन्स फ्यूचर्स फिलहाल 260.42 अंक यानी 0.62 प्रतिशत टूट कर 42,081.82 अंक के स्तर पर कारोबार करता हुआ नजर आ रहा है। अमेरिकी बाजार की तरह ही यूरोपीय बाजार में भी पिछले सत्र के दौरान लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा। एफटीएसई इंडेक्स 1.16 प्रतिशत की गिरावट के साथ 8,105.32 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह सीएसी इंडेक्स ने 1.24 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 7,294.37 अंक के स्तर पर पिछले सत्र के कारोबार का अंत किया।

संक्षिप्त खबरें

तंबुओं की नगरी महाकुंभ क्षेत्र में आग से बचाव करने को पर्याप्त है संसाधन

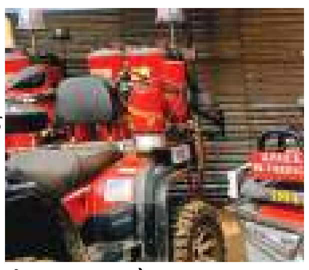

प्रयागराज। तंबुओं की नगरी महाकुंभ 2025 को सकुशल संपन्न कराने एवं आग लगने की घटनाओं पर काबू पाने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं। जीरो फायर कांसेप्ट को अपनाया जा रहा है। कुल 53 फायर स्टेशन और 26 फायर चौकियों की स्थापना मेला क्षेत्र में की जा रही है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी महाकुंभ मेला प्रमोद शर्मा ने बताया कि अग्निशमन विभाग आधुनिक फायरफाइटर मशीनों और उपकरणों को महाकुंभ परिसर में स्थापित करा रहा है। आग से निपटने के पुख्ता किए जा रहे हैं। इस कड़ी में इलेक्ट्रिक वाहनों, बसों और ई रिक्शा में लगने वाली आग को बुझाने के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। महाकुंभ मेला में नई तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है है। टेक्नोलॉजी का प्रयोग पहली बार हो रहा है। जनवरी में ठंड अपने चरम सीमा पर होगी। इसलिए टेंट में रह रहे लोग खुद को गर्म रखने के लिए आग का सहारा लेंगे।

कुएं में तैरता हुआ मिला नवविवाहिता का शव

राजगढ़। राजगढ़ कोतवाली थाना क्षेत्र के ग्राम भवानीपुरा में 18 वर्षीय विवाहिता का कुएं में तैरता हुआ शव मिला, जो दो दिन पहले मायके देहरा से बकरी चराने का बोलकर निकली थी। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा और मर्ग कायम कर मामले में जांच शुरू की। पुलिस के अनुसार ग्राम भवानीपुरा हाल देहरा राजगढ़ निवासी कलीबाई पत्नी मिथुन तंवर का भवानीपुरा गांव के देवसिंह के कुएं में तैरता हुआ शव मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शव को कुएं से बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल पहुंचाया। बताया गया है कि दो दिन पहले नवविवाहिता मायके में रहते हुए बकरी चराने का बोलकर निकली थी।

एक गौ तस्कर गिरफ्तार, चार फरार

हरिद्वार। जंगल में गौकशी करते हुए पुलिस ने एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के पास से पांच क्विंटल गौमांस व गौकशी के उपकरण बरामद किए हैं। जबकि चार अन्य लोग मौके का फायदा उठाकर फरार होने में कामयाब रहे। दरअसल, जनपद की भगवानपुर पुलिस को क्षेत्र के खेलपुर गांव के जंगल गौकशी किए जाने की सूचना मिली। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने एक आरोपित शादाब निवासी ग्राम खेलपुर थाना भगवानपुर को गिरफ्तार कर लिया। जबकि उसके अन्य साथी आकिव, समीर पुत्र, शहवान, बाबू निवासीगण ग्राम खेलपुर थाना भगवानपुर, हरिद्वार फरार होने में कामयाब रहे।

युवक ने की आत्महत्या, जांच में जुटी पुलिस

गाजियाबाद। मुरादनगर थाना क्षेत्र के बिलाल मस्जिद कालोनी इलाके में एक 26 वर्षीय युवक ने छत के पंखे से फांसी लगाकर खुदकुशी कर कर ली। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।प्रारंभिक जाँच में मामला गृह क्लेश का प्रतीत हो रहा है। पुलिस आत्महत्या के कारणों की जानकारी कर रही है। मुरादनगर में बिलाल मस्जिद कालोंनी में रहने वाले शौकीन का 26 वर्षीय पुत्र फारूक गुरुवार की रात को अपने कमरे में सोने के लिए गया था और उसने मकान की अंदर से कुंडी लगाकर छत के पंखे से लटक कर अपनी जान दे दी।

सड़क दुर्घटना में एक की मौत

जोधपुर। शहर के मदेरणा कॉलोनी स्थित नगर निगम कार्यालय के नजदीक ट्रक की साइड से लगी टक्कर में एक महिला की मौत हो गई। बुरी तरह घायल हुई महिला को एमडीएम अस्पताल लाया गया। मगर कुछ देर बाद में उसकी मौत हो गई। उसके पुत्र की तरफ से ट्रक चालक के खिलाफ रिपोर्ट दी गई है। माता का थान पुलिस इस बारे में पड़ताल कर रही है। एएसआई जीवनराम ने बताया कि मूलतः भोपालगढ़ हाल कालका माता का मंदिर के पास मदेरणा कॉलोनी की 42 वर्षीय संगीता देवी पत्नी स्व. दिनेश चौहान अपने भाई राधेश्याम के साथ रहती थी।

महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली

हाथरस। जिले के थाना सहपाऊ क्षेत्र स्थित गांव धाधऊ में शुक्रवार को एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मायके पक्ष के लोगों ने ससुराल वालों पर बेटी की हत्या का आरोप लगाते हुए लिखित शिकायत दी है। गांव धाधऊ में रहने वाले संजीव की शादी 2008 में फिरोजाबाद की मोनिका से हुई थी। परिजनों का कहना है कि संजीव शराब पीने का आदी था, जिसके चलते दोनों के बीच अक्सर झगड़ा होता रहता था। गुरुवार को संजीव शराब पीकर घर आया तो दोनों में झगड़ा हो गया। इसके बाद दोनों खाना खाकर अलग-अलग सोने चले गए।

महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली

हाथरस। जिले के थाना सहपाऊ क्षेत्र स्थित गांव धाधऊ में शुक्रवार को एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मायके पक्ष के लोगों ने ससुराल वालों पर बेटी की हत्या का आरोप लगाते हुए लिखित शिकायत दी है। गांव धाधऊ में रहने वाले संजीव की शादी 2008 में फिरोजाबाद की मोनिका से हुई थी। परिजनों का कहना है कि संजीव शराब पीने का आदी था।

विकसित भारत बनाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान की भूमिका महत्वपूर्ण : रमेन

रायपुर। एजेंसी

● सम्मेलन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रेरक का काम करेगी

भारत सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में एक है और पांच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। ऐसे दौर में वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार की भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता। जब हम तेजी से तकनीकी प्रगति और वैश्विक चुनौतियों के दौर में आगे बढ रहे है तो भौतिक विज्ञान पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह विचार राज्यपाल रमेन डेका ने आज शुक्रवार को भौतिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय अकादमी के 31 वें सम्मेलन को संबोधित करते हुए व्यक्त किया।

पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेन डेका ने अपने उदबोधन में कहा कि, दुनिया आज महत्वपूर्ण पर्यावरणीय, तकनीकी और सामाजिक चुनौतियों से जूझ रही है। इस सम्मेलन में भाग लेने वाले वैज्ञानिक समुदाय में महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता रखते है। वे अत्याधुनिक शोध के माध्यम से इन वैश्विक मुद्दों को हल करने में हमारी मदद कर सकते है।

डेका ने कहा कि, सम्मेलन का विषय भौतिक विज्ञान में उभरते रूझान इस उभरते क्षेत्र में अपने ज्ञान पर चर्चा करने और उसे बढ़ाने के लिए शोधकताओं को एक साथ लाकर वैज्ञानिक जांच और नवाचार के लिए सामूहिक प्रतिबद्धता को दशार्ता है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, सांख्यिकी, कम्प्यूटर विज्ञान और जैव सूचना विज्ञान सहित विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक इस सम्मेलन में एक साथ है।

राज्यपाल ने कहा कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारत की शिक्षा पारिस्थितिक तंत्र को बदलने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण रखा है। यह अनुसंधान नवाचार और आलोचनात्मक सोच के महत्व पर जोर देता है। यह सम्मेलन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रेरक का काम करेगी।

सम्मेलन युवा और नवोदित वैज्ञानिकों को यंग साइंटिस्ट अवार्ड के माध्यम से अपने संभावित शोध को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान कर रहा है। स्नातकोत्तर छात्रों को शामिल करना और उनकी पोस्टर प्रस्तुतियां इस दिशा में एक सराहनीय पहल है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि ज्ञान, विचारों और अनुभवों को साझा करने के साथ-साथ महत्वपूर्ण शोध और अभिनव समाधानों के लिए यह सम्मेलन उत्प्रेरक सिद्ध होगा।

सपाई 2047 तक सत्ता का स्वाद नहीं चख पाएंगे : केशव

लखनऊ। एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने विधानसभा में गतिरोध पैदा करने पर समाजवादी पार्टी की आलोचना की है। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि यूपी विधानसभा में सपा का ड्रामा नया नहीं है, क्योंकि उनके नेता खुद इस 'विशेष प्रशिक्षण' में माहिर हैं! आसन के आदेशों की अवहेलना और गुंडागर्दी करना ही सपा का असली डीएनए है। उप मुख्यमंत्री ने एक्स पर लिखा कि लोकतंत्र का चोला पहनकर लोकतांत्रिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाने वाले सपाई 2027 तो छोड़िए, 2047 तक सत्ता का स्वाद नहीं चख पाएंगे। यूपी की जनता सब देख रही है और सपा की यह नौटंकी अब और नहीं चलेगी। सपा को समाजवादी पार्टी से समाप्तवादी पार्टी बनाने का समय आ रहा है। विदित हो कि उत्तर प्रदेश विधानसभा का शीतकालीन सत्र समय से पहले खत्म कर दिया गया।

प्रदेश सरकार विकास के साथ सड़क तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए प्रतिबद्ध : जोगाराम

जोधपुर। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने शुक्रवार को एम्स से सालावास सडक पर पुल निर्माण कार्य का अवलोकन कर सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। संसदीय कार्य मंत्री ने कहा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेश सरकार अवसंरचनात्मक विकास के साथ सडक तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है।

यूक्रेन मुद्दे पर डोनाल्ड ट्रम्प से 'किसी भी समय' बातचीत को तैयार पुतिन

मॉस्को। एजेंसी

● पुतिन ने भी स्वीकार किया कि यूक्रेन में लड़ाई जटिल है

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि यूक्रेन युद्ध पर वह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से बातचीत करने को तैयार हैं। पुतिन ने कहा कि चूंकि युद्ध खत्म करने के लिए रूस और यूक्रेन दोनों को समझौता करना होगा। इसके लिए कोई शर्त नहीं है। दरअसल, एक बयान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कार्यालय में आने के कुछ ही घंटों के भीतर वो यूक्रेन शांति समझौता कराने की बात कही थी। इसी को लेकर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने साल की आखिरी प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि वो अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ किसी भी समय बातचीत के लिए तैयार हैं। पुतिन ने आगे कहा कि रूस इस समय 2022 से ज्यादा मजबूत स्थिति में है। यूक्रेन में रूसी सेना आगे बढ़ रही है, बावजूद इसके वह वार्ता और समझौते के लिए तैयार हैं। प्रेस कॉन्फ्रेंस में पुतिन ने यह भी स्वीकार किया कि यूक्रेन में लड़ाई जटिल है लेकिन रूसी सेना यूक्रेनी सशस्त्र बलों को कुर्स्क क्षेत्र से जरूर बाहर निकाल देगी। उन्होंने कहा कि हमारे लोग लड़ रहे हैं। अभी लड़ाई चल रही है और गंभीर लड़ाई चल रही है। निश्चित रूप से हमारी सेना उन्हें बाहर निकाल देगी, इसके अलावा कोई रास्ता नहीं है।

वाशिंगटन और दमिश्क के संबंधों में बदलाव का संकेत, राजनयिक का सीरिया दौरा जल्द

दमिश्क। एजेंसी

सीरिया में गृहयुद्ध थमने के बाद पहली बार वाशिंगटन और दमिश्क के संबंधों में बदलाव का संकेत मिला है। संयुक्त राज्य अमेरिका के एक वरिष्ठ राजनयिक के जल्द ही सीरिया पहुंचने की उम्मीद है। उनकी सीरिया के अधिकारियों से मिलने का कार्यक्रम है। अरबी न्यूज वेबसाइट '963+' की खबर के अनुसार, अमेरिकी विदेश विभाग ने आज घोषणा की कि 13 साल के गृह युद्ध के बाद मध्य पूर्वी मामलों की सहायक सचिव बारबरा लीफ प्रतिनिधिमंडल के साथ जल्द ही सीरिया का दौरा करेंगी। प्रतिनिधिमंडल की आतंकवादी संगठन के रूप में वर्गीकृत हयात तहरीर अल-शाम के प्रतिनिधियों और नागरिक समाज के प्रतिनिधयों से मुलाकत होगी। सीरिया पर नियंत्रण करने वाले हयात तहरीर अल-शाम के नेता सीरिया के भविष्य के लिए अपने दृष्टिकोण से अमेरिकी राजनयिक को अवगत कराएंगे।

कमांडर की दुनिया से आर्थिक प्रतिबंध हटाने की गुहार

'963+' की खबर के अनुसार, सीरिया में सैन्य अभियानों के कमांडर अहमद अल-शरा उर्फ अबू मोहम्मद अल-जुलानी ने कहा कि सीरिया युद्ध से थक चुका है। वह अपने पड़ोसियों या पश्चिम के लिए कोई खतरा पैदा नहीं करेगा। उन्होंने दुनिया से गुहार लगाई है कि सीरिया पर लगाए गए प्रतिबंधों को हटा ले। आर्थिक विश्लेषकों के अनुसार, अगर आर्थिक प्रतिबंध नहीं हटाए जाते तो सीरिया का पुनर्निर्माण असंभव है। बशर अल-असद के शासन के पतन के बाद सीरिया के सामने यही सबसे बड़ी चुनौती है।

फ्रांस में रहने वाले आर्थिक विश्लेषक यूसुफ लाहलाली का कहना है कि आर्थिक प्रतिबंधों का जारी रहना सीरियाई अर्थव्यवस्था को शुरू करने और पुनर्निर्माण कार्यों को शुरू करने में एक बड़ी बाधा है। इराक के प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी ने गुरुवार शाम घोषणा की इराकी दूतावास के कर्मचारी लेबनान से दमिश्क लौट गए हैं। दूतावास ने काम करना शुरू कर दिया है। सुदानी ने कहा कि बशर अल-असद के शासन के पतन के बाद दूतावास के कर्मचारी सड़क मार्ग से लेबनान चले गए थे।

पुलिस आरक्षक की बेरहमी से हत्या

कटनी। मध्य प्रदेश के कटनी जिले में शुक्रवार सुबह कुठला थाना क्षेत्र के ग्राम जटवारा में एक बर्खास्त पुलिसकर्मी की पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरे पर खून से सनी लाश बरामद की गई है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान ग्राम जटवारा निवासी 54 वर्षीय मुकेश उर्फ लाला शर्मा पुत्र दादूराम शर्मा के रूप में हुई है। कुठला थाना प्रभारी अभिषेक चौबे ने बताया कि मुकेश उर्फ लाला शर्मा बालाघाट के बैहर थाने में सिपाही के पद पर पदस्थ था। उसे विभाग द्वारा कुछ दिनों पहले बर्खास्त कर दिया गया था। उसके बाद से वह अपने गांव जटवारा में ही निवास कर रहा था। शुक्रवार सुबह ग्रामीणों ने गांव में मौजूद गौरी शंकर मंदिर के सामने स्थित पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरे पर उसकी रक्त रंजित लाश पड़ी देखी और पुलिस को सूचना दी। घटना की जानकारी लगते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेते हुए अग्रिम कार्यवाही शुरू कर दी गई है।

आजादी के बाद से हिमाचल में 1714 बैटल कैजुअल्टी : धनीराम

शिमला। स्वास्थ्य मंत्री कर्नल धनीराम शांडिल ने कहा कि 1947 में देश के आजाद होने के बाद से लेकर अभी तक हिमाचल के 1714 जवान और अधिकारी बैटल कैजुअल्टी घोषित किए गए हैं। विधायक मलेंद्र राजन के एक सवाल के जवाब में शुक्रवार को उन्होंने कहा कि इनमें से 736 अधिकारी और जवान कांगड़ा जिला से संबंध रखते हैं। इनमें से नौ अधिकारी व जवान इंदौरा विधानसभा क्षेत्र से हैं। उन्होंने कहा कि बैटल कैजुअल्टी के निकटतम परिजनों को अनुग्रह राशि एचआरटीसी की बसों में निशुल्क बस यात्रा सुविधा, युद्ध विधवाओं की पुत्री व पुत्रों की शादी के लिए आर्थिक सहायता और सशस्त्र बलों में सैनिकों के एक परिजन को उनकी योग्यता के अनुसार प्रदेश में रोजगार की सुविधा दी जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार ने बैटल कैजुअल्टी के मामलों में समय-समय पर दिए गए आश्वासनों को पूर्ण करने के लिए कार्यवाही की जाती है। प्रश्नकाल के दौरान विधायक रणधीर शर्मा, विपिन सिंह परमार, लोकेंद्र कुमार ने भी अपने-अपने सवाल पूछे।

देश व हरियाणा की राजनीति में अपूर्णीय क्षति : नायब सैनी

चंडीगढ़। एजेंसी

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओम प्रकाश चौटाला के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि इंडियन नेशनललोकदल (इनेलो) सुप्रीमो एवं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी ओमप्रकाश चौटाला का निधन अत्यंत दुःखद है। उन्होंने प्रदेश और समाज की जीवनपर्यंत सेवा की। देश व हरियाणा प्रदेश की राजनीति के लिए यह अपूरणीय क्षति है। प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने चरणों में स्थान और शोकाकुल परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि हरियाणा के विकास में ओम प्रकाश चौटाला का अहम योगदान रहा है। उनका निधन बेहद दुखद है। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने कहा कि स्वर्गीय ओमप्रकाश चौटाला बहुत अच्छे प्रशासक थे और वह कई बार मुख्यमंत्री भी रहे। उन्होंने कहा कि ओमप्रकाश चौटाला की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी। चौटाला जी जिसको एक बार मिल लेते थे उसको दोबारा नाम लेकर बुलाया करते थे। उन्होंने कहा कि चौटाला की राजनीति में बहुत अच्छी भूमिका रही।

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने अपने शोक संदेश में कहा कि हरियाणा ने आज एक सक्रिय नेता खो दिया है। चौटाला ने विधायक, सांसद व मुख्यमंत्री रहते हुए हमेशा ही समाज के कामगार वर्ग की आवाज को बुलंद किया है। चौटाला के चले जाने से राजनीति में जो खालीपन हुआ है उसे नहीं भरा जा सकता।

नारनौल : समय पर कार्यालय का कार्य करना ही गुड गवर्नेंस : विवेक भारती

नारनौल। एजेंसी

उपायुक्त डॉ विवेक भारती ने कहा कि स्वच्छता को लेकर प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री का विशेष फोकस है। ऐसे में सभी कार्यालयों में रेगुलर सफाई रखें। इसके अलावा कोई भी काम पेंडिंग ना छोड़ें। रेगुलर सफाई और रेगुलर तरीके से समय पर कार्यालय का कार्य करना ही गुड गवर्नेंस है। उपायुक्त शुक्रवार को हरियाणा के मुख्य सचिव डॉ विवेक जोशी के साथ स्वच्छ हरियाणा मिशन के तहत स्वच्छता को गति देने और सरकारी कार्यालयों में लंबित मामलों को निपटाने के लिए विशेष अभियान को लेकर हुई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के बाद अधिकारियों की बैठक में बोल रहे थे।

विशेष स्वच्छता अभियान 4.0 के बारे में जानकारी देते हुए उपायुक्त ने कहा कि कार्यालयों के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों पर भी पंचायत तथा शहरी निकाय विभाग जन भागीदारी के साथ सफाई अभियान लगातार जारी रखें। उन्होंने कहा कि स्वच्छता को लेकर जल्द ही एक राष्ट्रीय पोर्टल तैयार किया जाएगा। इस पोर्टल पर सफाई से पहले तथा सफाई के बाद की फोटो भी अपलोड की जाएंगी। इसके अलावा इस पोर्टल पर नागरिक अपनी समस्याएं भी अपलोड कर सकेंगे।

डीसी ने कहा कि अधिकारी अपने कार्यालय में सामान को तरतीब के साथ रखें ताकि अधिक से अधिक स्पेस का प्रयोग किया जा सके। इसी प्रकार पुराने रिकॉर्ड को नियमों के अनुसार कमेटी बनाते हुए डिस्पोज आफ किया जाए। वहीं कुछ ऐतिहासिक रिकॉर्ड होता है जिसे संरक्षित भी किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सरकार ने ई-वेस्ट पॉलिसी बनाई हुई है। ऐसे में अपने कार्यालय में सभी इलेक्ट्रॉनिक आइटम कंप्यूटर, प्रिंटर तथा अन्य उपकरणों को नियम के अनुसार डिस्पोज आफ करके नई खरीद की जाए अथवा उन्हें अपग्रेड कराया जाए। डीसी ने निर्देश दिए कि सभी अधिकारी कार्यालय के जो वाहन कंडम हो चुके हैं, उनको बोली लगवाने की प्रक्रिया शुरू करवाएं।

समस्या एचआरटीसी में सुधार के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास जारी

घाटे में चल रहे एचआरटीसी के 96 फीसदी रूट: मुकेश

● अग्निहोत्री ने कहा कि परिवहन निगम में इस समय 3200 बसों का बेड़ा है

● निगम की बसों में हर रोज लगभग पांच लाख यात्री सफर कर रहे हैं

शिमला। एजेंसी

उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने हिमाचल प्रदेश की जीवन रेखा कही जाने वाली एचआरटीसी के सुचारू संचालन के लिए सभी लोगों, खासकर विपक्षी दल भाजपा का सहयोग मांगा है। उन्होंने शुक्रवार को विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान विधायक चंद्रशेखर का मूल सवाल के जवाब में कहा कि एचआरटीसी में सुधार के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास जारी हैं और निगम की आय में बढ़ोतरी हो रही है। उन्होंने कहा कि एचआरटीसी के 96 फीसदी रूट घाटे के हैं। इसके बावजूद निगम में न तो किसी कर्मचारी का वेतन बकाया है और न ही पेंशन की राशि बकाया है। उन्होंने माना कि परिवहन निगम सरकार से अनुदान लेकर अपने कर्मचारियों और पेंशनरों की देनदारियों को चुकता कर रहा है। यही नहीं, एचआरटीसी ने अपने ड्राइवरों और कंडक्टरों को उनके ओवरटाइम के बकाए का भी भुगतान शुरू कर दिया है और मार्च तक तमाम ओवरटाइम अदा कर दिया जाएगा।

अग्निहोत्री ने कहा कि परिवहन निगम में इस समय 3200 बसों का बेड़ा है और निगम की बसों में हर रोज लगभग पांच लाख यात्री सफर कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि परिवहन निगम में चालू वित्त वर्ष के दौरान 700 से अधिक नई बसें शामिल की जा रही हैं, जिनमें 327 इलेक्ट्रिक बसें, 250 डीजल बसें, 100 टेंपो ट्रैवलर और 24 वॉल्वो बसें शामिल हैं।

इन बसों के निगम के बेड़े में शामिल हो जाने से प्रदेश में बसों की कमी को काफी हद तक दूर कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि धर्मपुर डिपो में इस समय 51 बसें हैं, जिन्हें चलाने के लिए 62 ड्राइवर और 77 कंडक्टर उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि इनमें से 36 बसें अपनी उम्र पार कर चुकी हैं। परिवहन निगम के को लेकर विधायक राकेश जम्वाल और अन्य ने भी सवाल पूछे।

जीएसटी और प्री-बजट का सम्मेलन अच्छी बात : उमर

जोधपुर। एजेंसी

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला शुक्रवार सुबह जोधपुर पहुंचे। यहां पहुंचने पर एयरपोर्ट पर उनका माला पहनाकर स्वागत सत्कार किया गया। मीडिया से संक्षिप्त बातचीत में उमर अब्दुल्ला ने कहा कि जैसलमेर में हो रही जीएसटी मीटिंग और राज्यों के प्री बजट पर चर्चा एक अच्छी बात है। उसके लिए यहां आने का मौका मिला है। जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उन्हें फिर कभी मौका मिला तो वे जोधपुर आएंगे और छुट्टियां बिताएंगे। मीडिया के एक सवाल वन नेशन वन इलेक्शन पर उन्होंने कहा कि अभी तो बिल पास नहीं हुआ है अभी तो उस पर बहस होना बाकी है। उस पर अभी वोटिंग नहीं हुई है। पार्लियामेंट के साथ उसको कई रियासतों में उसको पास करना होगा। आगे बातचीत चलने दें देखते है आगे क्या होता है।

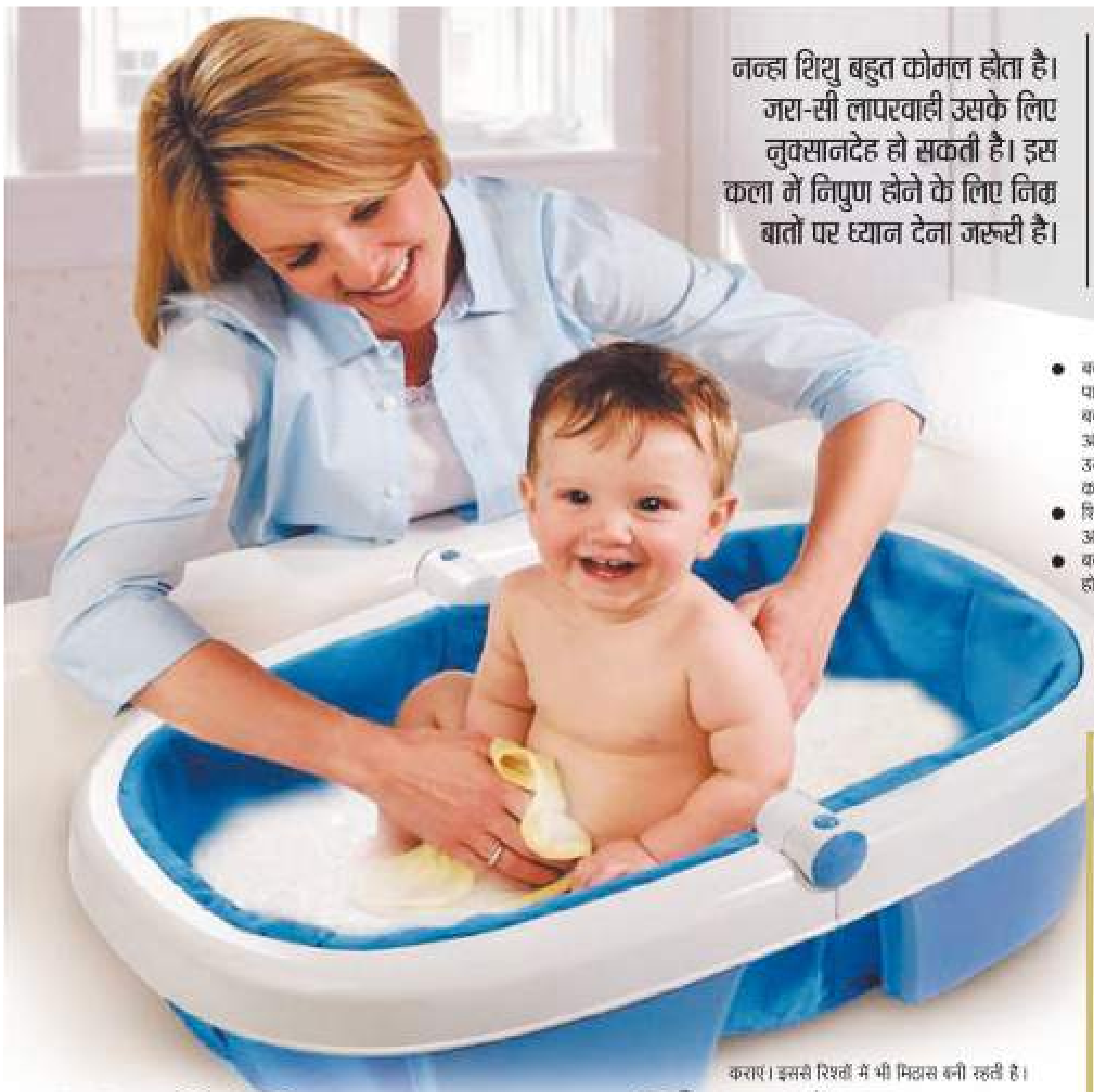

नन्हा शिशु बहुत कोमल होता है। जरा-सी लापरवाही उसके लिए नुकसानदेह हो सकती है। इस कला में निपुण होने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना जरूरी है।

शिशु को नहलाना भी एक कला है

- बच्चे को नहलाते समय आपकी यही कोशिश होनी चाहिए कि वह पानी से डरने की बजाय स्नान में आनंद व प्रसन्नता का अनुभव करे। बच्चे को टब में बिठा कर नहलाएं। पानी से कलोल करने में उन्हें आनंद आता है, जिसे वे अपनी किलकारियों से प्रकट करते हैं। उसके इस आनंद में आप भी शामिल हों और अपना व अपने बच्चे का आनंद बढ़ाएं।
- शिशु को नहलाना शुरू करने के पहले सभी आवश्यक सामान अपने पास पहले ही रख लें ताकि आपको बीच में उठना न पड़े।
- बच्चे को नहलाने से तभी निश्चित करें, जब आपके पास पर्याप्त समय हो। हड़बड़ी में नहलाने से बच्चा पानी से भय खा सकता है।
- नहलाने से पहले बच्चे के शरीर की तेल से मालिश करें। मालिश करते समय सावधानी बरतें कि हाथ कोमलता से चलें और बच्चों के नाजुक अंगों को कोई झटका न लगे।
- मालिश के कुछ समय बाद ही नहलाना ठीक रहता है। सर्दी में बच्चों को धूप-स्नान देने के बाद ही नहलाना चाहिए। मालिश के बाद नहलाने से बच्चे की त्वचा स्वस्थ होती है। बच्चे की मांसपेशियों को व्यायाम व विश्राम मिलता है और बच्चा तनाव-थकान मुक्त होकर आराम की नींद सोता है।
- नहलाते समय आपके हाथ एकदम साफ हों, नाखून कटे हुए हों। यदि आपके हाथ में चुभने वाली चूड़ी, घड़ी या अंगूठी है तो उसे उतार दें।
- शिशु को न तो दूध पिलाने के एकदम बाद नहलाएं और न ही जब वह बहुत भूखा हो या किसी कारणवश रो रहा हो। स्नान के बाद उसे भली-भांति पोंछ कर मौसम के अनुकूल वस्त्र पहना कर दूध की खुराक दें ताकि पेट भर जाने के बाद ताजगी व प्रफुल्लता से शांति व आराम से देर तक सोता रहे।
- इस प्रकार आपकी थोड़ी-सी सावधानी व सूझ-बूझ बच्चों को स्वस्थ व प्रसन्नचित रखने में सहायक होगी और आप भी अपने साफ-सुथरे लाडले को आराम से सोता, खेलता देख कर खुश रहेंगी।

नौकरी पर परिवार को वरीयता देती महिलाएँ

पूरे देश में एक लाख गृहणियों पर किए गए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि ज्यादातर महिलाएं घर की जिम्मेदारी बखूबी संभालने के लिए अपनी जॉब छोड़ रही हैं। यह सर्वे सात साल तक की महिलाओं पर किया गया था।

डॉक्टर की डिग्री लेकर जॉब कर रही 34 साल की निशा की जिंदगी तब आसान नहीं रह गई जब उनका पहला बच्चा हुआ। उनके इंजीनियर पति और उनके पढ़े लिखे परिवार ने निशा को नौकरी छोड़कर होममेकर बनने की सलाह दी। बच्चे व परिवार की देखभाल के लिए उसे यह कदम उठाना सही लगा। आजकल ज्यादातर महिलाएं अपने परिवार और बच्चे की देखभाल के लिए अपनी जॉब छोड़ रही है। निशा की सैलरी 40 हजार रुपए होते हुए भी उसे यही लगा कि उसे यह फैसला करना पड़ेगा। क्योंकि उसे अपने आस-पास कोई मदद करने वाला नहीं दिखा। ज्यादातर घरों में महिलाएं तभी जॉब कर पाती हैं जब उनके परिवार में उनके बच्चे को संभलने वाला कोई होता है। चाहे वह सास हो या मां या फिर जेठानी-देवरानी। नेशनल सैंपल सर्वे आर्गनाइजेशन की रिपोर्ट के अनुसार जहां 2009-10 में भारत में जहां 47 फीसद महिलाएं होममेकर थी, वहीं 1999-2000 में इसमें करीब पांच से छह प्रतिशत का इजाफा हुआ है। अब ज्यादातर भारतीय महिलाएं अपने परिवार की देखभाल के लिए अपना कॅरियर और जॉब को छोड़ रही है। इसकी सबसे बड़ी वजह है- एकल परिवार। एकल परिवार में महिलाओं को घर-परिवार और नौकरी की दोहरी जिम्मेदारी अकेले ही उठानी पड़ती है। परिवार की जिम्मेदारी बखूबी निभाने में वे चौतरफा दबाव में रहती है। कहीं यह मजबूरी में है तो कहीं खुशी से। एक सर्वे के मुताबिक करीब 15 से 17 फीसद महिलाएं सामाजिक व पारिवारिक दबाव में होममेकर रहती हैं। वहीं लगभग सात से दस फीसद महिलाएं घरेलू काम इस वजह से करती है कि वे मेड का खर्च नहीं उठा सकती। अभी पिछले दिनों जापान से खबर आई है कि वहां भी महिलाएं नौकरी छोड़ कर होममेकर बनना चाहती है। यह एक बड़ा बदलाव है। शायद ग्लोबल भी। पूरे देश में एक लाख गृहणियों पर किए गए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि ज्यादातर महिलाएं घर की जिम्मेदारी बखूबी संभालने के लिए अपनी जॉब छोड़ रही है। यह सर्वे सात साल तक की महिलाओं पर किया गया था। हालांकि होममेकर के काम को आजकल कोई महत्व नहीं दिया जाता। देश की छोड़िए घर की इकोनामी प्रॉफिट में भी कभी उनके काम को शामिल नहीं किया जाता। मगर देखा जाए तो आज महिलाओं की जब कोई मदद करने वाला नहीं होता, तो उनके पास कोई विकल्प नहीं बचता।

पिछले दिनों गृहणियों को पति की सैलरी का कुछ हिस्सा उनकी मेहनत के लिए दिए जाने की बात चली पर समय के साथ ठंडी पड़ गई। वैसे भी जिस घर और पति पर एक होममेकर का पूरा अधिकार है तो फिर मेहनताना किस बात का? और अपने इसी घर-परिवार को संभालने के लिए आज ज्यादातर महिलाएं होममेकर की भूमिका निभाना चाहती हैं। घर परिवार की जिम्मेदारी के साथ-साथ महिलाएं अब घर पर रहकर ही छोटे-छोटे काम कर अपनी पॉकेट मनी निकाल लेती हैं। ऐसे में परिवार के साथ-साथ उन्हें इस बात का भी मलाल नहीं रह जाता कि वह जॉब नहीं कर रही या उनकी शिक्षा बेकार जा रही है। आजकल की आधुनिक युवा महिलाएं शानदार पेंटिंग बना रही हैं तो घर पर फैशन डिजाइनिंग का काम भी कर रही है। कुछ महिलाएं टिफिन से लेकर पापड़-बड़िया तक का कारोबार कर रही हैं। यों काम कोई छोटा-बड़ा नहीं। सबसे अहम यह है कि परिवार पर आप ध्यान दे रही हैं और आप खाली भी नहीं हैं। कुछ न कुछ तो कर ही रही हैं।

पॉजीटिव एनर्जी भी जरूरी

किसी भी घर में सुख-शांति बनाए रखने के लिए वास्तु बहुत उपयोगी होता है। वास्तु यह सुनिश्चित करता है कि घर में पॉजीटिव एनर्जी प्रवेश करे और सारी नैगेटिव वेव्स भाग जाएं। जब बात दीवाली की आती है तो वास्तु का महत्व और ज्यादा बढ़ जाता है।

चीजों का स्थान बदल दें

वास्तु के अनुसार घर में रखी कुछ चीजों को इधर से उधर जरूर रखना चाहिए। यदि आप सोफे पर रखा कुशन भी एक सोफे से दूसरे सोफे पर रख दें तो भी आपका काम हो जाएगा। शो-पीस, फ्लावर पॉट या फिर सोफा इत्यादि को एक-दूसरे के स्थान पर बदल कर रख सकती हैं।

नमक के पानी का छिड़काव

यूं तो पोंछा लगाने वाले पानी में नमक डालने से नैगेटिव एनर्जी दूर होती है परंतु आप दीवाली की सफाई के दौरान पानी में नमक मिला कर इसे घर के हर कोने में छिड़कते हैं तो भी यह घर की नैगेटिव एनर्जी को सोख लेता है।

दीवाली हो मीठी-सी

इस दिन आपके घर में चीनी की बिल्कुल भी कमी नहीं होनी चाहिए। यह एक रस्म है जो सुनिश्चित करती है कि आप का पूरा साल मीठा बीते। घर आए मेहमानों का मुंह मिठाई, केक, बिस्कुट या चॉकलेट से अवश्य मीठा कराएं। इससे रिश्तों में भी मिठास बनी रहती है।

मुख्य प्रवेश द्वार

आपके घर का मुख्य प्रवेश द्वार बेहतरीन अवसरों को आप तक पहुंचाने में मदद करता है। इसलिए मेन गेट के सामने कोई अवरोध नहीं होना चाहिए तथा मां लक्ष्मी के स्वागत के लिए दरवाजे के सामने खूबसूरत रंगोली अवश्य बनानी चाहिए।

धन के लिए उत्तर जाइए

घर में उत्तर दिशा को कुबेर का स्थान कहा जाता है। सुनिश्चित करें कि माता लक्ष्मी की मूर्ति यहीं रखी जाए और गणेश जी की मूर्ति उनके दाहिने ओर हो। इसके अलावा मूर्तियों को लाल रंग के वस्त्र पहनाएं तथा उनका पूरा श्रृंगार करें।

बहता हुआ पानी

बहता पानी घर की सारी नैगेटिव एनर्जी को अपने साथ बहा कर ले जाता है। आप भी इन दिनों अपने घर के नॉर्थ-ईस्ट साइड में कोई छोटा-सा झरना लगा सकती हैं।

फैशन ट्रेंड्स फॉर वॉल्स से स्टाईलिश बनाएं सपनों का घर

आपके घर को सुंदर और स्टाईलिश बनाने के लिए विश्व की सबसे बड़ी पेंट एवं कोटिंग कंपनी एक्जोनोबल के ब्रांड ड्यूलक्स ने एक ब्रांड कैंपेन के माध्यम से अपने नये ड्यूलक्स वेल्वेट टच कलेक्शन- 'फैशन ट्रेंड्स फॉर वॉल्स' प्रस्तुत किया है। ड्यूलक्स वेल्वेट टच-फैशन ट्रेंड्स फॉर वॉल्स फैशन से प्रेरित हाई-एंड इमल्शन (सजावटी पेंट) की पेशकश है जो आपके घर के वातावरण को फिर से ताजा करके इसे सुंदर, स्टाइलिश एवं 'सिंपली यू' बनाएगा। इस बारे जानकारी देते हुए निदेशक-विक्रय एवं विपणन सजावटी पेंट्स, एक्जोनोबल इंडिया राजीव राजगोपाल ने बताया, ''पिछले तीन दशकों से, ड्यूलक्स वेल्वेट टच भारत का अग्रणी इमल्शन ब्रांड बनकर उभरा है और होम डेकोर के क्षेत्र में इसने अलग जगह बनायी है। 'फैशन ट्रेंड्स फॉर वॉल्स' ब्रांड पोजिशनिंग से कहीं बढ़कर है। ड्यूलक्स वेल्वेट टच के ब्रांड एम्बेसडर व अभिनेता, निर्देशक, गायक फरहान अख्तर और प्रमुख फैशन डिजाइनर मनीष मलहोत्रा के मुताबिक, ''उनके लिए फैशन कपड़ों और वार्डरोब से कहीं ज्यादा है। यह उस घर के विषय में भी हो सकता है, जिसमें हम रहते हैं और ड्यूलक्स पिछले कई वर्षों से अपनी वेल्वेट टच श्रृंखला के साथ घरों और उसमें रहने वाले लोगों को उनकी रचनात्मकता प्रस्तुत करने और स्टाइलिश बनने का माध्यम उपलब्ध करा रहा है। यह प्रमुख कारणों में से एक है कि उन्होंने ड्यूलक्स वेल्वेट टच का चयन किया।

ऐसे बनता है सुंदर और सौम्य व्यक्तित्व

महिलाएं अपने सौंदर्य को लेकर बहुत सतर्क रहती हैं। लेकिन सौंदर्य सिर्फ त्वचा की देखभाल तक ही सीमित नहीं है। आचरण, आदतें और व्यवहार भी सुंदर और सौम्य व्यक्तित्व के लिए जरूरी हैं। कुछ आदतें जो किसी महिला की छवि गलत बनाती हैं वह इस प्रकार है-

- सभ्य, सुसंस्कृत, फैशनेबल दिखने वाली स्त्री जिसका मुख खुलते ही बाह्य आवरण उड़ जाए यानी उसका गलत उच्चारण हो, गंदे और मैले दांत हों।
- खाते-पीते समय मुख की आकृति बेकाबू रहती हो।
- हंसने-मुस्कुराने के अंदाज का अभाव हो।
- बन-बनकर इठलाती-इतराती बोलती हो।
- व्यवहार में शिष्टाचार का अभाव हो। मौके-बेमौके सार्वजनिक स्थलों पर भी व्यवहार व बातचीत के तौर-तरीकों का अभाव हो।
- चपर-चपर कर खाती हो।
- शारीरिक अंग-प्रत्यंगों का संतुलन खोकर उच्छृंखल कदमों की बेताल चाल चलने वाली हो।
- वस्त्रों का सुरुचिपूर्ण चुनाव तथा पहनने-ओढ़ने की कला का अभाव हो।
- मौसम, आयु व अवसर के प्रतिकूल पहनावा हो।
- चेहरे पर उम्र की मार को नकारते हुए बालों को डाई किया हुआ हो।
- खूबसूरत साड़ी में बेजोड़ ब्लाउज को छिपाने का व्यर्थ प्रयास किया गया हो।
- किसी पार्टी में सबसे आगे भीड़ में घुसकर खाना ले रही हो।
- हाथ नचाकर या ताली पीटकर या किसी के कंधे या हाथ पर मारकर बातें कर रही हो।
- बातों में छिछोरे शब्दों का प्रयोग या गाली-गलौज से बातें करने वाली हो।
- ब्लाउज में हुक के स्थान पर पिन का प्रयोग या कंधे पर ढीले ब्लाउज से झांकता ब्रा का स्ट्रैप हो।
- मोटी थुलथुल कमर पर ऊंचा सा ब्लाउज तथा नाभिदर्शना साड़ी पहने हो।
- मोटी-मोटी बांहों पर स्लीवलेस ब्लाउज पहनकर सबके सामने बांहें उठाकर बैठी हो।
- कुर्सी पर एक टांग दूसरी पर रखकर ऐसे बैठी हो कि खुली टांगें भद्दी दिखें।
- जल्दी-जल्दी में लिपिस्टिक पोतने के प्रयासों में दांतों पर दाग लग गया हो।
- सांवले रंग पर बेमेल चटख रंगों के कपड़ों का चुनाव किया गया हो।
- ढलती उम्र में बहुत पतली नुची-खुची भवें रखी गई हों या झुर्रीदार आंखों पर मेकअप या प्रौढ़ावस्था में हैवी मेकअप हो।
- लम्बे नाखून मगर शेप रहित व गंदे मैल भरे हों।
- पुरुषों के बीच बैठकर बेवजह आकर्षण का केन्द्र बनने की कोशिश हो।
- शॉपिंग के समय दुकानदार से बेवजह बहस कर रही हो।
- फैशन की अंधी दौड़ में बहकर चेहरे के शेप के प्रतिकूल सज्जा की हो।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक निमिषा कुमारी द्वारा शिवा सांई पब्लिकेशन प्रा० लि० काठीटांड़, रातू रांची, झारखंड 835222 से मुद्रित व 364, को ऑपरेटिव कालोनी, बोकारो स्टील सिटी, बोकारो, 827003 से प्रकाशित। प्रधान संपादक निमिषा कुमारी, प्रबंध संपादक विनय कुमार तिवारी* (* पी आर बी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार) आर एन आई न०- JHA/HIN/ 2018/ 76658 फोन न०8340571405, 9955023741